।। श्री हरिः ।।

नमामि देवी नर्मदे

# अमृत दर्शन

RNI No. MPHIN /2004 /13927

वर्ष - 21 अंक -64

नर्मदापुरम
मंगलवार, 17 दिसंबर 2024

● पृष्ठ : 8 ● मूल्य : 1 रुपया

Website : www.amritdarshan.com

नर्मदापुरम का प्रथम हिन्दी दैनिक

**खास बात**

*सभी बच्चों को उनकी दिलचस्पी और जरूरतों के मुताबिक, अच्छी क्वालिटी और उम्र के हिसाब से सही कॉन्टेंट का बिना किसी शुल्क के ऐक्सेस देना ज़रूरी है।*

### जन-कल्याण पर्व: युवा संवाद कार्यक्रम में मुख्यमंत्री हुए युवाओं से रू-ब-रू

# युवाओं की आंखों में सपने, भुजाओं में ताकत, पैरों में होती है गति : मुख्यमंत्री

भोपाल ■ विसं

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि समाज और देश की दशा और दिशा बदलने में ऊर्जावान युवाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है। युवाओं के मजबूत हौंसले, इच्छाशक्ति, लगन और परिश्रम के बल पर ही देश सफलता की ऊंचाइयों को छूता है। युवा शक्ति भारत की सच्ची ताकत है और भारत ही विश्व में सबसे युवा देश है। दुनिया के विभिन्न देशों में भारतीय युवा सफलता प्राप्त कर देश का नाम रोशन कर रहें हैं। मध्यप्रदेश में युवाओं को शिक्षा के साथ सभी सेक्टरों में रोजगार के अवसर दिये जाने का काम वृहद स्तर पर हो रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव बरतकतउल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल में जन-कल्याण पर्व अंतर्गत आयोजित युवा संवाद कार्यक्रम में 45 संस्थानों के विद्यार्थियों को

संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने स्व-रोजगार केन्द्रित युवा संवाद कार्यक्रम में कहा कि किसी भी देश और प्रदेश के भविष्य युवा ही होते है। मुख्यमंत्री ने युवाओं का उत्साह बढ़ाते हुए कहा?कि युवाओं की आंखों में सपने, भुजाओं में ताकत और पैरों में गति होती है। उन्होंने कहा कि युवाओं की प्रतिभा और उनके कौशल को प्रदेश के विकास में पूरी तरह से उपयोग करने के साथ युवाओं के सपनों को साकार करने के लिये अनेक योजनाएं संचालित की जा रही हैं। इन योजनाओं से युवा शक्ति को आत्म-निर्भर बनाने के साथ राज्य को समृद्ध करने का अभियान भी चलाया जा रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश लगातार शक्तिशाली बन रहा है। भारत अपने नागरिकों की सुरक्षा की चिंता करने की दृष्टि से आज अमेरिका और इजराइल के बाद विश्व की तीसरी शक्ति बन गया है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने युवाओं और महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त करने के लिये विभिन्न पहल की हैं। लोकसभा और विधानसभा में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने का ऐतिहासिक निर्णय लिया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि कोई भी देश मातृ शक्ति के सशक्तिकरण से ही आगे बढ़ता है।

#### पुलिस बैंड की शानदार प्रस्तुति ने सभी को किया मंत्रमुग्ध

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि हमारी पुलिस बैंड की परंपरा सिर्फ संगीत नहीं, बल्कि यह हमारी राष्ट्रीयता, अनुशासन और गौरवशाली इतिहास का प्रतीक है। चाहे वह स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कदम-कदम बढ़ाए जा की धुन हो या वैदिक काल के शंखनाद, संगीत ने हमेशा से हमारी संस्कृति और संघर्षों को दिशा दी है। बीते समय में पुलिस बैंड की इकाइयां धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही थीं। इसे पुनर्जागृत करने के उद्देश्य से निर्णय लिया कि हर जिले में एक पुलिस बैंड होना चाहिए। यह न केवल हमारे सशस्त्र बल की गरिमा को बढ़ाता है, बल्कि त्यौहारों, राष्ट्रीय पर्वों और विशेष आयोजनों में देशभक्ति की भावना को भी जागृत करता है।

### मप्र विधानसभा का शीतकालीन सत्र- खाद संकट पर हंगामा

# विपक्ष का वॉकआउट, पहले दिन सिर्फ डेढ़ घंटे चली कार्यवाही, दो सदस्यों ने ली शपथ

भोपाल ■ विसं

शून्यकाल में नेता प्रतिपपक्ष उमंग सिंघार ने खाद संकट पर चर्चा कराने का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि सरकार इस मुद्दे पर चर्चा नहीं कराना चाहती। इस बीच, मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने बांग्लादेश के उदय के लिए आज के दिन को ऐतिहासिक बताते हुए पाक सैनिकों के भारतीय सेना के सामने सरेंडर करने की बात कही। इसके बाद मुद्दा भटकाने का आरोप लगा कर कांग्रेस विधायकों ने वॉकआउट कर दिया।

मध्य प्रदेश विधानसभा के शीतकालीन सत्र के पहले दिन सोमवार को कांग्रेस ने खाद संकट को लेकर सरकार पर चर्चा नहीं कराने के आरोप लगा कर सदन से वॉकआउट कर दिया। शून्यकाल में नेता प्रतिपपक्ष उमंग सिंघार ने खाद संकट पर चर्चा कराने का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि सरकार इस मुद्दे पर चर्चा नहीं कराना चाहती। इस बीच, मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने बांग्लादेश के उदय के लिए आज के दिन को ऐतिहासिक बताते हुए पाक सैनिकों के भारतीय सेना के सामने सरेंडर करने की बात कही। इस पर विपक्ष ने खाद संकट के मुद्दे को

#### विजयवर्गीय ने उठाया बांग्लादेश का मुद्दा

इस बीच, संसदीय कार्य मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने विशेष उल्लेख में अध्यक्ष से अनुमति मांगते हुए बांग्लादेश के उदय का मुद्दा उठा दिया। उन्होंने कहा कि आज ही के दिन बांग्लोदश का उदय हुआ था और 93 हजार पाकिस्तानी सैनिकों ने हमारी बहादुर सेना के सामने आत्मसमर्पण किया था। उन्होंने प्रस्ताव रखा कि यह सदन भारतीय सेना को उनकी बहादुरी के लिए बधाई और शुभकामनाएं देता है। इस बीच ही सदन में विपक्ष ने खाद के मुद्दे से भटकाने की बात कहकर शोर शराबा शुरू कर दिया। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि सरकार की तरफ से खाद की कोई व्यवस्था नहीं करने के कारण हम सदन से बहिर्गमन करते हैं।

भटकाने का आरोप लगा कर शोर शराबा शुरू कर दिया, इसके बाद सदन से वॉक आउट कर दिया। वहीं, कांग्रेस विधायक जयवर्धन सिंह ने सदन में गलत जानकारी देने का मुद्दा उठाया। विधानसभा के शून्यकाल में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने खाद का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि पूरे प्रदेश में खाद नहीं मिलने के कारण किसान परेशान है। वह बोवनी नहीं कर पा रहे। सरकार खाद की व्यवस्था नहीं कर पा रही। सरकार बार-बार यूक्रेन की बात करती है। सरकार क्यों नहीं मैक्सिको या मोरक्को से बुलवा पाई। सरकार ब्राजील से बुलवा पाई। वहां से हमारे यहां इम्पोर्ट होता था। सरकार इस पर बात ही नहीं करना चाहती। अध्यक्ष ने नेता प्रतिपक्ष को चर्चा के लिए विषय लगा होने की बात कहते हुए चर्चा कराने की बात कही।

## संसद में फलस्तीन लिखा बैग लेकर पहुंचीं प्रियंका गांधी, बीजेपी बोली- तुष्टीकरण परिवार का इतिहास

नई दिल्ली ■ एजेंसी

प्रियंका गांधी वाड्रा ने गाजा पर इस्राइल की कार्रवाई के खिलाफ आवाज उठा रही हैं और उन्होंने फलस्तीनियों के साथ एकजुटता व्यक्त की है। इस कड़ी में संसद के शीतकालीन सत्र में वे एक बैग लेकर पहुंचीं, जिस पर फलस्तीन लिखा हुआ था, जो संघर्ष प्रभावित क्षेत्र के लोगों के समर्थन में एक इशारा है। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा सोमवार को संसद में एक बैग लेकर पहुंचीं, जिस पर फलस्तीन लिखा हुआ था, जो संघर्ष प्रभावित क्षेत्र के लोगों के समर्थन में एक इशारा है। प्रियंका गांधी वाड्रा के हैंडबैग पर फलस्तीन शब्द और फलस्तीनी प्रतीक दिखाई दिए, जिसमें एक तरबूज की भी तस्वीर दिखी - जिसे फलस्तीनी एकजुटता के प्रतीक के रूप में देखा जाता है।

## भोपाल में कार की टक्कर से तीन दोस्तों की दर्दनाक मौत

**भोपाल।** भोपाल के बैरसिया इलाके में सिरोंज रोड पर सड़क हादसे में तीन दोस्तों की मौत हो गई। तीनों एक बाइक पर सवार थे। शादी में शामिल होने के लिए निकले थे। सामने से आ रही चड्डू कार ने उनकी बाइक को जोरदार टक्कर मारी थी। एक्सीडेंट के बाद कार भी पलट गई थी। चालक कार को मौके पर छोड़कर फरार हो गया। हादसे में दो युवकों की रविवार रात में ही मौत हो गई। एक ने इलाज के दौरान सोमवार की सुबह दम तोड़ दिया।

### राज्यसभा में संविधान पर चर्चा में बोलीं निर्मला

# हमारे देश का संविधान समय की कसौटी पर खरा उतरा

नई दिल्ली ■ एजेंसी

लोकसभा में संविधान को लेकर तीखी बहस के बाद राज्यसभा में सोमवार को चर्चा शुरू हो गई है। यह बहस उपराष्ट्रपति और राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ के खिलाफ विपक्षी दलों द्वारा दायर अविश्वास प्रस्ताव पर बढ़ते तनाव के बीच हो रही है। भारतीय जनता पार्टी की नेता और केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने इसकी शुरुआत की है। उन्होंने कहा कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद 50 से ज्यादा देश आजाद हो गए थे और उनका संविधान लिखा हुआ था। लेकिन कई देशों ने अपने संविधानों को बदल दिया, न केवल उनमें संशोधन किया बल्कि सचमुच अपने संविधान की पूरी विशेषता को बदल दिया। लेकिन हमारा संविधान समय की कसौटी पर खरा उतरा है, बेशक, बहुत से संशोधनों के बावजूद भी यह खरा उतरा है।

#### निर्मला सीतारमण के कर्म अच्छे नहीं: खड़गे

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने राज्यसभा में कहा कि मुझे उन्हें बताना होगा कि मैं भी पढ़ना जानता हूं। मैंने नगर पालिका स्कूल में पढ़ाई की है, उन्होंने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में पढ़ाई की है, यह तय है कि उनकी अंग्रेजी अच्छी होगी, उनकी हिंदी अच्छी होगी, लेकिन कर्म अच्छे नहीं हैं।

### कमलनाथ बोले- एमपी की पहचान घोटाला प्रदेश की, ट्रैक्टर रैली को भी पुलिस ने रोका

# विधानसभा नहीं घेर सके कांग्रेस नेता, मंच पर दी गिरफ्तारी

भोपाल ■ विसं

भोपाल के जवाहर चौक पर कांग्रेस ने सभा की। इसके बाद कार्यकर्ता विधानसभा की ओर बढ़े तो पुलिस ने रोक लिया। मध्यप्रदेश विधानसभा के शीतकालीन सत्र के पहले दिन कांग्रेस ने सरकार के खिलाफ जमकर प्रदर्शन किया। कांग्रेस ने विधानसभा के घेराव का ऐलान किया था। इसके लिए बड़ी संख्या में कांग्रेस नेता और कार्यकर्ता राजधानी के जवाहर चौक पर जुटे। कांग्रेस नेताओं ने यहां सभा की। हालांकि यहां से विधानसभा घेराव के लिए नहीं जा सके।

सभा के बाद कांग्रेस नेताओं ने मंच पर ही गिरफ्तारी दी। यहीं से उन्हें रिहा भी कर दिया गया। पुलिस की ओर से कहा गया कि विधानसभा सत्र चल रहा है, धारा 144 लागू है। ऐसे में विधानसभा की ओर जाना निषेध है। जिसके बाद कांग्रेस नेताओं ने मंच पर ही गिरफ्तारी दी। इसके बाद कांग्रेस नेता आष्टा में खुदकुशी करने वाले मनोज परमार के बच्चों से मिलने आष्टा के लिए रवाना हो गए।

#### असफल कांग्रेस का 'विफल' घेराव- वीडी शर्मा

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने कांग्रेस के विधानसभा घेराव पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि कांग्रेस का यह असफल प्रदर्शन न सिर्फ उसके नकारा नेतृत्व को प्रदर्शित करता है, अपितु उसके विकास और संविधान विरोधी चरित्र को भी प्रमाणित करता है। विधानसभा में जनहित की चर्चाओं से भागकर, पारित होने वाले विधेयकों को अवरुद्ध कर कांग्रेस ने गरीब, किसान, युवा, महिला और मध्यप्रदेश की समस्त जनता से धोखा किया है। कांग्रेस ने बता दिया है कि उसके लिए स्वयं के राजनैतिक स्वार्थ मध्यप्रदेश के जनता के हित से कहीं ऊपर हैं। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार गरीब, कल्याण और सुशासन के लिए प्रतिबद्धित है। केन्द्र में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी एवं प्रदेश में डॉ. मोहन यादव की डबल इंजन के सरकार के कार्यो के आधार पर ही मध्यप्रदेश की जनता निरंतर भाजपा को आशीर्वाद प्रदान करती है।

### पूर्व मंत्री भूपेंद्र ने विधानसभा में अपनी ही सरकार को घेरा

# निजी शिक्षण संस्थाओं के नाम पर चल रहा व्यापार

भोपाल ■ विसं

मध्य प्रदेश में कई स्कूल नियम विरुद्ध चल रहे हैं। कुछ स्कूल में खेल के मैदान नहीं, कुछ में यौन शोषण हुआ, फर्जी शैक्षणिक संस्थाओं पर रोक लगाने के लिए सरकार नीति लाए। पूर्व मंत्री भूपेंद्र सिंह ने कहा कि मंत्री जी इतना कह दीजिए कि सरकार अव्यवस्थाओं को लेकर सरकार अच्छी नीति लाएगी तो जनता में अच्छा मैसेज जाएगा।

ध्यानाकर्षण सूचना में पूर्व मंत्री और भाजपा विधायक भूपेंद्र सिंह ने अपनी ही सरकार को घेरा। उन्होंने सागर जिले के मालथौन में एक अशासकीय शिक्षण संस्था के संचालन में अनियमितता का विषय

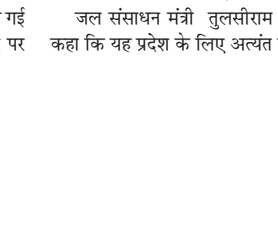


उठाया। पूर्व मंत्री ने कहा कि आदर्श कॉन्वेंट स्कूल की जांच में अधिकारी ने कई गंभीर अनियमितता पाई थी। स्कूल में यहां शिक्षा के अधिकार अधिनियम का उल्लंघन, छात्र-छात्राओं की मैपिंग नियमानुसार नहीं करने, शुल्क का वितरण पत्रक सही नहीं होने, खेल मैदान नहीं होने और फर्नीचर के अभाव में नीचे बैठाने की बात सामने आई। सरकारी जमीन पर अतिक्रमण कर स्कूल बनाया गया है। इसको लेकर अधिकारियों ने स्कूल के खिलाफ कार्रवाई करने और अतिक्रमण हटाने का नोटिस दिया था। उन्होंने कहा इससे क्षेत्र की जनता में आक्रोश है। स्कूली शिक्षामंत्री राव उदय प्रताप ने जवाब देते हुए कहा कि संस्था की मान्यता निरस्त की गई थी। संस्था ने इस पर कोर्ट से स्थगन ले लिया। इस पर मंत्री ने कहा कि यह मामला एक घंटे में ठीक कर दूंगा, लेकिन इसके माध्यम से प्रदेश के मामले उठाने का प्रयास है। मध्य प्रदेश में कई स्कूल नियम विरुद्ध चल रहे हैं। कुछ स्कूल में खेल के मैदान नहीं, कुछ में यौन शोषण हुआ, फर्जी शैक्षणिक संस्थाओं पर रोक लगाने के लिए सरकार नीति लाए।

## 80 लाख सिम कार्ड हुए बंद

**नई दिल्ली।** दूरसंचार विभाग ने एआई का उपयोग करते हुए 80 लाख से अधिक फर्जी दस्तावेजों पर जारी किए गए सिम कार्ड को बंद कर दिया है। इसका उद्देश्य अवैध गतिविधियों में इन सिम कार्डों के उपयोग को रोकना है। भारत सरकार ने साइबर अपराध पर अंकुश लगाने के लिए फर्जी सिम कार्ड के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। इस कदम को डिजिटल सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास माना जा रहा है। दूरसंचार विभाग ने एआई का उपयोग करते हुए 80 लाख से अधिक फर्जी दस्तावेजों पर जारी किए गए सिम कार्ड को बंद कर दिया है।

## श्रीलंका के राष्ट्रपति बोले- मुसीबत में भारत ने मदद की

नई दिल्ली ■ एजेंसी

श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमार दिसानायके अपने पहले विदेश दौरे पर भारत आए हैं। इस दौरान उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात की। दोनों के बीच द्विपक्षीय बातचीत हुई। दिसानायके ने पीएम मोदी को यकीन दिलाया है कि वे अपने देश की जमीन का इस्तेमाल भारत के खिलाफ नहीं होने देंगे।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक राष्ट्रपति के तौर पर पहली बार भारत दौरे पर आए दिसानायके ने सोमवार को कहा कि श्रीलंका, भारत की मदद

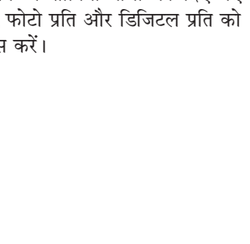

से आगे बढ़ेगा और पड़ोसी देश को वे अपना समर्थन देते रहेंगे।

हमने लगभग 2 साल पहले एक बड़े आर्थिक संकट का सामना किया था। भारत ने हमें उस दलदल से बाहर निकलने में बहुत मदद की थी। पीएम मोदी ने मुझसे कहा है कि श्रीलंका, भारत की विदेश नीति में अहम जगह रखता है।

### प्रधानमंत्री मोदी की उपस्थिति में पीकेसी परियोजना का आज जयपुर में होगा त्रि-पक्षीय अनुबंध

# केन्द्र और राज्य सरकार के अथक प्रयासों का परिणाम है पीकेसी- मुख्यमंत्री

भोपाल ■ विसं

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश और राजस्थान को समृद्ध और किसानों को खुशहाल बनाने वाली पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना के लिये त्रि-पक्षीय अनुबंध प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मौजूदगी में 17 दिसम्बर को जयपुर में होने जा रहा है।

पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेई के नदी जोड़ो के सपने को साकार करने के लिए निरंतर 20 वर्षों से किए जा रहे प्रयास अब मूर्त रूप ले रहे हैं। परियोजना वर्ष-2004 में मध्यप्रदेश एवं राजस्थान को सिंचाई एवं पेयजल सुविधा उपलब्ध कराने के लिए प्रस्तावित की गई थी, परंतु दोनों राज्यों के मध्य जल बंटवारे पर सहमति न बन पाने के कारण परियोजना का क्रियान्वयन नहीं हो सका। अब वह गौरवशाली दिन आ गया है जब परियोजना के लिए त्रि-पय समझौता होगा और परियोजना का कार्य आगे बढ़ेगा। यह परियोजना केंद्र और राज्य सरकार के अथक प्रयासों का परिणाम है।

जल संसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट ने कहा कि यह प्रदेश के लिए अत्यंत सौभाग्य का विषय है। इस परियोजना से चंबल और मालवा क्षेत्र की तस्वीर एवं तकदीर बदलेगी। सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र तरक्की होगी। इस परियोजना से प्रदेश के मालवा और चंबल क्षेत्र में 6 लाख 13 हजार 520 हेक्टेयर में सिंचाई होगी और 40 लाख की आबादी को पेयजल उपलब्ध होगा। इसके अतिरिक्त लगभग 60 वर्ष पुरानी चंबल दाईं मुख्य नहर एवं वितरण-तंत्र प्रणाली के आधुनिकीकरण कार्य से भिंड, मुरैना एवं श्योपुर जिले में कृषकों की मांग अनुसार पानी उपलब्ध कराया जाएगा।

#### मप्र के 3217 ग्रामों को लाभ मिलेगा

परियोजना से प्रदेश के गुना, मुरैना, शिवपुरी, भिंड, श्योपुर, उज्जैन, सीहोर, मंदसौर, इंदौर, धार, आगर मालवा, शाजापुर और राजगढ़ जिलों के 3217 ग्रामों को लाभ मिलेगा। पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना मध्य प्रदेश एवं राजस्थान दोनों राज्यों के किसानों और नागरिकों के लिए वरदान साबित होगी। इससे किसानों को भरपूर सिंचाई के लिए पानी मिलेगा और विकास के नये द्वार खुलेंगे। परियोजना से दोनों राज्यों में समृद्धि आयेगी। परियोजना से मिलने वाले जल से किसान अपनी उपज को दोगुना कर सकेंगे, जिससे उनके परिवार के साथ प्रदेश भी समृद्ध होगा। पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना की अनुमानित लागत 72 हजार करोड़ है, जिसमें मध्यप्रदेश 35 हजार करोड़ और राजस्थान 37 हजार करोड़ रूपये व्यय करेगा। केन्द्र की इस योजना में कुल लागत का 90 प्रतिशत केन्द्रांश और 10 प्रतिशत राज्यांश रहेगा

## पंडित नेहरू के जो पत्र सोनिया गांधी ने लिए थे, उन्हें वापस करें

**नई दिल्ली।** प्रधानमंत्री संग्रहालय और लाइब्रेरी ने मांग की है कि देश के पूर्व प्रधानमंत्री पंडित नेहरू के निजी पत्र, जो सोनिया गांधी ने लिए थे, उन्हें वापस किया जाए। संग्रहालय ने इसे लेकर राहुल गांधी को चिट्ठी लिखी है। ये पत्र साल 2008 में यूपीए सरकार के कार्यकाल में सोनिया गांधी ने मंगवाए थे। प्रधानमंत्री संग्रहालय के सदस्य रिजवान कादरी की तरफ से राहुल गांधी को 10 दिसंबर को यह पत्र लिखा गया। इस पत्र में कादरी ने राहुल से अपील की कि वे सोनिया गांधी को दिए गए पत्रों, फोटो प्रति और डिजिटल प्रति को वापस करें।

### अंतमना उवाच

***पुरूषार्थ करने से हम लक्ष्य तक पहुंच सकते हैं, लेकिन सद्गुण होने से हम खुद लक्ष्य बन सकते हैं..!***

*जीवन में पुरूषार्थ के साथ सद्गुण होना बहुत जरूरी है। बुद्धिमान होने और कठिन परिश्रम करने से ही हमें सफलता नहीं मिल जाती। सफलता के लिए 85 फ़ीसदी जीवन मूल्य और सद्गुण का होना बहुत जरूरी है। **आपके सद्गुण और योग्यता से जीवन के अनेक सौभाग्य के द्वार खुल सकते हैं।** आये दिन हम पढ़ते, सुनते और देखते हैं कि बड़े कद पद वाला व्यक्ति एक छोटी सी चारित्रिक गल्तियों की वजह से पद से च्युत हो जाता है या पद को छोड़ना पड़ता है। **अनेक वर्षों की मेहनत से प्राप्त किया नाम, कीर्ति, शोहरत एक छोटी सी गलती के कारण पूरे जीवन के मान-सम्मान को, इज्जत प्रतिष्ठा को अर्श से फर्श पर ले आती है।** हम उन्नति को ही सफलता का मापदंड मान लेते हैं लेकिन यह हमारी सबसे बड़ी भूल है।*

*जीवन में जब अनेक तरह की सफलतायें एक साथ होती है, तभी वह सफलता कहलाती है। **सफलता का मतलब सिर्फ पास होना नहीं है या पैसा कमाना नहीं है, सफलता का मतलब है कि आपके सद्गुण की खुशबू से सारा वातावरण सद्गुण मय हो जाये...!!!***

■ अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज

### बेरोजगार मछुआरों में रोजगार की उम्मीद

# सीएम यादव 20 दिसंबर को करेंगे सोलर ऊर्जा प्लांट का उद्घाटन

भोपाल ■ निसं

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव 20 दिसंबर को खंडवा जिले के ओंकारेश्वर जलाशय में बनाए गए फ्लोटिंग सोलर ऊर्जा प्लांट का उद्घाटन करने पहुंचेंगे। बता दें कि, खंडवा जिले के मांधाता विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले नर्मदा के आंचल पर एशिया के सबसे बड़े ओंकारेश्वर फ्लोटिंग सोलर प्लांट से विद्युत उत्पादन शुरू कर दिया गया है। फिलहाल यह सोलर प्लांट अपनी पूरी क्षमता के साथ 278 मेगावाट विद्युत उत्पादन कर रहा है। प्रदेश की इस उपलब्धि को ग्रीन ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर मध्य प्रदेश का एक महत्वपूर्ण कदम माना का रहा है।

ओंकारेश्वर बांध परियोजना के साथ नर्मदा में फ्लोटिंग सोलर प्लांट से बिजली उत्पादन बढ़ने से क्षेत्र को भी फायदा मिलेगा। वहीं जिले की मान्धाता विधानसभा क्षेत्र की जनता ने अब उम्मीद जताई है कि ओंकारेश्वर बांध परियोजना से 520 मेगावाट तथा फ्लोटिंग सोलर प्लांट से 278 मेगावाट बिजली उत्पादन का लाभ क्षेत्र की जनता को मिलेगा। क्षेत्रवासियों ने मांग की है कि क्षेत्र को मुफ्त बिजली उपलब्ध कराई जाए और क्षेत्र के बेरोजगारों को रोजगार दिया जाए। इस दौरान समाजसेवी नवल किशोर शर्मा, जयप्रकाश पुरोहित, भाजपा नेता विजय जैन, समाजसेवी ललित दुबे, प्रभाकर केल्हारकर, घनश्याम, दिलीप वर्मा, आनंद वर्मा ने शासन से मांग की है कि ओंकारेश्वर क्षेत्र को निःशुल्क बिजली दी जाए।

#### मांधाता विधानसभा क्षेत्र में नहीं हैं बड़े उद्योग धंधे

प्रदेश के खंडवा लोकसभा क्षेत्र से सांसद एवं स्थानीय मान्धाता विधानसभा से विधायक की निष्क्रियता के चलते यह क्षेत्र उद्योगों से वंचित है। इस कारण क्षेत्र में बड़े पैमाने पर बेरोजगारी की स्थिति है। जबकि यहां मौजूद बांध परियोजनाओं के निर्माण हेतु स्थानीय लोगों ने बड़ा त्याग किया है। बावजूद इसके प्रदेश की पूर्व की शिवराज सरकार एवं वर्तमान की मोहन सरकार भी अपने एक साल के कार्यकाल में ओंकारेश्वर क्षेत्र वासियों को कोई विशेष सुविधा नहीं दे पाई है।

#### मछुआरा समितियां मुख्यमंत्री को सौंपेंगी ज्ञापन

ओंकारेश्वर क्षेत्र में मुख्यमंत्री के आगमन की खबरों के बीच स्थानीय मछुआरा समाज संगठन प्रमुख दिलीप वर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि मुख्यमंत्री के आगमन पर परियोजना से प्रभावित मछुआरा सहकारी समितियों के बेरोजगार मछुआरे सीएम मोहन यादव से मुलाकात कर अपने रोजगार सहित विभिन्न समस्याओं एवं मांगों को लेकर एक ज्ञापन भी सौंपेंगे।

### स्कोप ग्लोबल स्किल्स यूनिवर्सिटी में

# उद्यमिता पर विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन

भोपाल ■ निसं

स्कोप ग्लोबल स्किल्स यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ बैंकिंग, फाइनेंस और कॉमर्स में उद्यमिता पर एक विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन किया गया। इसमें बतौर मुख्य वक्ता आईसेक्ट के नेशनल प्लेसमेंट हैड उद्दीपन चटर्जी उपस्थित रहे।

व्याख्यान के दौरान उद्दीपन चटर्जी ने छात्रों को उद्यमिता के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। उन्होंने उद्यमिता के गुणों पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि एक उद्यमी को महत्वाकांक्षी, आत्मविश्वासी, विनम्र और मेहनती होना चाहिए। उद्दीपन चटर्जी ने वर्तमान समय के देश के कई सफल उद्यमियों के स्टार्टअप्स के बारे में जानकारी दी और बताया कि कैसे छात्र अपने आईडिया को स्टार्टअप में बदल सकते हैं।

आगे उन्होंने छात्रों को अपने विचार को स्टार्टअप में बदलने के लिए उठाए जाने वाले आवश्यक कदम और इसे सफल बनाने वाली रणनीतियां बताईं।

स्कोप ग्लोबल स्किल्स यूनिवर्सिटी के कुलसचिव डॉ. सितेश कुमार सिन्हा ने इस व्याख्यान को छात्रों के लिए अत्यधिक लाभकारी बताया और कहा कि इससे उन्हें उद्यमिता की दिशा में मार्गदर्शन और प्रेरणा मिलेगी। वहीं कुलगुरू डॉ. अजय भूषण ने बताया कि कौशल विकास से उद्यमिता को बढ़ावा दिया जा सकता है। ऐसे में विश्वविद्यालय के लिए यह व्याख्यान छात्रों को कौशल विकास के साथ उद्यमिता के लिए जागरूक करने का प्रयास करेगा।

इससे पहले व्याख्यान की शुरुआत में डॉ. नितिन मोढ़, डीन, स्कूल ऑफ बैंकिंग, फाइनेंस और कॉमर्स, एसजीएसयू ने छात्रों को आईसेक्ट और रोजगार मंत्र पोर्टल के बारे में जानकारी दी।

## संक्षिप्त समाचार

### अमरावती एक्सप्रेस 17 एवं 18 दिसम्बर को निरस्त रहेगी

**भोपाल।** मध्य रेल के नागपुर मण्डल में सिंदी रेलवे स्टेशन पर नॉन इंटरलॉकिंग कार्य के चलते रेलगाड़ियाँ प्रभावित रहेगी। इस दौरान भोपाल मंडल के इटारसी स्टेशन से होकर गुजरने वाली अमरावती एक्सप्रेस को निरस्त करने का निर्णय लिया गया है। प्रारम्भिक तिथि से निरस्त रेलगाड़ी कि जानकारी- 17 दिसम्बर 2024 को प्रारंभिक स्टेशन जबलपुर से रवाना होने वाली गाड़ी संख्या 12160 जबलपुर - अमरावती एक्सप्रेस निरस्त रहेगी। 18 दिसम्बर 2024 को प्रारंभिक स्टेशन अमरावती से रवाना होने वाली गाड़ी संख्या 12159 अमरावती - जबलपुर एक्सप्रेस निरस्त रहेगी। यात्रियों से अनुरोध है कि असुविधा से बचने के लिए रेलवे द्वारा अधिकृत रेलवे पूछताछ सेवा एनटीईएस /139 से गाड़ी की सही स्थिति की जानकारी पता करके तदनुसार यात्रा प्रारम्भ करें।

### मप्र विधानसभा में दी गई दिवंगत को श्रद्धांजलि

**भोपाल।** मध्यप्रदेश विधानसभा में सोमवार को दिवंगत भूतपूर्व सदस्यों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। विधानसभा की कार्यवाही प्रारंभ होते ही सर्वप्रथम विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर द्वारा दिवंगत भूतपूर्व सदस्यों के निधन का उल्लेख किया गया। तदउपरांत दिवंगतों को सदन में उपस्थित सदस्यों द्वारा श्रद्धांजलि दी गई। प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने विधानसभा सदन में भाजपा नेता प्रभात झा, भूतपूर्व सदस्य आरिफ अकील, पूर्व मंत्री नटवर सिंह, एस एम कृष्णा सहित अन्य दिवंगत भूतपूर्व सदस्यों के योगदान का स्मरण किया और श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री डॉ यादव ने जनजातीय कलाकार जोधइया बाई के निधन का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि जोधइया बाई एक विशिष्ट जनजातीय कलाकार थीं। पेरिस सहित विश्व के कई स्थानों पर उनके चित्रों की प्रदर्शनियां लगती रही हैं। संसदीय कार्यमंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने भी विधानसभा में भाजपा नेता प्रभात झा, भूतपूर्व सदस्य आरिफ अकील सहित अन्य दिवंगतों के योगदान को याद किया और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

### आज भोपाल में मनाया जाएगा पेंशनर डे

**भोपाल।** पेंशनभोगी स्वर्गीय डीएस नाकारा के पक्ष में सर्वोच्च न्यायालय के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति बाईबी चंद्रचूण ने 17 दिसंबर 1982 को ऐतिहासिक निर्णय सुनाया था। स्वर्गीय डीएस नाकारा को कृतज्ञता के साथ याद करने के लिए पेंशनर्स वेलफेयर एसोसिएशन द्वारा प्रतिवर्ष की भांति पेंशनरों के सम्मान में 42 वा पेंशनर दिवस का अंबेडकर पार्क, लिंक रोड नंबर-2, सेकंड स्टाप भोपाल में 17 दिसंबर को प्रात- 11-00 बजे आयोजन किया जा रहा है। भोपाल जिले के अध्यक्ष सुरेश शर्मा ने बताया कि पेंशन डे पर 75 वर्ष एवं उससे ऊपर आयु के पेंशनरों को सम्मानित किया जाएगा। एसोसिएशन के संरक्षक गणेश दत्त जोशी एवं प्रदेश अध्यक्ष आमोद सक्सेना के अनुसार न्यायालय में दायर याचिकाओं के संबंध में भी विस्तार से पेंशनरों को जानकारी दी जाएगी साथ ही पेंशनरों की लंबित मांगों के संबंध में भावी आंदोलन की रणनीति तैयार की जाएगी। पेंशनर दिवस पर भोपाल संभाग आयुक्त को मुख्य अतिथि एवं कलेक्टर भोपाल को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है।

### 19 दिसंबर को हड़ताल पर रहेंगे हजारों स्थाई कर्मी

**भोपाल।** प्रदेश भर की स्थाई कर्मियों द्वारा 19 दिसंबर को अपनी सातवें वेतनमान का लाभ देने की मांग के समर्थन में हड़ताल करने का निर्णय लिया है। भोपाल के वन भवन के सामने तुलसी नगर में एकत्रित होकर विधानसभा का घेराव करेंगे और मुख्यमंत्री को ज्ञापन सौपेंगे। यह निर्णय मध्य प्रदेश कर्मचारी मंच के नेतृत्व में स्थाई कर्मचारियों की बैठक में लिया गया। बैठक में कर्मचारी मंच के अशोक पांडे, राजू सिंह, चांद सिंह, जगदीश शर्मा, भूपेंद्र पांडे, घनश्याम कटारे, श्यामलाल विश्वकर्मा, शिव प्रसाद सागुले आदि दर्जनों पदाधिकारी शामिल थे। मध्य प्रदेश कर्मचारी मंच के प्रांताध्यक्ष अशोक पांडे ने बताया कि सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के बावजूद भी प्रदेश के स्थाई कर्मियों को जनवरी 2016 से सातवें वेतनमान का लाभ सरकार द्वारा नहीं दिया जा रहा है।

### अंतर्राष्ट्रीय वन मेला 17 से 23 दिसम्बर तक लाल परेड मैदान पर लगेगा

# लघु वनोपज से महिला सशक्तिकरण पर आधारित होगा वन मेला : वन राज्य मंत्री

भोपाल ■ निसं

वन राज्य मंत्री दिलीप अहिरवार ने कहा कि वन मेले का आयोजन अपने आप में एक अनूठा आयोजन है। उन्होंने कहा कि वन मेला लघु वनोपज से महिला सशक्तिकरण पर आधारित होगा। लघु वनोपज प्रबंधन में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रदेश में लघु वनोपज संग्रहण कार्य में लगभग 50 प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी है। मेले में प्रदेशवासियों के अलावा देश के विभिन्न राज्यों के लोगों को इस मेले का इंतजार रहता है।

उन्होंने बताया कि 10वाँ अंतर्राष्ट्रीय वन मेला 17 से 23 दिसम्बर तक लाल परेड मैदान, भोपाल आयोजित होगा। उन्होंने कहा कि मेले में लघु वनोपज, औषधि पौधों के क्षेत्र की गतिविधियों, उत्पादों एवं अवसरों को प्रदर्शित करने के लिये इससे जुड़े संग्राहकों, उत्पादकों, व्यापारियों, उद्यमियों, वैज्ञानिकों, प्रशासकों और नीति निर्धारकों के बीच संवाद स्थापित करने के लिये एक व्यापक मंच उपलब्ध करायेगा।

राज्य मंत्री अहिरवार ने कहा कि वन मेले में 300 स्टॉल लगाये जा रहे हैं। जिसमें प्रदेश के जिला यूनियन, वन धन केन्द्र, जड़ी संग्राहक, उत्पादक, कृषक, आयुर्वेदिक औषधि निर्माता, परम्परागत भोजन सामग्री के निर्माता और विक्रेतागण अपने उत्पादों का प्रदर्शन एवं विक्रय करेंगे। मेले में विभिन्न शासकीय विभागों द्वारा प्रदर्शनी लगाई जायेगी। अहिरवार ने कहा कि लघु वनोपज से महिला सशक्तिकरण पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला 19-20 दिसम्बर को मेला स्थल पर होगी।

कार्यशाला में लंका, नेपाल और आस्ट्रेलिया के प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। राज्य मंत्री अहिरवार ने कहा कि वन मेले में क्रेता-विक्रेता सम्मेलन 21 दिसम्बर को होगा। जिसमें उच्च गुणवत्ता युक्त लघु वनोपजों, जड़ी-बूटियों और एम.एफ.पी. पार्क द्वारा निर्मित आयुर्वेदिक औषधियों के क्रय-विक्रय के लिये अनुबंध किये जायेंगे। उन्होंने कहा कि मेले में ओपीडी का संचालन होगा, जिसमें प्रतिदिन आयुर्वेद चिकित्सकों, उपचार करने वाले विशेषज्ञों के द्वारा निःशुल्क चिकित्सीय परामर्श प्रदान किया जायेगा। उन्होंने कहा कि इसमें 25 हजार लोगों द्वारा उपचार कराने की संभावना है।

राज्य मंत्री अहिरवार ने कहा कि वन मेले में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा। जिसमें आर्केस्ट्रा, नुक्कड़ नाटक, लोकनृत्य, स्कूली छात्र-छात्राओं के लिये गायन, चित्रकला, फैन्सी और ड्रेस का कार्यक्रम होगा। उन्होंने कहा कि ख्याति प्राप्त लोक गायिका मती मालिनी अवस्थी 18 दिसम्बर को, हास्य कलाकार एहसान कुरैशी 19 दिसम्बर को, सूफी बैण्ड 20 दिसम्बर, फिडली क्राफ्ट 21 दिसम्बर और एक शाम वन विभाग के नाम 22 दिसम्बर वन मेले में आयोजित होंगे और 23 दिसम्बर को समापन कार्यक्रम होगा।

वन राज्य मंत्री अहिरवार ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय वन मेले का उदघाटन समारोह 17 दिसम्बर को राज्यपाल मंगुभाई पटेल के मुख्य आतिथ्य और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में शाम 5 बजे लाल परेड मैदान पर किया जायेगा। राज्य मंत्री अहिरवार ने वन मेले में ज्यादा से ज्यादा लोगों को भागीदारी करने की अपील की है। इस अवसर पर अपर मुख्य सचिव एवं प्रशासन, म.प्र. लघु वनोपज सहकारी संघ मर्यादित अशोक बर्णवाल, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं प्रबंध संचालक म.प्र. लघु वनोपज सहकारी संघ मर्यादित विभाष ठाकुर और वन विभाग के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

# भोपाल मण्डल पर पेंशन अदालत का आयोजन

भोपाल ■ निसं

पश्चिम मध्य रेल, भोपाल मंडल द्वारा पेंशनर्स की समस्याओं के समाधान के लिए 2024 की द्वितीय पेंशन अदालत का आयोजन आज, 16 दिसंबर 2024 को सभा कक्ष संकल्प में किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडल रेल प्रबंधक श्री देवाशीष त्रिपाठी ने की। पेंशन अदालत में कुल 35 आवेदन प्राप्त हुए, जिनमें से 30 आवेदनों का तुरंत निराकरण किया गया, जबकि शेष 5 आवेदनों का निराकरण जल्द ही किए जाने का आश्वासन दिया गया। आज आयोजित पेंशन अदालत में रुपये 2,64,284/- का भुगतान किया गया, जिसे सीधे पेंशनरों के खाते में जमा किया गया।

मंडल रेल प्रबंधक श्री देवाशीष त्रिपाठी ने उपस्थित पेंशनर्स को संबोधित करते हुए उनकी समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुना और संबंधित अधिकारियों को समस्याओं के त्वरित समाधान के निर्देश दिए। उन्होंने पेंशन अदालत को पेंशनर्स और प्रशासन के बीच संवाद स्थापित करने का एक प्रभावी माध्यम बताया।

इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक श्रीमती रश्मि दिवाकर, वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री विजय सिंह, वरिष्ठ मंडल वित्त प्रबंधक श्रीमती एकता अरोरा, सहायक कार्मिक अधिकारी (कल्याण) श्री एम. एस. यादव, सेवानिवृत्त पेंशन संगठन के पदाधिकारी, और कार्मिक एवं लेखा विभाग के पर्यवेक्षक कर्मचारी उपस्थित रहे।

पेंशन अदालत ने न केवल पेंशनर्स की समस्याओं के समाधान की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, बल्कि रेलवे प्रशासन की अपने पेंशनर्स के प्रति प्रतिबद्धता को भी दर्शाया।

**भोपाल।** कुशाभाऊ ठाकरे कन्वेंशन सेंटर सभागार में सोमवार को मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव की उपस्थिति में पुलिस बैंड द्वारा प्रस्तुतिकरण किया गया। मुख्यमंत्री जनकल्याण पर्व एवं विजय दिवस के उपलक्ष में पुलिस बैंड प्रदर्शन कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री विश्वास सारंग, विधायक भगवान दास सबनानी, जिला अध्यक्ष सुमित पचौरी, ए डी जी राकेश कुमार गुप्ता, पुलिस कमिश्नर हरिनारायण चारी एवम पुलिस अधिकारीगण उपस्थित रहे।

# सब्जियों में महंगाई से नहीं मिल रही राहत

**भोपाल।** सब्जियों के दाम लगातार ऊंचे चल रहे हैं। आम आदमी को दिसंबर के महीने में सस्ती सब्जियों की उम्मीद रहती है, लेकिन इस बार ऐसा नजर नहीं आ रहा। नए आलू का श्रीगणेश मंडी में हो चुका है। थोक मे बेहतर क्वालिटी 30 रु. किलो दाम चल रहे हैं। मंडी में सब्जियां तो पर्याप्त आ रही हैं पर दाम आम आदमी की पहुंच से बाहर ही है। थोड़ी सी राहत इस बात से है कि नए आलू का श्रीगणेश हो गया है, जो बेहतर क्वालिटी में 26 से 32 रुपए प्रति किलो चल रहा है। खेरची में आलू 40 किलो बिका गया था। अब लगातार आलू के दाम कम होने की संभावना है, जिससे उपभोक्ता को राहत मिलेगी, वहीं इस मौसम में गराडू के दाम भी कम हुए हैं। रतलाम की ओर से आने वाला गराडू 25 से 30 रुपए किलो मंडी में बिक रहा है। दक्षिण भारत केरल से आने वाली सुरजनाफ़ली के दाम 70 से 80 रुपए किलो चल रहे हैं। दिसंबर की शुरुआत मे आलू का व्यापार करने वाले व्यापारियों में किसानों से खड़ी फसल के खेत पर सौदे करना शुरू कर दिए थे। उस समय 20 से 25 रु के सौदे होने और खेत पर ही पूछपरख हो रही थी। किसान खुश नजर आ रहे थे, लेकिन एक सप्ताह में आलू की फसल मंडी में समय से पहले शुरुआत होने से व्यापारियों की खेत पर पूछपरख कम हो गई।

### भोपाल में रात का पारा 3.3 डिग्री

# तापमान 0.3 डिग्री और लुढ़का तो टूटेगा ओवरऑल रिकॉर्ड

भोपाल ■ निसं

भोपाल में ठंड का 58 साल का रिकॉर्ड टूट गया है। वर्ष 1966 के बाद रविवार-सोमवार की रात में भोपाल में टेम्प्रेचर 3.3 डिग्री रहा। अब पारा 0.3 डिग्री लुढ़का तो ओवरऑल रिकॉर्ड टूट जाएगा। मौसम विभाग ने मंगलवार को भी शीतलहर चलने का अलर्ट जारी किया है। भोपाल में दिसंबर में दिन-रात ठंड और बारिश का ट्रेंड रहा है। 10 में से पिछले 5 साल से भोपाल दिसंबर में भीग रहा है। आधा से पौन इंच तक बारिश हो गई। हालांकि, इस बार बारिश नहीं हुई, लेकिन लगातार सात दिन से शीतलहर और कोल्ड डे (ठंडा दिन) जैसी स्थिति है। वहीं, रात के पारे में जबरदस्त गिरा हुई है।

मौसम विभाग के अनुसार, दिसंबर में ठंड की बात करें तो 11 दिसंबर 1966 की रात में पारा 3.1 डिग्री पहुंच गया था। यह अब तक का ओवरऑल रिकॉर्ड है। 3 साल पहले 2021 में पारा 3.4 डिग्री पहुंच चुका है, लेकिन रविवार-सोमवार की रात में यह 3.3 डिग्री दर्ज किया गया। यानी, पिछले 10 साल में तो पारा सबसे कम रहा ही, साथ में ओवरऑल रिकॉर्ड के करीब भी है। भोपाल में पिछले 7 दिन से शीतलहर का असर है। वहीं, कोल्ड डे की स्थिति भी है। बर्फीली हवा के असर से कड़ाके की ठंड पड़ रही है। इसके चलते ही दिसंबर का रिकॉर्ड भी टूटा है। मौसम विभाग ने आज भी शीतलहर का अलर्ट जारी किया है। सुबह से ही सर्द हवाएं चल रही है।

#### जानवरों को ठंड से बचाने वन विहार में लगे हीटर

वन विहार नेशनल पार्क में जानवरों को ठंड से बचाने के लिए हीटर लगाए गए हैं। डिप्टी डायरेक्टर एसके सिन्हा ने बताया, जानवरों के हाउस में हीटर लगाने के साथ ही खिड़कियों को बंद किया गया है। ताकि, सर्द हवाएं अंदर न जाए। कड़ाके की ठंड की वजह से भोपाल में स्कूलों की टाइमिंग 1 घंटा बढ़ा दी गई है। अब सभी स्कूल सुबह 9 बजे से ही लग रहे हैं। सभी सीबीएसई, आईसीएसई और अन्य बोर्ड से जुड़े स्कूलों के लिए यह आदेश है। भोपाल में दिसंबर के दूसरे पखवाड़े में कड़ाके की ठंड का ट्रेंड है, लेकिन इस बार पहले पखवाड़े में ही तेज सर्दी शुरू हो गई है। मौसम विभाग के अनुसार, पिछले 10 साल में रात का टेम्प्रेचर 9 डिग्री के नीचे ही रहा। इस बार पारा काफी नीचे पहुंच गया है।

### अक्षय पात्र फाउंडेशन ने एक करोड़ भोजन परोसने का हासिल किया लक्ष्य

# आयोजित होगा विशेष कार्यक्रम, सीएम डॉ. मोहन यादव रहेंगे उपस्थित

भोपाल ■ निसं

अक्षय पात्र फाउंडेशन ने मध्य प्रदेश में 48000 बच्चों को मिड डे मील प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर हासिल किया है। फाउंडेशन की भोपाल स्थित रसोई ने एक करोड़ से अधिक भोजन परोसने का लक्ष्य सफलतापूर्वक पूरा किया है। इस ऐतिहासिक उपलब्धि के उपलक्ष्य में, 19 दिसंबर 2024 को प्रातः 9 बजे एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव होंगे। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में पंचायत राज मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल, शिक्षा एवं परिवहन मंत्री श्री राव उदय प्रताप सिंह और अक्षय पात्र के अध्यक्ष श्री मधु पंडित दासा मौजूद रहेंगे। कार्यक्रम में एच ई जी चेयरमैन श्री रवि झुनझुनवाला, भोपाल सांसद श्री आलोक शर्मा, भोपाल मध्य विधायक श्री आरिफ मसूद सहित वाइस चेयरमैन श्री चंचलापति दास, श्री भरत दासा, मध्य प्रदेश अध्यक्ष आचार्य रतन दास एवं एच ई जी कार्यकारी निदेशक मनीष गुलाटी शामिल होंगे। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव बच्चों को मिड डे मील परोसेंगे और इस पहल के महत्व पर प्रकाश डालेंगे।

प्रतिदिन 50,000 छात्रों के लिए तैयार होता है भोजन अक्षय पात्र फाउंडेशन का विशाल किचन बावड़िया कला में स्थित है। यहां प्रतिदिन 50,000 छात्रों के लिए भोजन तैयार किया जाता है। यहां लगी अत्याधुनिक मशीनों की मदद से कुछ घंटे में 1,20,000 रोटियां, 30,000 पुड़िया और अन्य खाद्य सामग्री तैयार की जाती है। फाउंडेशन की 38 गाड़ियों और 76 कर्मचारियों की टीम 644 स्कूलों में बच्चों को पोषक आहार वितरित करती है।

किचन में 200 किलो आटा 9 मिनट में गूंथने की मशीन, 500 लीटर क्षमता वाले चावल और सब्जी कुकर, और 1200 किलो सब्जियां प्रति घंटा काटने की मशीन जैसी अत्याधुनिक सुविधाएं मौजूद है, जो मिड डे मील को ताजगी और गुणवत्ता के साथ तैयार करती है। इस किचन के संचालन में 164 कर्मचारी मिड डे मील तैयार करते हैं। अक्षय पात्र फाउंडेशन ने पूरे देश में 400 करोड़ मील परोसने का कीर्तिमान भी हासिल किया है। इसे अमेरिका संयुक्त राष्ट्र में भी मनाया गया है। भोपाल में अक्षय पात्र फाउंडेशन मंडीदीप की प्रतिष्ठित संस्थान एच. ई. जी. लिमिटेड द्वारा प्रायोजित एवं पोषित है। संस्थान द्वारा 14 करोड़ की लागत से इस ऑटोमेटेड रसोई को सन 2022 में बनवाया था। एच. ई. जी. लिमिटेड की स्थापना सन 1972 में मंडीदीप में की गई थी जो की पिछले 50 वर्षों से लगातार उत्कृष्ट प्रदर्शन के साथ-साथ, यह आज 1,00,000 मीट्रिक टन की क्षमता के साथ दुनिया का सबसे बड़ा संयंत्र है। यह संयंत्र ग्रेफाइट इलेक्ट्रोड का उत्पादन करता है। कार्यक्रम के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए कृपया जनसंपर्क प्रबंधक वीरेंद्र सिंह से संपर्क करे- 9785877641.

## संक्षिप्त समाचार

### जीएसटी के तहत समय पर रिटर्न जमा कराने कार्यशाला 20 दिसम्बर को

**नर्मदापुरम।** सहायक आयुक्त, राज्य कर, नर्मदापुरम वृत ने बताया कि कार्यालय आयुक्त, वाणिज्यिक कर, मध्यप्रदेश इन्दौर के द्वारा जीएसटी के तहत समय पर रिटर्न जमा कराने हेतु दिये गये दिशा निर्देशों के पालन में कार्यशाला एवं जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन 20 दिसम्बर शुक्रवार को दोपहर 2 बजे से श्वेताम्बर मंदिर, नर्मदा मंदिर चौक, सिवनीमालवा में आयोजित की गई है। बताया गया कि समस्त व्यवसायी वर्ग, अधिवक्ता एवं लेखापाल इस कार्यशाला में उपस्थित होकर वितरण पत्र समय पर जमा करने में आ रही समस्याओं से अवगत करायेंगे।

### शीत-घात से बचने एडवाइजरी जारी, ऐसे करें बचाव

**नर्मदापुरम।** शीत लहर का प्रभाव प्रत्येक वर्ष दिसंबर-जनवरी के महीनों में होता है और कभी-कभी विस्तारित शीत लहर की घटनाएं नवंबर से फरवरी तक होती है। सीएमएचओ डॉ दिनेश देहलवार ने बताया कि शीत ऋतु में वातावरण का तापमान अत्याधिक कम होने (शीत लहर) के कारण मानव स्वास्थ्य पर अनेक विपरीत प्रभाव जैसे- सर्दी जुकाम, बुखार, निमोनिया, त्वचा रोग, फेफड़ों में संक्रमण, हाईपोथर्मिया, अस्थमा, एलर्जी होने की आशंका बढ़ जाती हैं एवं यदि समय पर नियंत्रण न किया जाये, उस स्थिति में मृत्यु भी हो सकती है। उक्त प्रभावों से पूर्व बचाव हेतु समयानुसार उचित कार्यवाही की जाने की स्थिति में प्राकृतिक विपदा का सामना किया जा सकता है। प्रभावी शीत लहर प्रबंधन हेतु स्वास्थ्य कर्मियो, जनसाधारण आदि को संबंधित विषय में जागरूक किया जाना आवश्यक है। ताकि शीत घात की आपदा के समय होने वाले रोगों से मानव स्वास्थ्य को होने वाली हानि पर यथासंभव रोकथाम एवं प्रभावी नियंत्रण किया जा सकता है ।वशीत घात से बचने के लिए अनावश्यक यात्रा नहीं करना चाहिए, छोटे बच्चों और बुजुर्गों का खास ध्यान रखा जाना चाहिए।

### प्राचार्य ने जारी किए प्रधान पाठकों को शोकाज नोटिस

**सोहागपुर।** शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत माध्यमिक एवं प्राथमिक विभाग के दो प्रधान पाठकों को प्राचार्य श्रीमती सुनीता गढ़वाल द्वारा कारण बताओ सूचना पत्र जारी किए गए हैं। दरअसल सोमवार 16 दिसंबर को 11 बजे से अर्धवार्षिक परीक्षा होना निश्चित था। परीक्षा होने के बावजूद विद्यार्थी सुबह 9 बजे ही अपने समय से स्कूल पहुंच गए । वहां पर ना तो प्रधान पाठक और ना ही कोई विषय शिक्षक उपस्थित था। जिसके चलते जनशिक्षक राजेश कुमार दीक्षित ने संस्था में बच्चों की परीक्षा पूर्व आने की जानकारी दी। जिस पर प्राचार्य ने कार्रवाई करते हुए माध्यमिक विभाग की प्रधान पाठक मधुलिका मसीह एवं प्राथमिक विभाग के प्रधान पाठक राजेश काकोडिया को कारण बताओ सूचना पत्र जारी किए हैं। जिसमें लिखा हुआ है कि विद्यार्थी परीक्षा के 2 घंटे पूर्व कैसे शाला में पहुंच गए तथा शिक्षकों को सुबह 10 बजे उपस्थित होना था लेकिन वह समय पर उपस्थित नहीं मिले। बताया जा रहा है कि कुछ विद्यार्थियों को परीक्षा के समय की सूचना ही नहीं थी। प्राचार्य ने दोनों प्रधान पाठकों से स्पष्टीकरण मांगा है।

### विद्यार्थी पहुंच गए स्कूल सुबह 9 बजे, शिक्षक नहीं पहुंचे

**सोहागपुर।** शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत माध्यमिक एवं प्राथमिक विभाग के दो प्रधान पाठकों को प्राचार्य श्रीमती सुनीता गढ़वाल द्वारा कारण बताओ सूचना पत्र जारी किए गए हैं। दरअसल सोमवार 16 दिसंबर को 11 बजे से अर्धवार्षिक परीक्षा होना निश्चित था। परीक्षा होने के बावजूद विद्यार्थी सुबह 9 बजे ही अपने समय से स्कूल पहुंच गए । वहां पर ना तो प्रधान पाठक और ना ही कोई विषय शिक्षक उपस्थित था। जिसके चलते जनशिक्षक राजेश कुमार दीक्षित ने संस्था में बच्चों की परीक्षा पूर्व आने की जानकारी दी। जिस पर प्राचार्य ने कार्रवाई करते हुए माध्यमिक विभाग की प्रधान पाठक मधुलिका मसीह एवं प्राथमिक विभाग के प्रधान पाठक राजेश काकोडिया को कारण बताओ सूचना पत्र जारी किए हैं। जिसमें लिखा हुआ है कि विद्यार्थी परीक्षा के 2 घंटे पूर्व कैसे शाला में पहुंच गए तथा शिक्षकों को सुबह 10 बजे उपस्थित होना था लेकिन वह समय पर उपस्थित नहीं मिले।

#### तेज ठंड को दृष्टिगत रख नगर परिषद ने की सार्वजनिक स्थलों पर अलाव की व्यवस्था

# तेज ठंड के कारण सुबह की शिफ्ट में लग रहे स्कूलों के समय में हो परिवर्तन

**सोहागपुर ■ निसं**

दिन एवं रात के तापमान में एकाएक हुई गिरावट के चलते समूचे क्षेत्र में तेज ठंड पड़ रही है उत्तर भारत से आने वाली शीत हवाओं के थपेड़े तापमान में लगातार गिरावट कर रहे हैं। लोगों को ठंड की ठिठुरन से बचाने के लिए नगर परिषद ने नगर के कुछ सार्वजनिक स्थलों पर अलाव की व्यवस्था की है। सीएमओ राकेश मिश्रा ने बताया कि स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में रात के समय में भी मरीजों की आवाजाही होती है।

मरीज के साथ आए लोगों सहित ड्यूटी पर तैनात कर्मचारियों के लिए सीएचसी में भी अलाव की व्यवस्था की गई है। इसके अलावा पुराना बस स्टैंड , नया बस स्टैंड कोर्ट चौराहा एवं स्थानीय रेलवे स्टेशन पर भी नगर परिषद ने अलाव जलाने के लिए लकड़ी पटकने की व्यवस्था बना रखी है। गौरतलब है कि स्थानीय रेलवे स्टेशन गरीब , निर्धन , बेघर , बेसहारा , भिक्षावृद्धि कर जीवन यापन करने वाले लोगों सहित परिक्रमावासियों के ठहरने का ठिकाना है। स्थानीय नागरिकों ने तेज ठंड को दृष्टिगत रखते हुए कलेक्टर से सुबह की शिफ्ट में लग रहे स्कूलों के समय में परिवर्तन की मांग की है। गौरतलब है कि कुछ स्कूलों ने अवश्य स्कूल लगने के निर्धारित समय में 15 से 20 मिनट की वृद्धि की है लेकिन हाड़ कपकपा देनी वाली कड़ाके की ठंड के कारण छोटी कक्षाओं में अध्यनरत बच्चों को तैयार होने में खासी परेशानी हो रही है ऐसे में अभिभावकों की मांग है कि कलेक्टर शीतकाल के दौरान सुबह की शिफ्ट में लग रहे स्कूलों के समय में परिवर्तन करने के आदेश जारी करें।

### बच्चों ने गर्म कपड़े और जूते मोजे पाकर बड़ी प्रसन्नता जाहिर की

आज शासकीय प्राथमिक शाला चित्तौड़ पट्टन एवं प्राथमिक शाला नांदनेर के वच्चों को भीषण ठण्ड को मद्देनजर रखते हुए स्कूल शिक्षक भूरेलाल महाराज, राकेश मालवीय जनपद सोहागपुर,नयागाँव सरपंच के माध्यम से एवं समाज सेवी संघ के साथियों के सहयोग से चित्तौड़ एवं पट्टन के कुल 58 छात्र छात्राओं को गर्म कपड़े एवं जूते मोजे आदि का वितरण किया गया कार्यक्रम का शुभारंभ स्कूल के वच्चों द्वारा प्रभु की प्रार्थना एवं हनुमान चालीसा का पाठ से हुआ सरस्वती शिशु मंदिर के प्राचार्य द्वारा माँ सरस्वती एवं भारत माता की पूजन की गई , संघ के विभाग प्रमुख जीवन दुवे ने स्कूल के वच्चों को अपने उद्बोधन में देश की रक्षा आपको बड़े होकर कैसे करना है हमारे सनातन संस्कारों में किस तरह हमे मां, बाप ओर गुरु का सम्मान करना चाहिए ओर शिक्षा का वर्तमान समय मे क्या महत्व है आदि विषयों पर छात्रों को संबोधित किया कार्यक्रम का संचालन शिक्षा विभाग से वैरागी ने किया एवं BAC, CAC आदि उपस्थित रहे ,। वच्चों में गर्म कपड़े और जूते मोजे आदि पाकर बड़ी प्रशन्नता हुई । कार्यक्रम में अंत मे सभी को समरसता भोज कराया गया ।

#### मुख्यमंत्री जन कल्याण पर्व एवं विजय दिवस पर

# केवलराम चौक में खंडवा पुलिस बैंड द्वारा दी गई विशेष प्रस्तुति

**खंडवा ■ निसं**

प्रतिवर्ष 16 दिसम्बर को विजय दिवस के रूप मे मनाया जाता है। इस वर्ष विजय दिवस के साथ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देश पर सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के प्रत्येक जिला मुख्यालय पर मुख्यमंत्री जन कल्याण पर्व के रूप में मनाने का निश्चय किया गया है। इस अवसर पर खंडवा पुलिस के तत्वाधान मे जिला खंडवा के केवलराम चौक में खंडवा पुलिस बैंड व सेंट पायस स्कूल के बच्चों द्वारा देशभक्ति के गीतों की विशेष प्रस्तुति बैंड एवं वाद्य यंत्रों द्वारा दी गई। यह प्रस्तुति ना केवल देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत थी, बल्कि इसने भारतीय सेना के बलिदानों की याद दिलाई एवं युवा पीढ़ी मे उत्साह भरने का काम किया।

कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों द्वारा मां भारती के चरणों पर पुष्प अर्पित कर तथा दीप प्रज्वलित कर की गई। कार्यक्रम मे पुलिस बैण्ड प्रस्तुति के दौरान केवलराम चौक खंडवा में महापौर श्रीमती अमृता यादव, कलेक्टर श्री अनूप कुमार सिंह, एडीएम श्री काशीराम बड़ोले, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री महेंद्र तारणेकर, श्री राजेश रघुवंशी, एसडीएम खंडवा सहित विभिन्न अधिकारी, जनप्रतिनिधि,एनसीसी कैडेट्स, एनसीसी ऑफिसर्स, स्कूली बच्चे व पुलिस अधिकारी व कर्मचारीगण, गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

कार्यक्रम में महापौर श्रीमती अमृता यादव, कलेक्टर श्री अनूप कुमार सिंह एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री महेंद्र तारणेकर ने विजय दिवस के बारे मे विस्तार से लोगों को बताया कि 16 दिसंबर 1971 को भारत पाकिस्तान के युद्ध मे भारत की ऐतिहासिक जीत हुई थी, जिसमें पाकिस्तानी सेना के 93000 सैनिकों ने आत्म समर्पण किया था। पुलिस बैंड ने देशभक्ति गीतों की धुनों के माध्यम से लोगों को प्रेरित किया और माहौल को गर्व व उत्साह से भर दिया। इस प्रस्तुति ने विजय दिवस की भावना को और अधिक गहराई से उजागर किया और देश के प्रति सम्मान का संदेश दिया।

#### हाड़कंपा देने वाली ठंड में पहुचे 500 से अधिक योग साधकों ने किया योग

# सिवनी मालवा में 3 दिवसीय निशुल्क योग शिविर शुरू, हरिद्वार के स्वामी परमार्थ देव ने कराया योग

**सिवनी मालवा ■ निसं**

सोमवार 16 दिसम्बर से पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के मुख्य केंद्रीय प्रभारी डॉ.स्वामी परामार्थदेव ने सिवनी मालवा के टैगोर पब्लिक हायर सेकेंडरी स्कूल प्रांगण में 3 दिवसीय नि:शुल्क इंटीग्रेटिड योग और आरोग्य शिविर का हाड़कम्पा देने वाली ठंड में प्रात:काल 6 बजे से प्रारंभ किया। जो 17, 18 दिसंबर 2024 तक चलेगा। शिविर का शुभारंभ स्वामी परमार्थ देव, पूर्व विधायक ओमप्रकाश रघुवंशी, रामजानकी राधाकृष्ण मंदिर ट्रस्टी पंडित अवधेश तिवारी, स्कूल प्राचार्या दीपाली अवस्थी ने दीप प्रज्वलित कर किया। नि:शुल्क योग शिविर में डॉ स्वामी परमार्थ देव ने बड़ी संख्या में आए लोगों को करो योग - रहो निरोग का नारा देते हुए योग करने आए 500 योग साधको को सामूहिक योगाभ्यास करते हुए योग, प्राणायाम के लाभ बताए।

स्वामी जी ने बैठकर पद्मासन, वज्रासन, सिद्धासन, मत्स्यासन, वक्रासन, अर्ध मत्स्यासन, गोमुखासन, पश्चिमोत्तानासन, पीठ के बल लेटकर अर्ध हलासन, हलासन, सर्वांगासन, विपरीत विपरीतकर्णी आसन, पवनमुक्तासन, नोकासन, शवासन के साथ सूर्यनमस्कार भी कराया। उन्होंने कब्ज, एसिडिटी, थाइराइड, सिरदर्द, कान रोग के लिए हाथ की हथेली और पैर के पंजो के पॉइंट भी दबाकर बताएं। इस दौरान उन्होंने लोगों से कहा कि जो भी भाई बहन समाज में योग सिखाते का पुण्य कार्य करने के इच्छुक हैं वे यहा अपना रजिस्ट्रेशन कराएं और फिर 5 दिनों के लिए पतंजलि योगपीठ हरिद्वार में स्वामी रामदेव जी से योग का प्रशिक्षण निशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

### शिक्षाविद डॉक्टर अरविंद सिंह चौहान अलंकरण समारोह 20 तारीख को

**सोहागपुर।** शिक्षाविद डॉक्टर अरविंद सिंह चौहान अलंकरण समारोह प्रतिवर्ष अनुसार आगामी 20 तारीख को दोपहर 2:00 बजे से स्थानीय महाविद्यालय परिसर में आयोजित होगा। जिसमें विभिन्न क्षेत्रों की शख्सियतों का सम्मान किया जाएगा। गौरतलब है कि सोहागपुर शिक्षा समिति एवं जवाहरलाल नेहरू स्मृति महाविद्यालय के द्वारा प्रतिवर्ष यह कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। आयोजन समिति की ओर से महाविद्यालय प्राचार्य डा.एन.के. नीखरा , कार्यक्रम प्रभारी राजेश शुक्ला एवं डा राधेश्याम रघुवंशी ने बताया कि कार्यक्रम में समाज सेवा एवं चिकित्सा क्षेत्र में किए जा रहे नवाचारों के लिए प्रसिद्ध डॉ. अतुल सेठ , इटारसी की मुस्कान संस्था के संचालक मनीष ठाकुर , खेलों को बढ़ावा देने हेतु कन्हैयालाल गुरयानी , गायत्री परिवार की गतिविधियां संचालित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले एन.पी. मान्धाता , पिपरिया में बच्चों को नि:शुल्क कोचिंग देने वाली संकल्प एकेडमी , साहित्यिक एवं शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग हेतु डा राधारमण मिश्रा , राकेश मालवीय हरिद्वार , विगत 24 वर्षों से रक्तदाताओं का सम्मान करने वाली शारदोत्सव समिति, जैविक खेती के लिए लगातार प्रयासरत है।

#### डॉ कामिनी जैन ने अपने स्वागत भाषण में कहा

# गणित मानव जीवन के हर क्षेत्र में उपयोगी

**नर्मदापुरम ■ अमृत दर्शन**

शासकीय गृहविज्ञान स्नातकोत्तर अग्रणी महाविद्यालय नर्मदापुरम में को गणित दिवस मनाया गया। कार्यालय आयुक्त उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार गणित दिवस विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर छात्राओं द्वारा गणित पर आधारित प्रदर्शनी, भाषण, क्विज, कांपटीशन एवं गेम्स का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. श्रीमती कामिनी जैन, विशिष्ट अतिथि डॉ. कमल वाधवा, गणित विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ विनीत अग्रवाल ने मंच पर अपनी गरिमामयी उपस्थिति प्रदान की।

मां सरस्वती की पूजन, दीप प्रज्वलन, अतिथियों के स्वागत सत्कार उपरांत कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ श्रीमती कामिनी जैन ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि गणित मानव जीवन के हर क्षेत्र में उपयोगी है। गणित अनुमान लगाने और तर्क करने की क्षमता विकसित करता है।

#### नपाध्यक्ष ने की नगर को साफ स्वच्छ रखने की अपील

# अमानक पालिथिन और गंदगी करने पर नगरपालिका टीम ने किया जुर्माना

**नर्मदापुरम ■ अमृत दर्शन**

स्वच्छ सर्वेक्षण के तहत स्वच्छता में नगर को नंबर 01 बनाने की गतिविधियां संचालित की जा रही है। कलेक्ट्रेट रोड पर सोमवार को अमानक स्तर की पालिथिन यूज करने तथा गंदगी करने पर नगरपालिका की टीम द्वारा दुकानदारों पर 2200 रुपए का जुर्माना किया गया है।

स्वच्छता प्रभारी उपयंत्री प्रतिमा बेलिया ने बताया कि नपाध्यक्ष नीतू महेंद्र यादव एवं मुख्य नगरपालिका अधिकारी हेमेश्वरी पटले के निर्देश पर नगर में स्वच्छ सर्वेक्षण 2025 की गतिविधियां प्रारंभ है। नगर को नंबर 01 बनाने के लिए नगरपालिका की टीम द्वारा हरसंभव प्रयास किए जा रहे हैं। सोमवार को नगरपालिका की टीम द्वारा कलेक्ट्रेट रोड पर गंदगी करने वाले दुकानदारों, स्ट्रीट बैंडर्स पर जुर्माना की कार्रवाई की गई। साथ ही सभी को गंदगी न करने की समझाइश दी गई। कार्रवाई के

दौरान स्वच्छता निरीक्षक कमलेश तिवारी, सतीश यादव, रवि सूर्यवंशी आदि मौजूद थे।

नपाध्यक्ष नीतू महेंद्र यादव ने नागरिकों, दुकानदारों और बाजार क्षेत्र में व्यापारियों से आग्रह किया है कि वे नगर हित में अमानक स्तर की पालिथिन पूर्णत: बंद कर दें। कचरा यहां वहां न फैंकें। कचरा डस्टबिन में एकत्रित कर रखें तथा कचरा वाहन आने पर कचरा उसी में डालें।

### नर्मदा कॉलेज में उर्जा संरक्षण दिवस मनाया गया

**नर्मदापुरम।** प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस शासकीय नर्मदा महाविद्यालय में विश्व ऊर्जा संरक्षण दिवस के उपलक्ष्य में पोस्टर निर्माण एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। महाविद्यालय में एनसीसी कैडेट्स ने ऊर्जा संरक्षण विषय पर पोस्टर बनाए और भाषण प्रतियोगिता में उत्साह से भाग लिया। भाषण प्रतियोगिता में कैडेट्स दुर्गा प्रथम और द्वितीय स्थान पर सुमित यादव रहे। प्रभारी प्राचार्य डॉ अमिता जोशी ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि ऊर्जा हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अंग है हमारे घर उद्योग एवं परिवहन के साधनों के लिए ऊर्जा सबसे ज्यादा आवश्यक है लेकिन यदि इसे हम बचत करते हुए प्रयोग नहीं करेंगे तो भविष्य में ऊर्जा संकट का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए ऊर्जा का संरक्षण बहुत आवश्यक है। एनसीसी प्रभारी डॉ यास्मीन खान ने भी ऊर्जा संरक्षण के महत्व को बताते हुए कहा कि ऊर्जा का संरक्षण पर्यावरण को भी बचाए रखता है।

#### कलेक्टर सिंह ने साप्ताहिक समीक्षा बैठक में अधिकारियों को दिए निर्देश

# निर्माणाधीन सीएम राइज स्कूल तक पहुँच मार्ग की प्रगति की जानकारी ली

**खंडवा ■ निसं**

कलेक्टर अनूप कुमार सिंह ने सोमवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित साप्ताहिक समीक्षा बैठक में स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी से क्षेत्र की ए.एन.एम. एवं पैरामेडिकल स्टाफ की व्यवस्था के बारे में जानकारी ली। उन्होंने लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के अधिकारी से नलजल योजना के क्रियान्वयन के बारे में चर्चा की। बैठक में कलेक्टर सिंह ने जिले में निर्माणाधीन सीएम राइज स्कूल तक पहुँच मार्ग की प्रगति की जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने जनजातीय कार्य विभाग अंतर्गत संचालित सीएम राईज स्कूलों में अध्यनरत छात्र-छात्राओं के आवागमन के लिए बसों की व्यवस्था की भी जानकारी ली। उन्होंने संबंधित अधिकारी को निर्देश दिए कि वे स्कूली छात्र-छात्राओं को ले जाने वाले स्कूल बस एवं ऑटो चालकों को निर्देश दे कि नियमों का उल्लंघन न करें और वाहन की गति का विशेष ध्यान रखें। सभी एसडीएम अपने-अपने क्षेत्र में प्राचार्यों से समन्वय स्थापित कर यह सुनिश्चित करें।

बैठक में कलेक्टर सिंह ने निर्देश दिए कि प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत ऐसे आवास जो अपूर्ण है, उनको शीघ्रता से पूर्ण किया जाए। साथ ही जल जीवन मिशन अंतर्गत शेष एफ.एच.टी.सी. को शीघ्र पूर्ण किया जाए। उन्होंने राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन अंतर्गत समूह ऋण वितरण की प्रगति की जानकारी ली। बैठक में उन्होंने नगर निगम, सभी जनपद सी.ई.ओ. और सी.एम.ओ. से जन कल्याण पर्व अंतर्गत लगने वाले शिविरों के लिए चल रहे सर्वे में सर्वेदलों द्वारा योजनाओं का लाभ प्रदान करने हेतु किए जा रहे हितग्राहियों के चिन्हांकन की जानकारी ली।

बैठक में कलेक्टर सिंह ने सभी एसडीएम को ओवरलोड वाहनों पर कार्यवाही करने के निर्देश दिये। उन्होंने सीएम हेल्पलाइन में लंबित प्रकरणों की विभागवार समीक्षा की। साथ ही कहा कि नलजल योजना अंतर्गत सड़कों के रेस्टोरेशन के कार्य को सभी एसडीएम सुनिश्चित करें। उन्होंने आर.सी.एम.एस. पोर्टल में दर्ज प्रकरणों में 6 माह से अधिक लंबित नामांतरण व बंटवारा प्रकरण का शीघ्र निराकरण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि में किसानों के खातों का ई-केवाईसी करवाया जाए।

उन्होंने कहा कि महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा संचालित मातृ वंदना योजना में गर्भवती महिलाओं को समय सीमा में भुगतान सुनिश्चित किया जाए। बैठक में कलेक्टर सिंह ने मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान के तहत लगने वाले शिविर एवं सम्पर्क दलों की जानकारी सीईओ जनपद से ली।


## म.प्र. गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मंडल

ई-ऑफर सुविधा www.mphousing.in/ www.mponline.gov.in पर उपलब्ध

**हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी**
**नर्मदापुरम् सिवनीमालवा एवं पलकमति नगर इटारसी में आवासीय भवन/भूखण्ड खरीदने का सुनहरा अवसर**

ई-ऑफर आमंत्रित

| योजना/स्थान का नाम | उपलब्ध भवन/ भूखण्ड क्र. | भवन/भूखण्ड का अनु. क्षेत्रफल (वर्ग मी.) | भूखण्ड का आकार एवं भवन का बिल्ट अप क्षेत्रफल (मी.) | अपसेट मूल्य (रु. लाख) | धरोहर राशि (रुपये) | आवेदन शुल्क (रुपये) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| **हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी पलकमति नगर इटारसी** | | | | | | |
| MIG PLOT | 66, 67, 68, 69, 70, 71, 72, 73, 74, 75, 76 | 135.00 | 9 मी. X 15 मी. | 18.96 | 3.80 | 1180/- |
| | 91, 92, 93 (Better Location) | 129.60 | 9.00 मी. X 14.40 मी. | 19.11 | 3.82 | 1180/- |
| | (Corner) 64 | 182.50 | (9.50 +14.80) X15 / 2 | 28.21 | 5.64 | 1180/- |
| | (Corner) 65 | 210.00 | (11.80+16.20) X15 / 2 | 32.44 | 6.49 | 1180/- |
| **हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी सिवनीमालवा एवं नर्मदापुरम** | | | | | | |
| सिवनीमालवा 34 ई.डब्ल्यू.एस. भवन | House No. EWS 10 | 40.50 | - | 4.49 | 0.90 | 590/- |
| सिवनीमालवा Commercial Plot | Commercial Plot | 250.48 | - | 48.68 | 9.74 | 1180/- |
| शॉप नंबर 06 हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी नर्मदापुरम | Shop 06 | 11.44 | - | 2.37 | 0.48 | 1180/- |

**नोट :-** (1) लीजरेन्ट एवं रखरखाव एवं अन्य शुल्क पृथक से देय होगी। स्वयं के कारणों से ऑफर निरस्त कर राशि वापिस मांगने पर धरोहर राशि का 50 प्रतिशत कटौत्रा कर शेष राशि वापिस की जावेगा। आवेदन एवं धरोहर राशि ऑनलाइन या RTGS/NEFT से जमा होगी। रजिस्टर्ड मोबाइल पर BID-ID प्राप्त होगा।

**आवेदन शुल्क एवं धरोहर राशि जमा करने की तिथि 27.12.2024 एवं ऑफर डालने की तिथि दिनांक 29.12.2024 तक 5.00 बजे एवं ऑफर खोलने की तिथि 30.12.2024 दोपहर 3.00 बजे तक रहेगी। इसके पश्चात् संपत्ति रिक्त होने की स्थिति में नीचे दर्शित तालिका अनुसार दर्शित दिनांकों में ऑफर आमंत्रित किये जावेंगे।**

| क्र. | आवेदन शुल्क एवं धरोहर राशि जमा करने की दिनांक | ऑफर डालने की तिथि दिनांक | ऑफर खोलने की दिनांक |
|---|---|---|---|
| 1. | 20.01.2025 | 22.01.2025 सायं 5.00 बजे तक | 24.01.2025 दोपहर 3.00 बजे तक |
| 2. | 14.02.2025 | 18.02.2025 सायं 5.00 बजे तक | 20.02.2025 दोपहर 3.00 बजे तक |
| 3. | 19.03.2025 | 21.03.2025 सायं 5.00 बजे तक | 24.03.2025 दोपहर 3.00 बजे तक |

**संपर्क :-** साहेबराव सूर्यवंशी (संपदा अधिकारी) दूरभाष : 07574-465822, डी.आर. कापसे (उपयंत्री) मो. 9826354205, संजय कुमार वर्मा (संपदा प्रबंधक) मो. 9826374383, अरविन्द कुमार जैन (सहायक यंत्री) मो. 9893539851

ऑनलाइन भुगतान में असुविधा होने पर Whatsapp Helpdesk Number 7974264023

पंजीकृत आवंटी अब अपनी समस्त देय राशि का भुगतान मंडल के मोबाइल एप (MPHIDB_GEO जो Google Play Store पर उपलब्ध है) के माध्यम से भी कर सकते हैं। दिये गये QR-Code को स्कैन कर भी एप डाउनलोड कर सकते हैं।

Follow us on /mphidb /mphidb

Visit us : www.mphousing.in

म.प्र. माध्यम/117817/2024

## अनमोल वचन

बुद्धि के सिवाय विचार प्रचार का कोई दूसरा शास्त्र नहीं है, क्योंकि ज्ञान ही अन्याय को मिटा सकता है।
**शंकराचार्य**

मनुंष्य का सच्चा जीवन साथी विद्या ही है, जिसके कारण वह विद्वान कहलाता है।
**स्वामी दयानन्द**

## सम्पादकीय

### आपातकाल से भी ज्यादा भय ईड़ी और साइबर क्राइम पुलिस का

*1975 में जो आपातकाल लगाया गया था उसका भय आज भी लोगों को दिखाया जाता है। आपातकाल इंदिरा गांधी की सरकार ने लगाया था। उस समय देश में हजारों की संख्या में आंदोलन हो रहे थे। महंगाई बेतहाशा थी। 1971 के युद्ध के बाद अमेरिका ने भारत पर प्रतिबंध लगा रखा था। अंतरराष्ट्रीय सहायता प्रतिबंधित थी। पेट्रोल-डीजल और रसोई गैस का भारी संकट था। इसी बीच इंदिरा गांधी का चुनाव केवल इस कारण अवैध घोषित हुआ था उत्तर प्रदेश सरकार ने उनकी चुनावी सभा के लिए जो मंच बनाया था उसका भुगतान कांग्रेस पार्टी ने नहीं किया था। उनके एक निजी सचिव चुनावी सभा में मौजूद थे। देश में हर जगह आंदोलन हो रहे थे। लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने जिस दिन आपातकाल लगा था उस दिन सार्वजनिक मंच से सेना और पुलिस से सरकार के आदेश नहीं मानने का ऐलान किया था जिसके कारण आंतरिक विद्रोह की स्थिति पैदा हो गई थी, जिसके कारण आपातकाल लगाया गया था। इसमें प्रावधान किया गया था। आंदोलन करने वाले और राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में शामिल लोगों को 1 साल तक के लिए जेलों में निरुद्ध करके रखा जाएगा। आपातकाल के दौरान विपक्षी राजनीतिक दलों के नेता ट्रेड यूनियन के नेता और छात्र यूनियन के नेता आपातकाल में बिना किसी आरोप के जेलों में बंद कर दिए गए थे। आपातकाल के दौरान तस्कर, गुंडे, बदमाश, नशीले पदार्थों का कारोबार करने वाले, जमाखोरी और मुनाफाखोरी करने वालों को जेलों में बंद किया गया था। राजनेताओं, ट्रेड यूनियन के पदाधिकारियों और आंदोलनकारी छात्र नेताओं को राजनीतिक बंदी के रूप में जेल में बंद रखा गया था। जिन लोगों ने आंदोलन नहीं करने का बांड भरा था, उन्हें कुछ दिनों के बाद ही छोड़ दिया गया था। जैसे ही आपातकाल समाप्त हुआ। मीशा में बंद सभी आरोपियों को जेल से रिहा कर दिया गया था। उस समय आम जनता में कोई भय नहीं था। सरकारी अधिकारियों, कर्मचारियों और सरकार के महत्वपूर्ण पदों पर बैठे हुए लोग जरूर भयभीत रहते थे। तस्कर, गुंडे, बदमाश आपातकाल के डर से भूमिगत हो गए थे। आपातकाल के दौरान देश की कानून व्यवस्था स्वतंत्रता के पश्चात सबसे बेहतर थी। उस समय भी कुछ लोगों ने आपातकाल के भय का राजनीतिक एवं व्यक्तिगत हितों के लिए इस्तेमाल किया। सरकारी कर्मचारियों ने जनसंख्या नियंत्रण के लिए जो कार्यक्रम सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा था, उसमें आम लोगों के साथ ज्यादति की थी। जब आपातकाल खत्म हुआ तो जनता ने कांग्रेस को इसका माकूल जवाब दिया। पहली बार कांग्रेस चुनाव में बुरी तरीके से पराजित हुई। केंद्र में पहली बार विपक्षी जनता दल की सरकार बनी। विपक्ष की सरकार ढाई साल के अंदर अव्यवस्था के कारण गिर गई और एक बार फिर भारी बहुमत के साथ इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री बन गईं। यहां आपातकाल का इसलिए उदाहरण देना पड़ रहा है, क्योंकि उससे कहीं ज्यादा भय पिछले 10 सालों में जो अघोषित आपातकाल है उसमें देखने को मिल रहा हैं। केंद्रीय प्रवर्तन निदेशालय ईडी को जो अधिकार नशीले पदार्थों के कारोबार को रोकने के लिए तथा अवैध रूप से आतंकी गतिविधियों और नशीले पदार्थ के कारोबार में जो लेन-देन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हो रहे थे उसके लिए अंतरराष्ट्रीय संस्था द्वारा प्रत्येक देश में विशेष अधिकार दिए गए। भारत में ईड़ी को यह अधिकार मिले। पिछले वर्षों में ईड़ी ने नशीले पदार्थों के अवैध कारोबार को रोकने और आतंकी गतिविधियों के लेन-देन को रोकने के लिए विशेष अधिकारों का उपयोग किया हो ऐसा देखने में नहीं मिलता है। ईड़ी का उपयोग राजनीतिक विरोधियों के खिलाफ आपराधिक कार्रवाई करने, भ्रष्टाचार और रिश्वत के मामलों में ईडी का उपयोग किया गया है। बड़े-बड़े राजनेता और बड़े-बड़े अधिकारी जेल में बंद किए गए। कई महीने और वर्षों उनकी जमानत नहीं हुई। जिसके कारण ईड़ी का भय समाज के सभी वर्गों पर पड़ा। पिछले 10 सालों में साइबर क्राइम भी बड़ी तेजी के साथ बढ़े। साइबर क्राइम की पुलिस को भी विशेष अधिकार से सुसज्जित किया गया जिसके कारण अब देश में आम लोगों में ईड़ी और साइबर क्राइम पुलिस का सबसे ज्यादा भय देखने को मिल रहा है नारकोटिक्स और मनी लॉन्ड्रिंग का केस बताकर नकली ईड़ी के अधिकारी और नारकोटिक्स के अधिकारी बनकर डिजिटल अरेस्ट, नकली छापेमारी, और ऑनलाइन धमकी के माध्यम से लाखों लोगों के साथ ठगी करने के मामले सामने आए हैं। इस भय में आम आदमी बड़ी तेजी के साथ ठगा जा रहा है। हाल ही में एक 72 साल की महिला को फर्जी तरीके से ऑनलाइन अरेस्ट किया गया। फर्जी ऑनलाइन कोर्ट में उसे पेश किया गया। फर्जी अधिकारी, फर्जी पुलिस, फर्जी अदालत के माध्यम से करोड़ों-अरबो रुपए की ठगी देश में हुई है। इसमें मीडिया की भी बहुत बड़ी भूमिका है। एक बार ईड़ी और नारकोटिक्स की गिरफ्त में आने के बाद कई महीनो और वर्षों तक अदालत से जमानत नहीं होती है। बड़े-बड़े वकील हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट का चक्कर लगाते रहते हैं। मीडिया में ऐसे मामले खूब बढ़ा-चढ़ाकर दिखाए जाते हैं। नारकोटिक्स के एक मामले में शाहरुख खान के बेटे को जिस तरह गलत तरीके से गिरफ्तार किया गया मुख्यमंत्रियों, मंत्रियों, विधायकों और बड़े-बड़े अधिकारियों की गिरफ्तारी और लंबे समय तक जमानत नहीं होने के कारण लोग भयभीत हो गए हैं। भारत में ठग इसका बड़ा फायदा उठा रहे हैं रोजाना कई स्थानों से नकली ईड़ी के अधिकारी, नारकोटिक्स के नकली*

## चिंतन-मनन

### प्रकृति की तीन शक्तियां

*प्रकृति में तीन शक्तियां हैं- ब्रह्म शक्ति, विष्णु शक्ति और शिव शक्ति। प्राय: तुममें कोई भी एक शक्ति अधिक प्रबल होती है। ब्रह्म शक्ति वह ऊर्जा है जो नव-निर्माण करती है; विष्णु शक्ति ऊर्जा का पालन करती है और शिव शक्ति वह ऊर्जा है जो रूपांतरण करती है- नया जीवन देकर या संहार कर। तुममें से कुछ हैं जिनमें ब्रह्म शक्ति प्रबल है। तुम सृष्टि तो कर सकते हो, पर अपनी रचना को सुरक्षित नहीं रख पाते। हो सकता है तुम तुरंत ही नए मित्र बना लो, परंतु वह मित्रता अधिक समय तक टिकती नहीं। तुममें कुछ और लोग हैं जिनमें विष्णु शक्ति है। तुम रचना नहीं कर सकते, परंतु जो है उसे अच्छी तरह संभालकर रखते हो। तुम्हारी सभी पुरानी दोस्ती बहुत स्थायी होती है, परंतु तुम नए मित्र नहीं बना पाते। और तुममें कुछ ऐसे भी लोग हैं जिनमें शिव शक्ति प्रबल है। वे नव-जीवन लाते हैं या रूपांतरण, या जो है उसे खत्म करते हैं। गुरु शक्ति में ये तीनों शक्तियां पूर्ण रूप से प्रफुल्लित हैं। पहले यह पहचानो कि तुममें कौन-सी शक्ति प्रबल है और फिर गुरु शक्ति की आकांक्षा करो, प्रार्थना करो। संपूर्ण सृष्टि सरलता और बुद्धिमत्ता के मंगलमय लय से प्रकृति के नियमों पर चल रही है। यही मंगल ही दिव्यता है। शिव वह सामंजस्यपूर्ण सरलता है जो कोई नियंत्रण नहीं जानती। शिव का विपरीत है वशी, यानी नियंत्रण। नियंत्रण मन का होता है। नियंत्रण का अर्थ है दो, द्वैत, कमजोरी। वशी का अर्थ है स्वाभाविकता से कुछ करने के बजाए दबाव द्वारा कुछ करना। प्राय- लोग समझते हैं कि उनका जीवन, परिस्थितियां उनके नियंत्रण में, उनके वश में हैं; परंतु नियंत्रण एक भ्रम है, मन में क्षणिक ऊर्जा का दबाव नियंत्रण है। यह है वशी। शिव इसका विपरीत है।*

# विश्व हिन्दू परिषद् : कल आज और कल

*इसी तरह दक्षिणपंथी विचारधारा के राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ प्रमुख रहे राजेंद्र सिंह उर्फ़ रज्जु भैय्या का नाम भी इलाहाबाद से ही जुड़ा हुआ है। ऐसा ही एक नाम था जस्टिस शिव नाथ काटजू का जोकि 1980 के दशक में विहिप के अध्यक्ष भी चुने गये थे। जस्टिस काटजू ने अयोध्या में विवादित बाबरी मस्जिद की जगह पर राम मंदिर के निर्माण के लिए शुरुआती अभियान चलाया था।*

**तनवीर जाफ़री**

इलाहबाद कभी न केवल कांग्रेस बल्कि समाजवादी व आर एस एस व विश्व हिन्दू परिषद् के भी वरिष्ठ व राष्ट्रीय स्तर के नेताओं का गढ़ हुआ करता था। नेहरू-गाँधी परिवार की तो यह कर्मस्थली थी ही इसके अतिरिक्त पुरषोत्तम दस टंडन,मदन मोहन मालवीय जैसी अनेक विभूतियाँ भी इसी शहर से सम्बद्ध रहीं। इसी तरह दक्षिणपंथी विचारधारा के राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ प्रमुख रहे राजेंद्र सिंह उर्फ़ रज्जु भैय्या का नाम भी इलाहाबाद से ही जुड़ा हुआ है। ऐसा ही एक नाम था जस्टिस शिव नाथ काटजू का जोकि 1980 के दशक में विहिप के अध्यक्ष भी चुने गये थे। जस्टिस काटजू ने अयोध्या में विवादित बाबरी मस्जिद की जगह पर राम मंदिर के निर्माण के लिए शुरुआती अभियान चलाया था। और इसी दौरान उन्हें नज़रबंद भी कर दिया गया था। चूँकि मेरी भी औपचारिक शिक्षा इलाहाबाद में ही हुई इसलिये उस दौर के अनेक विशिष्ट जनों के साथ संबंध रखने का भी सौभाग्य मिला। जस्टिस काटजू भी उन्हीं में एक थे जिनके पास अक्सर मेरा आना जाना रहता था। जस्टिस काटजू विहिप के अध्यक्ष तो ज़रूर थे परन्तु वे पूर्णतय: धर्मनिर्पेक्ष थे। इस्लामी इतिहास का भी उन्हें ज़बरदस्त ज्ञान था। शिया -सुन्नी विवाद और करबला की घटना जैसे विषयों पर तो वे अक्सर मेरे साथ बातें किया करते और मेरा ज्ञान वर्धन किया करते थे। बात 1977-78 की है उस दौरान मैं इलाहबाद के मुहल्ला दरियाबाद के इमामबाड़ा सलवात अली ख़ान नामक एक ट्रस्ट से परिवारिक रूप से जुड़ा हुआ था। यहाँ अनेक धार्मिक आयोजन हुआ करते हैं। इन्हीं में एक चालीसवें का जुलूस (मुहर्रम के चालीस दिन बाद ) भी इसी इमामबाड़े से निकला जाता है। इसी जगह से निकलने वाले चालीसवें के जुलूस का प्रारंभिक संबोधन करने के लिये जब मैंने जस्टिस काटजू से निवेदन किया तो वे ख़ुशी ख़ुशी तैयार हो गये। हालांकि उन्होंने अयोध्या में मंदिर के निर्माण के लिए शुरू हुये विहिप आंदोलन तथा दरियाबाद की घनी मुस्लिम आबादी को भी रेखांकित किया। परन्तु मेरे संपूर्ण सुरक्षा व शांतिपूर्ण आयोजन के आश्वासन के बाद वे कार्यक्रम से पूर्व स्वयं अपनी एम्बेसडर कार चलाकर बिल्कुल अकेले ही दरियाबाद पधारे। यहाँ दरियाबाद चौराहे पर मौजूद मेरे साथियों ने उनका स्वागत किया व पूरे सम्मान के साथ उन्हें इमामबाड़ा सलवात



अली ख़ान लेकर गये। यहाँ मौजूद समूह के बीच जस्टिस काटजू ने कर्बला की घटना का ज़िक्र करते हुये न केवल अपनी तरफ़ से बल्कि विश्व हिंदू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष होने की हैसियत से विहिप की तरफ़ से भी हज़रत इमाम हुसैन व करबला के शहीदों को बड़े ही भावपूर्ण शब्दों में श्रद्धांजलि अर्पित की। शेरवानी,टोपी और चूड़ीदार पैजामा जैसा परिधान प्राय: धारण करने वाले काटजू साहब सभी धर्मों का पूरा ज्ञान रखते थे तथा उन्हें सम्मान भी देते थे। वे विश्व हिंदू परिषद के अध्यक्ष होने के बावजूद सभी धर्मों में परस्पर मेल जोल व सद्भाव के पक्षधर थे। उन्हें उर्दू आरबी फ़ारसी का भी पूरा ज्ञान था। यह था उस दौर के विश्व हिंदू परिषद का वह चेहरा जिससे भारत का ग़ैर हिन्दू समाज कभी भयभीत नहीं होता था। उसके बाद जबसे गुजरात को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की प्रयोगशाला कहा जाने लगा तब से इसी विश्व हिंदू परिषद ने खुलकर इस्लाम व अल्पसंख्यकों के प्रति अपनी आक्रामकता दिखानी शुरू कर दी। इसी विश्व हिंदू परिषद में बजरंग दल नामक एक और संगठन तैयार हो गया जो समय समय पर आक्रामक होते नज़र आया। आज पूरे देश में विश्व हिंदू परिषद व बजरंग दल पर अनेक आपराधिक मुक़दमे चल रहे हैं। इसी विश्व हिंदू परिषद ने योजनाबद्ध तरीक़े से गुजरात से शुरू कर कॉरोनकाल के दौरान देश के कई राज्यों में मुस्लिम दुकानदारों के प्रति नफ़रत फैलाकर उनसे सब्ज़ी फल व अन्य सामान ख़रीदने के लिये हिन्दू समाज के लोगों को मना किया। सीधे शब्दों में मुस्लिमों का व्यवसायिक बहिष्कार करने की कोशिश की गयी। इसी विहिप ने बेटी बचाओ बहू लाओ नामक एक अभियान भी चलाया जिसके अंतर्गत किसी हिन्दू लड़की के मुस्लिम लड़के से प्रेम संबंध होने की स्थिति में उस रिश्ते में दख़ल देना तथा वह अंतर्धार्मिक सम्बन्ध परवान न चढ़ने देना है। जबकि साथ ही हिन्दू लड़कों को इस बात के लिये आमादा करना है कि वे मुस्लिम लड़कियों से दोस्ती कर उनको बहू बनाकर लाएं। गुजरात सहित और भी कई राज्यों से ऐसी ख़बरें भी आती रही हैं जबकि विहिप के लोगों ने किसी मुस्लिम को किराये पर मकान देने का विरोध किया तो कभी ख़रीदे हुये फ़्लैट में भी क़ब्ज़ा लेने व उनके रहने का विरोध किया। कई जगहों पर विश्व हिंदू परिषद के लोग मुस्लिमों की मॉब लिंचिंग करने वालों का साथ देते यहाँ तक कि उनके समर्थन में सड़कों पर उतरते,उग्र होते व हत्यारों को सम्मानित करते नज़र आये। आज का विश्व हिंदू परिषद तो पूरी तरह से अपने उन बुनियादी सिद्धांतों से दूर होता नज़र आ रहा है जिसे लेकर हिंदू राष्ट्रवाद पर आधारित इस भारतीय दक्षिणपंथी हिंदू संगठन की स्थापना 1964 में की गयी थी। उस समय इसका घोषित उद्देश्य हिंदू समाज को संगठित व मज़बूत करना और हिंदू धर्म की सेवा और सुरक्षा करना था न कि किसी अन्य धर्म के विरुद्ध आक्रामक होना या भारतीय लोगों में अफ़वाहबाज़ी के द्वारा नफ़रत हिंसा व विद्वेष भड़काना और किसी भारतीय नागरिक को दूसरे दर्जे का नागरिक समझना। न ही किसी की मस्जिद मज़ार गिराना व अन्य धर्मों की ध्वजा उतारकर अपनी धर्मध्वजा लहराना। न ही इस तरह के अभियान चलाना। परन्तु इससे भी आगे बढ़कर आज का विश्व हिन्दू परिषद तो गोया संविधान विरोधी संवाद को भी हवा देने वाला एक मंच बन चुका है। इनदिनों इलाहाबाद हाई कोर्ट के जस्टिस शेखर यादव द्वारा दिया गया एक असंवैधानिक भाषण जो कि गत 8 दिसम्बर को इलाहाबाद हाई कोर्ट के लाइब्रेरी हॉल में वीएचपी के विधि प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान दिया गया था वह न केवल चर्चा में है बल्कि उसी भाषण को लेकर जस्टिस शेखर यादव के विरुद्ध महाभियोग चलाने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी गयी है। वीएचपी के लीगल सेल के इसी आयोजन में जस्टिस शेखर यादव ने समान नागरिक संहिता एक संवैधानिक अनिवार्यता विषय पर बोलते हुए कहा था कि देश एक है, संविधान एक है तो क़ानून एक क्यों नहीं है? उन्होंने इसी मंच पर यह भी कहा कि हिंदुस्तान में रहने वाले बहुसंख्यकों के अनुसार ही देश चलेगा, यही क़ानून है। आप यह भी नहीं कह सकते कि हाई कोर्ट के जज होकर ऐसा बोल रहे हैं।

# दहेज प्रथा को खत्म करना हम सब की साझी

*देखिए अगर किसी महिला ने गलत किया है तो इससे यह सिद्ध नहीं होता कि सारी की सारी महिलाएं खराब होती हैं या क्रूर होती है और अगर किसी पुरुष ने किसी महिला के साथ क्रुरता कर दी तो इसका मतलब यह नहीं है कि हर पुरुष क्रूर होता है, अगर किसी वर्ग के किसी व्यक्ति ने कुछ गलत किया है तो इसका मतलब यह नहीं कि सारे वर्ग को कटघरे में खड़ा कर दिया जाए यह बहुत नॉर्मल बात है केवल समझने की दरकार है। मै ऐसे कितने लोगों को जानता हूं।*

**दिलीप कुमार पाठक**

अभी कुछ दिनों से इंजीनियर का मामला विमर्श का विषय बना हुआ हैद्य सोशल मीडिया के दौर में हर कोई अपना मत प्रस्तुत कर रहा है, मैं समझता हूं कि हर मुद्दे पर अपनी राय रखना भी नहीं चाहिए। देखिए अगर किसी महिला ने गलत किया है तो इससे यह सिद्ध नहीं होता कि सारी की सारी महिलाएं खराब होती हैं या क्रूर होती है और अगर किसी पुरुष ने किसी महिला के साथ क्रूरता कर दी तो इसका मतलब यह नहीं है कि हर पुरुष क्रूर होता हैद्य अगर किसी वर्ग के किसी व्यक्ति ने कुछ गलत किया है तो इसका मतलब यह नहीं कि सारे वर्ग को कटघरे में खड़ा कर दिया जाए यह बहुत नॉर्मल बात है केवल समझने की दरकार है। मै ऐसे कितने लोगों को जानता हूं जिन्होंने महिलाओं के साथ क्रूरता की है। ऐसी कितनी सारी महिलाएं हर रोज़ क्रूरता का शिकार होती हैं संभवत आप सब भी जानते होंगे तो इसका मतलब यह नहीं है कि हर पुरुष को क्रूर कहा जाएद्य हम समाज का अध्ययन करेंगे तो पता चलेगा कि भारत में खासकर हिंदी पट्टी राज्यों में अधिकांश लोगों का शादी सीजन में इन्हीं बातों पर दिन खर्च हो जाता है कि किसको कितना दहेज मिला है किसको कितना पैसा मिला है, किसको कौन सी गाड़ी मिली हैद्य हिंदी पट्टी की यह भी एक सच्चाई हैद्य हम कितने भी प्रोग्रेसिव बनने का ढोंग करें सच यही है कि हम अपने रिश्तेदारों को दहेज लेने - देने से भी रोक नहीं पातेद्य खुद से पूछिए आपने ऐसी कितनी शादियों का बहिष्कार किया या अपने रिश्तेदारों को दहेज के लिए रोका और जागरूक किया, दरअसल दूसरों को हर रोज़ आईना दिखाने वाला समाज़ कभी आईना नहीं देखता... ग़र आईना देखेंगे तो समाज़ में व्याप्त कुरीतियों को ख़त्म किया जा सकता हैद्य यह हम सब की नैतिक ज़िम्मेदारी है। हमारे यहां गवर्नमेंट जॉब, या किसी बड़ी नौकरी का बच्चों से ज्यादा माता-पिता में एक फितूर होता है, कि मेरा बेटा नौकरी से लग जाए तो सबसे पहले मैं उसकी बोली लगाऊँद्य अधिकांश यही होता है, हां मैं बड़ी जिम्मेदारी के साथ कह रहा हूंद्य कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो अपनी बेटियों की शादी तभी करते हैं जब वे लड़के वाले से पैसे ले लेते हैंद्य कई जगह मिसमैच शादियाँ ऐसे भी होती हैंद्य यह हद्द गंदी बात है और इसीलिए मैं हमेशा कहता हूं किसी भी संदर्भ में देखिए ये सबसे खराब दौर हैद्य

हर मुद्दे पर लोग अपनी राय देने के लिए तैयार बैठे होते हैंद्य मुझे लगता है की राय दी जानी चाहिए बशर्ते आपको उसके बारे में जानकारी हो, अन्यथा नहीं बोलना चाहिएद्य मुझे नहीं पता किसका दोष है, हमारा सहज लोगों का समाज़ नहीं हैद्य अगर एक आदमी दोषी है या एक महिला दोषी है तो पूरे वर्ग को लपेटना और पूरे वर्ग को दोषी कहना कहीं से भी जायज नहीं हैद्य हमारे देश की लगभग 70 फ़ीसदी महिलाएं कभी न कभी अपनी ज़िंदगी में क्रूरता की शिकार होती हैद्य यह भी सच है शादी के बाद अधिकांश दहेज के जो मामले होते हैं वह अधिकांश झूठे होते हैंद्य कुछ सालों से पुरुष प्रताड़ना के केस भी खुलकर सामने आ रहे हैंद्य हालांकि इससे कौन इंकार करेगा हमारे देश में दहेज खूब लिया जाता है, खूब दिया जाता हैद्य हम बहुत से ऐसे लोगों को जानते हैं जो बहुत पढ़े लिखे हैं समाज में बहुत अच्छी उनकी इज्जत है और वे समय - समय पर अच्छी खासी तकरीरें भी करते हैं लोगों को जागरूक करने का ढोंग भी करते हैं, लेकिन दहेज लेते हैंद्य कई तो दहेज बताते हैं कि इतने पैसे मिले हैं, बड़ी गाड़ी मिली हैद्य मतलब हिन्दी पट्टी में ये भी इज्ज़तअफजाई का एक कारण होता है। अभी पिछले हफ़्ते एक सज्जन मुझे बता रहे थे कि दिलीप मैंने अपनी बेटी की शादी 25 लाख में तय किया है घर अच्छा है लड़का सरकारी नौकरी करता है, मेरी बेटी को आराम रहेगा जबकि वे सज्जन राजनेता हैं. 25 लाख इसलिए क्योंकि पहले ही किसी ने 20 लाख रुपये का दहेज देने की बोली लगाई हुई थीद्य जबकि वो लड़का सरकारी अध्यापक हैद्य मैंने कहा मुझे लेकर चलना फ्री शादी न हो तो कहना और आपने पैसे क्यों दिए? जिगर का टुकड़ा (बेटी) दिया यह क्या कम है? फिर ऐसे लालची लोगों के यहां रिश्ता क्यों करना? उन्होंने कहा कि फिर तो उनसे बुराई हो जाएगी अगर आपको लेकर चलेंगेद्य और फ़िर सरकारी नौकरी वाले लड़के आसानी से मिलते नहीं हैद्य मैं सच कह रहा हूं मैं ऐसी फूहड़ अश्लील शादियों में शामिल ही नहीं होताद्य मुझे लेने वालों से ज्यादा दहेज देने वालों पर ज़्यादा गुस्सा आता हैद्य दहेज देने की अपेक्षा बेटियों को पढ़ाने पर ज़ोर देना चाहिएद्य यह समाज कैसे बदलेगा? इंजीनियर वाले मामले ने एक चिंता ये भी बढ़ा दी है कि सामाजिक स्तर ख़राब हुआ हैद्य हम सब के लिए चिंता की बात है। इंजीनियर के साथ गलत हुआ है उसका मूल्यांकन होना चाहिएद्य अगर दहेज से संबंधित किसी कानून में कोई त्रुटि है तो उसकी कमियां दूर होना चाहिएद्य इंजीनियर के साथ क्रूरता हुई है।

## चला गया तबले का फ़नकार उस्ताद जाकिर हुसैन!

**डॉ श्रीगोपाल नारसन**

मशहूर तबला वादक जाकिर हुसैन का 73 साल की उम्र में अमेरिका के एक अस्पताल में उपचार के दौरान निधन हो गया है। जाकिर हुसैन के दिल का अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को में उपचार चल रहा था। वही इस गंभीर बीमारी के कारण उनकी मौत हो गई ।मशहूर तबला वादक जाकिर हुसैन को हृदय संबंधी समस्याओं के बाद अमेरिकी शहर सैन फ्रांसिस्को के एक अस्पताल के आईसीयू में भर्ती कराया गया था ।उस्ताद अल्ला रक्खा कुरैशी जो कि अपने जमाने के मशहूर तबला वादक थे, ने तबले के यही बोलधाति धागे नधा तिरकिट धाति धागे धिना गिना, ताति ताके नता तिरकि धाति धागे धिना गिनाअपने डेढ़ दिन के बेटे जाकिर हुसैन के कान में कहे थे,उन्होंने कहा था कि मैं तबले की ही इबादत करता रहा हूं, यही एक बंदगी मैं जानता हूं और यही मेरा आशीर्वाद भी है जाकिर हुसैन के लिए। उस्ताद अल्ला रक्खा कुरैशी का यह बेटा तबले के उस्ताद के नाम से मशहूर हुआ। शायद पैदाइशी के समय कान में जो मंत्र रूपी ताल फूंकी गई, वही उनकी जिंदगी की सबसे बड़ी पहचान बन गई ।सन 1990 के दशक में दूरदर्शन पर अमर गीत मिले सुर मेरा तुम्हारा और दूसरा एक चाय का विज्ञापन बहुत मशहूर रहा ,जिसमे यमुना नदी का किनारा, ताजमहल का बैकग्राउंड और मुहब्बत की निशानी के सामने बैठा एक नौजवान, जिसकी उंगलियां तो तबलों पर थिरकती ही थीं, बाल भी उसी गति से हवा से बातें करते हुए, क्या ही गजब लहराते थे, ये विज्ञापन भले ही चाय का रहा हो, लेकिन उस्ताद जाकिर हुसैन साहब इसके जरिए हर घर में मशहूर हो गए थे। तबले की थाप से भारतीय शास्त्रीय संगीत को पूरी दुनिया में एक नई पहचान दिलाने वाले उस्ताद जाकिर हुसैन का नाम हर संगीत प्रेमी के दिल में बसा है ।9 मार्च सन 1951 को मुंबई में जन्मे जाकिर हुसैन ने संगीत की दुनिया में अपनी अनोखी छाप छोड़ी। बचपन से ही वे अपने पिता के साथ तबले की साधना में जुट गए थे ।जाकिर हुसैन ने सेंट माइकल्स हाई स्कूल मुंबई से अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की। इसके बाद उन्होंने मुंबई के सेंट जेवियर कॉलेज से ग्रेजुएशन किया था। वे पढ़ाई के साथ-साथ संगीत साधना में भी लगे रहे ।जाकिर हुसैन ने अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ वॉशिंगटन में भी पढ़ाई की। यहां वे संगीत और विश्व सांस्कृतिक धरोहर के आदान-प्रदान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बने। उनका यह सफर उन्हें बतौर ग्लोबल आर्टिस्ट स्थापित करने में मददगार साबित हुआ ।जाकिर हुसैन ने मात्र 12 साल की उम्र में मंच पर तबला बजाना शुरू कर दिया था। उनकी थाप ने जल्द ही उन्हें इंडियन क्लासिकल म्यूजिक के उभरते सितारे के रूप में पहचान दिलाई। पिता उस्ताद अल्ला रक्खा की छत्रछाया में उन्होंने तबले की बारीकियां सीखीं और अपने हुनर को निखारा। उन्होंने बॉलीवुड, फ्यूजन और इंटरनेशनल म्यूजिक में भी अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। उन्होंने वेस्टर्न और इंडियन म्यूजिक के संगम को बेहतरीन तरीके के पेश किया था। उस्ताद जाकिर हुसैन को सन 1988 में पद्म श्री, सन 2002 में पद्म भूषण और सन 2023 में पद्म विभूषण जैसे देश के बड़े सम्मानों से नवाजा गया। वे भारत के उन दिग्गज कलाकारों में से रहे हैं, जिन्होंने अपनी कला के दम पर पूरी दुनिया में शोहरत पाई और तबले की थाप पर संगीत साधना करते करते चले गए।

**( लेखक वरिष्ठ साहित्यकार है )**

## खास बात

### उपराष्ट्रपति के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव जरूरी

भारत के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ इन दोनों देश एवं दुनिया में चर्चा के विषय बने हुए हैं. वह राज्यसभा के सभापति भी हैं.राज्यसभा के सभापति सभी संसद सदस्यों के गार्जियन होते हैं. विपक्षी सांसदों के साथ हमेशा से राज्यसभा के सभापति के मधुर संबंध होते थे.सरकार और विपक्ष के बीच वही सेतु बनाने का काम करते थे. जब से जगदीप धनखड़ सभापति बने हैं. उसके बाद से सदन में वह सबसे ज्यादा बोलते हैं. राज्यसभा के सदस्यों को बोलने से पहले प्रमाण देने की बात करते हैं. ऐसी सेंसरशिप तो आपातकाल में समाचार पत्रों पर नहीं लगी थी.जो इन दोनों राज्यसभा के सांसदों पर लगी हुई है. सांसदों द्वारा बोले गए शब्दों को राज्यसभा की कार्रवाई से हटा दिया जाता है. उनकी बातें रिकॉर्ड ही नहीं की जाती है. विपक्ष के लाये गए प्रस्ताव को अमान्य कर दिया जाता है.ऐसी स्थिति में विपक्ष के सामने अविश्वास प्रस्ताव लाने के अलावा अन्य कोई विकल्प भी नहीं रह गया था. जिस तरह से सदन के अंदर नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और उपराष्ट्रपति के बीच में किसान और मजदूर तक का, जो संवाद हुआ है. उससे ऐसा लगता है, संसदीय परंपराएं पूरी तरह से दम तोड़ चुकी हैं. आसंदी सरकार की रक्षक बनी हुई है. संविधान और लोकतंत्र की नैतिकता यदि नहीं रहेगी, ऐसी स्थिति में लोकतंत्र के बारे में सोचना भी बेमानी है.

### मुसलमानो को पाकिस्तान भगाएंगे, या धर्मांतरण करायँगे?

भारत में जिस तरह से धार्मिक आधार पर ध्रुवीकरण हो रहा है. मुस्लिम आक्रांताओं को लेकर,भारत में रह रहे मुसलमानो को जिस तरह से प्रताड़ित किया जा रहा है. जिस तरह से मुस्लिम समुदाय के धार्मिक स्थलों को निशाने पर लिया जा रहा है. एक केंद्रीय मंत्री बार-बार मुसलमानो को पाकिस्तान जाकर रहने की बात करते हैं.उसके बाद हिंदू संगठनों के बीच यह बात भी जोर पकड़ने लगी है. जिस तरह से महमूद गजनी, कुतुबुद्दीन ऐबक और औरंगजेब ने हिंदुओं को मारा था. हिंदुओं के धार्मिक स्थल गिराये थे. हिंदुओं का धर्मांतरण किया गया था. अब भारत में यह बात होने लगी है, मुसलमानो का धर्मांतरण कराके उन्हें हिंदू बनाया जाए. उनका डीएनए तो हिंदू ही है. या उन्हें गुलामों की तरह रखा जाए. उनके नागरिक अधिकार समाप्त कर दिए जाएं. इस पर हिंदू संगठनों का चिंतन शुरू हो गया है. भविष्य में क्या होगा, यह तो कोई नहीं जानता है. जिस तरह से गड़े मुर्दे उखाड़े जा रहे हैं. मुसलमान डरे हुए हैं. हिंदू संगठनों को लग रहा है यही सही मौका है. भारत को हिंदू राष्ट्र घोषित किया जा सकता है.

### दिल्ली में इस बार केजरीवाल की लहर नहीं

अगले 2 महीने में दिल्ली विधानसभा के चुनाव होना है. इस बार पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की लहर दिल्ली में देखने को नहीं मिल रही है. इस बार आम आदमी पार्टी को त्रिकोणीय मुकाबले में जाना पड़ रहा है. कांग्रेस अब पहले की तुलना में काफी मजबूत हो गई है. केंद्रीय चुनाव आयोग और केंद्र सरकार पहले की तुलना में पहले से कई गुना मजबूत हो गई है. शीला दीक्षित का बदला लेने के लिए उनके पुत्र संदीप दीक्षित चुनाव मैदान में पूरे दमखम के साथ कांग्रेस की लड़ाई लड़ रहे हैं. इंडिया गठबंधन में होते हुए भी अरविंद केजरीवाल ने कांग्रेस का साथ छोड़ा है. जो उनके पतन का कारण बन सकता है. लगातार चुनाव जीतने के बाद केजरीवाल को अहंकार हो गया है. वह राजनीतिक दांव पेंच के स्थान पर राजनीति में नोसीखिए की तरह व्यवहार कर रहे हैं।

## राशिफल

शुभ संवत 2081, शाके 1946, सौम्य गोष्ठ,पौष कृष्ण पक्ष, हेमंत ऋतु, गुरु उदय पूर्वे शुक्रोदय पश्चिम तिथि दोइज मंगलवासरे 13/34 पुर्नवसु नक्षत्रे 49/29 रात्रि 2/39 मिथुन की चंद्रमा, भद्रा 43/1 सौर मास प्रारंभ त्रिपुस्कर योग 13/34 तथापि पश्चिम दिशा की यात्रा शुभ उत्तम होगी।

**आज जन्म लिए बालक का फल:** आज जन्म लिया बालक योग्य बुद्धिमान, कुशलवक्ता, अधिवक्ता, ट्रक, बस ड्राईवर, ट्रांसपोर्टर, ट्रक, बस मालिक वाहन से सुखी, लकड़ी का ठेकेदार तथा लकड़ी खरीदने तथा बेचने वाला, सुखी, खेती बाड़ी वाला, उत्तम उद्योग स्थापित करने वाला योग्य होगा।

**मेष राशि**- मान प्रतिष्ठा बाल-बाल बचें, कार्य व्यवसाय गति उत्तम, स्त्री से हर्ष उल्लास होगा।

**वृष राशि**- धन प्राप्त के योग बनेंगे, नवीन मैत्री तथा मंत्रणा फल प्राप्त होगा, समय का ध्यान रखे।

**मिथुन राशि**- इष्ट मित्र सहायक रहे, व्यावसायिक क्षमता में वृद्धि होवे तथा कार्य अवश्य बन जाएगे।

**कर्क राशि**- सामाजिक मान प्रतिष्ठा, कार्यकुशलता से संतोष, रुके कार्य बन ही जाएंगे, ध्यान दें।

**सिंह राशि**- परिश्रम से समय पर कार्य पूर्ण होंगे तथा व्यवसाय गति उत्तम अवश्य बनेगी।

**कन्या राशि**- अधिकारियों का समर्थन फलप्रद रहे तथा कार्य कुशलता से संतोष होगा, ध्यान रखे।

**तुला राशि**- दैनिक व्यवसाय गति उत्तम, मान सम्मान तथा व्यावसायिक चिन्ताएं कम होगी।

**वृश्चिक राशि**- कार्यवृत्ति में सुधार होगा, असमंजस तथा सफलता न मिलें, कार्य अवरोध होगा।

**धनु राशि**- स्थिति अनियमित रखे तथा नियंत्रण स्थिति को रखना आवश्यक होगा, ध्यान रखे।

**मकर राशि**- मानसिक खिन्नता एवं भाव में मानसिक उद्विघ्नता, अस्थिरता अवश्ह ही होगी।

**कुंभ राशि**- योजनाएं फलीभूत होगी, विघटनकारी तत्व परेशान अवश्य ही करेंगे।

**मीन राशि**- मनोबल उत्साह वर्धक होगा, कार्य कुशलता से संतोष अवश्य होगा।

**पीएल गौतमाचार्य**

## दैनिक पंचांग

**17 दिसम्बर 2024 को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति**




| ग्रह स्थिति | | लग्नारंभ समय | |
|---|---|---|---|
| सूर्य | धनु में | धनु | 06.29 बजे से |
| चंद्र | मिथुन में | मकर | 08.38 बजे से |
| मंगल | कर्क में | कुंभ | 10.24 बजे से |
| बुध | वृश्चिक में | मीन | 11.57 बजे से |
| गुरु | वृष में | मेष | 13.28 बजे से |
| शुक्र | मकर में | वृष | 15.08 बजे से |
| शनि | कुंभ में | मिथुन | 17.06 बजे से |
| राहु | मीन में | कर्क | 19.19 बजे से |
| केतु | कन्या में | सिंह | 21.35 बजे से |
| राहुकाल | | कन्या | 23.47 बजे से |
| 3.00 से 4.30 बजे तक | | तुला | 01.58 बजे से |
| | | वृश्चिक | 04.13 ब.से |

**मंगलवार** 2024 वर्ष का 352 वां दिन **दिशाशूल** उत्तर **ऋतु** हेमन्त। **विक्रम संवत्** 2081 **शक संवत्** 1946 **मास** पौष (दक्षिण भारत में मृगशीर्ष) **पक्ष** कृष्ण **तिथि** द्वितीया 10.57 बजे को समाप्त। **नक्षत्र** पुनर्वसु 00.44 बजे रात्र को समाप्त। **योग** ब्रह्म 21.11 बजे को समाप्त। **करण** गर 10.57 बजे तदनन्तर वणिज 22.26 बजे को समाप्त। **चन्द्रायु** 15.7 घण्टे **रवि क्रान्ति** दक्षिण 23° 22' **सूर्य** दक्षिणायन **कलि अहर्गण** 1872196 **जूलियन दिन** 2460661.5 **कलियुग संवत्** 5125 **कल्पारंभ संवत्** 1972949123 **सृष्टि ग्रहारंभ संवत्** 1955885123 **वीरनिर्वाण संवत्** 2551 **हिजरी सन्** 1446 **महीना** जमादि उस्सानी **तारीख** 14

| दिन का चौघड़िया | | | रात का चौघड़िया | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रोग | 05.53 से | 07.22 बजे तक | काल | 05.42 से | 07.13 बजे तक |
| उद्वेग | 07.22 से | 08.15 बजे तक | लाभ | 07.13 से | 08.45 बजे तक |
| चर | 08.15 से | 10.19 बजे तक | उद्वेग | 08.45 से | 10.16 बजे तक |
| लाभ | 10.19 से | 11.48 बजे तक | शुभ | 10.16 से | 11.48 बजे तक |
| अमृत | 11.48 से | 01.16 बजे तक | अमृत | 11.48 से | 01.19 बजे तक |
| काल | 01.16 से | 02.45 बजे तक | चर | 01.19 से | 02.51 बजे तक |
| शुभ | 02.45 से | 04.13 बजे तक | रोग | 02.51 से | 04.22 बजे तक |
| रोग | 04.13 से | 05.42 बजे तक | काल | 04.22 से | 05.54 बजे तक |

**चौघड़िया शुभाशुभ- शुभत्व श्रेष्ठ** शुभ, अमृत व लाभ, **मध्यम** चर, **अशुभ** उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अत: आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें। ■ Jagrutidaur.com, Bangalore

नर्मदापुरम की हलचल

## कैमरा दुकान में लगी आग,लाखों का नुकसान

**इटारसी/नर्मदापुरम।** इटारसी शहर में आज सुबह पांच बजे राजकुसुम कॉम्प्लेक्श स्थित कैमरे की दुकान में आग लग गई।आग से दुकानदार रमेश पाटिल का लाखों रुपये का नुकसान हुआ है।आग के कारणों का स्पष्ट कारण पता नही चल सका है।नपा की दमकल ने आकर आग को काबू किया।

## मैनेजमेंट गुरु रघुरमन कल आएंगे

**नर्मदापुरम।** स्कूल शिक्षा और उच्च शिक्षा में अध्यनरत विद्यार्थियों के कैरियर मार्गदर्शन को लेकर एक कैरियर मार्गदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। जिसके लिए मैनेजमेंट गुरु रघुरमन आ रहे हैं। जिसमें बच्चों के करियर से संबंधित प्रश्न का उत्तर भी दिया जाएगा। यह कार्यक्रम 18 दिसंबर को सुबह 11 बजे से डॉल्फिन स्पोर्ट एकेडमी पंडित रामलाल शर्मा स्कूल बुधवाडा नर्मदापुरम में आयोजित किया गया है।

## पेंशनर डे पर स्वास्थ्य शिविर एवं सम्मान समारोह को

**नर्मदापुरम।** भारत पेंशनर्स समाज की जिला कार्यकारणी की बैठक में लिये गये निर्णय के अनुसार स्वास्थ्य शिविर एवं पेशनर्स सम्मान समारोह 22 दिसम्बर को मंगल भवन हाउसिग बोर्ड कालोनी में सुबह 11बजे से दोपहर 3 बजे तक आयेजित होगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक डाक्टर सीताशरण शर्मा, विशिष्ठ अतिथि राज्यसभा सांसद माया नारोलिया एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता नपाध्यक्ष नीतु यादव करेंगी। 80 वर्ष से अधिक आयु के पेंशनर का सम्मान किया जायेगा। स्वास्थ्य शिविर में नेत्र रोग की जांच हेतु सेवा सदन बैरागढ की टीम, अस्थिरोग विशेषज्ञ डा अग्रवाल, ह्रदय रोग विशेषज्ञ डा गुप्ता, दंत रोग विशेषज्ञ महक जैन, डाक्टर ए के त्रिपाठी, डा आर एच चौरे उपस्थित रहेगे। पेंशनर्स एवं आम नागरिको का स्वास्थ्य परिक्षण किया जायेगा।

## सामान्य प्रशासन स्थायी समिति की बैठक 20 को

**नर्मदापुरम।** मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत नर्मदापुरम सौजान सिंह रावत ने बताया कि जिला पंचायत की सामान्य प्रशासन स्थायी समिति की बैठक 20 दिसम्बर को दोपहर 2 बजे से जिला पंचायत के सभाकक्ष में आयोजित की गई है। बैठक में पूर्व बैठक की कार्यवाही पर चर्चा, जिला पंचायत के आय व्यय के संबंध में चर्चा एवं अनुमोदन आदि विषयों पर चर्चा की जाएगी।

### जंगली सूअर का शिकार करने लगाया था करंट वाला फंदा

# टाइगर की मौत के जिम्मेदार तीन आरोपी शिकारी गिरफ्तार

नर्मदापुरम ■ अमृत दर्शन

जिले के बानापुरा रेंज के बांसपानी के जंगल में टाइगर की मौत के मामले का खुलासा हो गया है।टाइगर की मौत करंट वाले फंदे में फंसने की वजह से हुई थी। यह फंदा जंगली सूअर का शिकार करने 3 ग्रामीणों ने लगाया था। तीनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है। टाइगर की मौत के जिम्मेदार 3 शिकारियों को टाइगर स्ट्राइक फोर्स और वन विभाग की टीम ने पकड़ लिया। शिकार के तीनों आरोपी बांसपानी गांव के ही रहने वाले है। आरोपियों ने पूछताछ में दांत और नाखून काटने से इनकार कर दिया है। अब टीमें दांत और नाखून काटने वालों की जानकारी जुटाने सक्रिय हुई हैं।

**जंगली सूअर था शिकारियों का टारगेट:** पकड़े गए आरोपियों ने बताया कि जंगली सूअर उनका टारगेट था। जंगली सूअर के लिए फंदा लगाया था,लेकिन उसमें टाइगर फंस गया। फंदे में बिजली करंट होने से उसकी मौत हो गई। धोखे से टाइगर का शिकार होने से घबराकर तीनों ने टाइगर के शव को घसीटकर झाड़ियों में छिपा दिया था। इसके बाद वे गांव में भाग गए थे।टाइगर स्ट्राइक फोर्स और वन विभाग की टीम ने तीनों शिकारियों के पास से तार और फंदा लगाने की खूंटिया जब्त कर ली हैं।

**सीसीएफ ने की पुष्टि:** सीसीएफ अशोक कुमार चौहान ने बताया कि टाइगर के शिकार के मामले में विभागीय टीमें दिन रात जुटी थी। टाइगर की मौत के मामले में बांसपानी से 3 शिकारियों को पकड़ा गया है। उनसे बिजली के तार और फंदा लगाने वाली खूंटियां जब्त की गई हैं। दांत और नाखून की तलाश की जा रही है। करंट लगने से बाघ की मौत की बात सामने आई है।

### टीम ने इन शिकारियों को दबोचा

वन विभाग को 11 दिसंबर को बांसपानी के जंगल में झाड़ियों में टाइगर का शव सड़ती अवस्था में मिला था। रविवार को टीम ने ग्राम बांसपानी से टाइगर के शिकार के आरोपी कैलाश कोरकू, पिंटा और राम रतन को हिरासत में लिया। पूछताछ में शिकारियो ने अपना गुनाह कबूल कर लिया है। उन्होंने बताया कि जंगली सूअर को पकड़ने के लिए बिजली के तार का फंदा लगाया था लेकिन उसमें टाइगर फंसकर जान गवां बैठा था। इसके बाद तीनों ने टाइगर के शव को घसीटकर झाड़ियों में छिपा दिया था। टाइगर स्ट्राइक फोर्स और वन विभाग की टीमें आरोपियों से पूछताछ कर रही हैं।

### वन्यप्राणी बाघ की मृत्यु में 3 आरोपी गिरफ्तार

वनमंडल अधिकारी (सामान्य) वनमंडल नर्मदापुरम ने बताया कि वनमंडल नर्मदापुरम के परिक्षेत्र बानापुरा की बीट बांसपानी के कक्ष क्रमांक आरएफ 433 में 11 दिसम्बर को वन अमले द्वारा गस्ती के दौरान जंगली जानवर बाघ का शव देखा गया। बाघ की मृत्यु का कारण जानने के लिए पोस्टमार्टम एवं विसरा एकत्र करने हेतु एनटीसीए के प्रोटोकॉल अनुसार कार्यवाही की गई। प्रकरण की जांच में डॉग स्क्वायड, मध्य प्रदेश टाइगर स्ट्राइक फोर्स की भी मदद ली गई। जांच के दौरान संदिग्ध पाए गए व्यक्तियों से पूछताछ की गई। प्रकरण में प्राप्त साक्ष्यों एवं संदिग्ध व्यक्तियों के बयान के आधार पर कैलाश पिता प्रेमलाल, जाति कोरकू, उम्र 33 वर्ष, रामरतन पिता राधेलाल, जाति कोरकू, उम्र 19 वर्ष, भूरा (परिवर्तित नाम), उम्र 16 वर्ष, सभी निवासी ग्राम बांसपानी, ग्राम पंचायत पीपलगोटा को गिरफ्तार किया गया है।

# वैश्य कैलेंडर का हुआ विमोचन

इटारसी/ नर्मदापुरम ■ अमृत दर्शन

वैश्य महासम्मेलन मध्यप्रदेश द्वारा प्रकाशित वैश्य कैलेंडर का विमोचन कार्यक्रम फुटलैंड रेस्टोरेंट में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महासम्मेलन के प्रदेश उपाध्यक्ष भगवान दास अग्रवाल रहे। उन्होंने उपस्थित पदाधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि वैश्विक परिस्थितियों में समय बड़ा कठिन है। हर जगह अराजकता का माहौल है और इस अराजकता का शिकार कोई होता है तो वह व्यापारी समुदाय है और व्यापारी समुदाय का एक अंग वैश्य समाज होता है,पर तकलीफ यह है कि वो संगठित नहीं होता है। अपने आराम दायक समय में उसको संगठन की सोच नहीं रखता। वैश्य महासम्मेलन का उद्देश्य सभी वैश्य घटकों को संगठित करना है क्योंकि वर्तमान समय में संगठन की महत्ता है। संगठन हमे सुरक्षा और आत्मविश्वास प्रदान करता है। वैश्य समाज की सहभागिता समाज की हर गतिविधि में रहती है। नगर अध्यक्ष प्रहलाद बंग ने वैश्य कैलेंडर के बारे में जानकारी दी।

जिला अध्यक्ष संजय शिल्पी एवं युवा इकाई जिला प्रभारी अनुराग जैन गोल्डी ने संगठन विस्तार की भूमिका रखी। महासम्मेलन जिला पदाधिकारी हरीश अग्रवाल, रवि अग्रवाल, संजय अग्रवाल, प्रशांत जैन ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन महिला इकाई नगर अध्यक्ष श्रद्धा अग्रवाल ने किया। कार्यक्रम में सर्वप्रथम मां लक्ष्मी का पूजन किया। अंत में सभी अतिथियों द्वारा वैश्य कैलेंडर का विमोचन किया गया। आभार जिला उपाध्यक्ष संजय हनी मेडिकल ने व्यक्त किया।

### विस् के घेराव प्रदर्शन में जिले से भोपाल पंहुचे कांग्रेस जन

**नर्मदापुरम।** मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के आवाहन पर आज भोपाल में विधानसभा के घेराव प्रदर्शन में शामिल होने नर्मदापुरम जिले के कांग्रेस कार्यकर्ता बड़ी संख्या में भोपाल पहुंचे। करीब एक सैकड़ा गाड़ियों का काफिला पूरे जिले भर से भोपाल रवाना हुआ। इसका नेतृत्व जिला कांग्रेस अध्यक्ष गुड्डन पाण्डे ने किया।

# कायस्थ महासभा ने नर्मदा के पोस्टऑफिस घाट की सफाई की

नर्मदापुरम ■ अमृत दर्शन

शहर के कोठी बाजार स्थित पोस्ट ऑफिस घाट पर अखिल भारतीय कायस्थ महासभा ने सफाई अभियान चलाया। रविवार सुबह से ही अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के जिला अध्यक्ष प्रदीप श्रीवास्तव के नेतृत्व में लगातार स्वच्छता को लेकर साफ-सफाई अभियान निरंतर जारी है। रविवार को काफी ठंड होने के बाद भी अभियान में समाज के लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। अन्य समाज के लोगों का विशेष सहयोग मिल रहा है। अब कांरवा धीरे धीरे बढ़ते जा रहा है। हर रविवार लोगों की संख्या में इजाफा होते जा रहा है। स्वच्छता अभियान को लेकर जागरूक किया जा रहा है। अभियान के दौरान मां नर्मदा को स्वच्छ रखने, कचरा, माला , फूल, नारियल की पूंछ आदि न डालने और नहाते समय साबुन या कास्टिक सोडा का उपयोग न करें की बात कही गई। सफाई अभियान में अभय वर्मा , प्रदीप श्रीवास्तव, सी बी खरे, विजय श्रीवास्तव,अशोक वर्मा मंजू श्रीवास्तव, प्रीती खरे, ज्योति वर्मा,ख्याति सक्सेना, सोनिया श्रीवास्तव , उषा वर्मा, शीतल श्रीवास्तव,सारिका सक्सेना सहित अन्य पदाधिकारी और अन्य लोग शामिल हुए।

**लोगों को भी किया जागरूक-** हर रविवार को कायस्थ महासभा द्वारा सफाई अभियान की शुरुआत की गई है । अब इसमें अन्य लोग भी योगदान देने लगे हैं। महासभा की पदाधिकारी ख्याति सक्सेना ने कहा कि हमने लोगों को जागरूक किया है कि वह घाट पर साफ-सफाई रखें और नर्मदा को निर्मल, कोमल रखें जिससे हमें शुद्ध जल मिल सके।

## डोकरी खेड़ा जलाशय वोटिंग एवं ग्रामीण पर्यटन के रूप में विकसित होगा

नर्मदापुरम ■ अमृत दर्शन

जिले में पिपरिया तहसील के ग्राम छोटी अनहोनी एवं डोकरीखेड़ा जलाशय इलाके में ग्रामीण पर्यटन की संभावनाओं को तलाशा गया है। कलेक्टर सोनिया मीना ने पिपरिया के ग्राम छोटी अनहोनी पहुंच कर ग्राम में स्थित प्रसिद्ध गर्म कुंड के स्रोत को देखा और संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए की छोटी अनहोनी के इस गर्म कुंड के स्रोत के आसपास छोटे-छोटे स्ट्रक्चर बनाकर इस क्षेत्र को आस पास से आने वाले ग्रामीणों और पर्यटकों के लिए सुविधाजनक बनाने को कहा है। वन विभाग के अधिकारियों ने बताया कि गरम कुंड के पास वन विभाग द्वारा नाली का निर्माण किया जा रहा है, जिससे पानी की निकासी हो जाए। साथ ही चबूतरे का निर्माण कर इसे पिकनिक स्पॉट का रूप दिया जाएगा। कलेक्टर ने वन विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए की सभी कार्य गुणवत्ता पूर्ण एवं समय सीमा में पूरे किए जाएं। कलेक्टर ने आसपास साफ सफाई रखने के भी निर्देश दिए।

उल्लेखनीय है कि छोटी अनहोनी का गर्म कुंड का पानी इसमें मौजूद सल्फर गंधक के कारण हमेशा गर्म रहता है। दूर-दूर से लोग यहां पर आकर अपने चर्म रोग को दूर करने के लिए स्नान करते हैं और इसकी काफी सामाजिक मान्यता है।

### प्री प्राइमरी में प्रवेश के लिए नहीं लगेगी एडमिशन फीस

# समेरिटंस में आगामी शिक्षा सत्र जगन्नाथ भगवान को समर्पित

### सनातन संस्कारों और अध्यात्म पर होगा फोकस

नर्मदापुरम ■ अमृत दर्शन

समेरिटंस ग्रुप ऑफ स्कूल्स का उद्देश्य बच्चों को शिक्षित करने के साथ ही उनमें बाल्यकाल से ही भारतीय संस्कृति, सनातन संस्कार और आध्यात्मिक चेतना का विकास करना रहा है। विद्यालय संचालन समिति ने तय किया है कि आगामी शिक्षण सत्र 2025-26 भगवान जगन्नाथ जी को समर्पित रहेगा। इस दौरान पूरे सालभर समूह के सभी विद्यालयों में भगवान जगन्नाथ जी की कथाओं का पठन-पाठन और चिंतन विशेष रूप से किया जाएगा। कथाओं पर आधारित प्रतियोगिताओं का भी आयोजन स्कूल और इंटर स्कूल स्तर पर किए जाने की योजना है। साथ ही इस सत्र यानी 2025-26 में प्री प्राइमरी कक्षाओं नर्सरी, केजी वन और केजी टू में नवीन प्रवेश के लिए एडमिशन फीस नहीं ली जाएगी। यानी बच्चों को फ्री एडमिशन दिया जाएगा। उनमें केवल शिक्षण शुल्क और एक्टिविटी फीस (गतिविधि शुल्क) ही लिया जाएगा। यह योजना पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर होगी। इस योजना का लाभ केवल 20 जनवरी तक ही मिल सकेगा। हालांकि प्रवेश लेने वाले बच्चों को शिक्षण शुल्क नवीन सत्र 1 अप्रैल से ही देय होगा।

उक्त जानकारी देते हुए समूह के डायरेक्टर डा आषुतोष कुमार शर्मा ने बताया कि समूह का मूल उद्देश्य बच्चों में संस्कारों और अध्यात्मिक चेतना का विकास रहा है। इसके लिए समूह के सभी विद्यालयों में विशेष गतिविधियों को आयोजन किया जाता है। पिछले साल अयोध्या में रामलला के भव्य मंदिर निर्माण और प्राण प्रतिष्ठा के बाद रामलला प्रवेशोत्वस योजना चलाई गई थी। इस दौरान साल भर भगवान राम के चरित्र पर आधारित कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। साथ ही बच्चों के प्रवेश के लिए एडमिशन फीस को शून्य किया गया था।

उन्होंने बताया कि हाल ही में नगर के समीप स्थित डोंगरवाड़ा गांव में मां नर्मदा के स्वप्नादेश और उनके संकल्प के बाद मंदिर का निर्माण किया गया और भगवान की प्राण प्रतिष्ठा की गई है। यह समूचे जिले और क्षेत्र के लिए शुभ मंगल का द्योतक है। आने वाले दिनों में यह पूरे देश की आध्यात्मिक चेतना का केंद्र बिंदु बनेगा। इसी बात को ध्यान में रखकर समूह के विद्यालयों में इस वर्ष जगन्नाथ जी महोत्सव मनाया जाएगा। डा शर्मा ने बताया कि सनातन के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाने के लिए इस तरह की पहल आवश्यक और अनिवार्य है।

### समय सीमा में प्रकरणों का निराकरण नहीं किया था...

## तहसीलदार एवं नायब तहसीलदार पर 5-5 हजार रूपये का अर्थदण्ड लगाया

नर्मदापुरम ■ अमृत दर्शन

मध्यप्रदेश लोक सेवाओं के प्रदान की गारण्टी अधिनियम 2010 के अंतर्गत अधिसूचित सेवाओं के आवेदनों को निर्धारित समय सीमा में निराकरण करना प्रावधानित है। तत्संबंध में कलेक्टर सोनिया मीना ने लोक सेवाओं के प्रदान की गारण्टी अधिनियम 2010 के अंतर्गत (4.13) भूमि का सीमांकन सेवाओं के समय सीमा बाहर लंबित प्रकरणों पर वैभव बैरागी तहसीलदार पिपरिया, तीरथ लाल इरपाचे अपर तहसीलदार पिपरिया एवं दीप्ति चौधरी नायब तहसीलदार नर्मदापुरम (ग्रामीण) पर अधिनियम की धारा 7(1) की कंडिका (क) एवं (ख) के तहत एकमुश्त 5 - 5 हजार रूपये अर्थदण्ड की शास्ति अधिरोपित की है। तहत उक्त सेवाओं के आवेदनों को बिना किसी पर्याप्त तथा युक्तियुक्त कारण से सेवा प्रदान करने में विलंब का दोषी पाये जाने पर मप्र लोक सेवा के प्रदान की गारण्टी अधिनियम 2010 के विहित प्रावधानों के तहत द्वितीय अपील प्राधिकारी के क्षेत्राधिकार का उपयोग करते हुए पदाभिहित अधिकारी वैभव बैरागी तहसीलदार पिपरिया, श्री तीरथ लाल इरपाचे अपर तहसीलदार पिपरिया एवं दीप्ति चौधरी नायब तहसीलदार नर्मदापुरम (ग्रामीण) पर अधिनियम की धारा 7(1) की कंडिका (क) एवं (ख) के तहत एकमुश्त 5 - 5 हजार रूपये अर्थदण्ड की शास्ति अधिरोपित की है।

# 94 वाहनों पर चालानी कार्यवाही और 29600 रु.जुर्माना वसूला गया

### दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिये लगभग 250 ट्रैक्टर ट्रालियों में आगे और पीछे रेडियम पट्टी लगाई

नर्मदापुरम ■ अमृत दर्शन

पुलिस अधीक्षक डॉ गुरकरन सिंह के मार्गदर्शन में और अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक आशुतोष मिश्रा के नेतृत्व मे चलाए जा रहे अभियान के अंतर्गत यातायात, साइबर और नशे के संबंध में जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। जिस के अंतर्गत यातायात पुलिस द्वारा बस स्टैंड और टैक्सी स्टैंड पर चालकों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है ।दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिये लगभग 250 ट्रैक्टर ट्रालियों में आगे और पीछे रेडियम पट्टी लगाई गई। यातायात पुलिस द्वारा शिक्षण संस्था बंद रहने से जागरूकता अभियान थमा रहा किंतु लगातार दूसरे दिन बिना हेलमेट वाले और अन्य नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहनों के विरूद्ध तेज कार्यवाही की गई ।यातायात के उनि दिनेश मिश्रा और उनि उईके द्वारा अधिकारियों के निर्देशन में अलग अलग स्थानों पर कार्यवाही की गई ।

चालानी कार्यवाही के दौरान कुल वाहनों में कमियां पाए जाने पर 94 वाहनों की चालानी कार्यवाही की गई और कुल रुपए 29 हजार 600 रुपये का जुर्माना वसूल किया गया ।यातायात पुलिस की अपील है कि हेलमेट जान बचाने के लिए है न कि चालान बचाने के लिए अत: कृपया हेलमेट पहन कर सुरक्षित चलें और दूसरों को भी इस के लिए प्रेरित करें।

### दल्ली से दूरभाष के माध्यम से सांसद ने किया संबोधित

# विजय दिवस पर भूतपूर्व सैनिक संगठन के किया मंगलवारा चौक पर कार्यक्रम

नर्मदापुरम ■ अमृत दर्शन

आज विजय दिवस के अवसर पर पूर्व सैनिक एसोसिएशन के द्वारा पिपरिया के मंगलवारा चौक पर शहीदों को याद करने एवं श्रद्धांजलि देने के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में पिपरिया बनखेड़ी पचमढ़ी क्षेत्र के पूर्व सैनिकों सहित बड़ी संख्या में शहर के गणमान्य नागरिकों,विद्यार्थियों ,जनप्रतिनिधियों इत्यादि की उपस्थिति रही।

ज्ञातव्य है कि आज से 53 वर्ष पूर्व 16 दिसंबर 1971 को भारतीय सेना ने विश्व इतिहास की सबसे बड़ी युद्ध विजय हासिल की थी जिसमें लगभग 93000 पाकिस्तानी सैनिकों ने आत्म समर्पण किया था और इसी दिन विश्व पटल पर बांग्लादेश नामक नए देश का उदय हुआ था अत: इस दिन को विजय दिवस के रूप में जाना जाता है।

इसीलिए इस दिन को और यादगार बनाने के लिए पूर्व सैनिक एसोसिएशन के द्वारा आज शहर के मंगलवारा चौक पर कार्यक्रम कियागया। कार्यक्रम में पूर्व सैनिक एसोसिएशन के अध्यक्ष आर के पांडे सहित एसोसिएशन के पदाधिकारी एवं सदस्य शामिल हुए साथ ही नगर पालिका अध्यक्ष नीना नागपाल, पूर्व विधायक हरिशंकर जायसवाल, एकता स्पोर्ट्स क्लब के अध्यक्ष बलराम सिंह बेस, भाजपा पूर्व जिला अध्यक्ष संपत मुद्रा,पूर्व मंडी अध्यक्ष दिनेश पटेल, अरुण जोशी जी राष्ट्रीय किसान मजदूर महासंघ के जिला अध्यक्ष शिवराज राजोरिया,सहित अन्य सदस्य, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के सदस्य नीति राज जी पटेल, शिवदयाल चौधरी,भूपेंद्र सिंह सुखदेव कालोटी,सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं शहर गणमान्य नागरिकों के साथ-साथ संकल्प फाउंडेशन के विद्यार्थियों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम में 1971 के युद्ध की परिस्थितियों के ऊपर पूर्व सैनिक निरंजन वैष्णव के द्वारा प्रकाश डाला गया। अंत में पूर्व सैनिक एसोसिएशन के वरिष्ठ पदाधिकारी सूबेदार मेजर बाबू खान के द्वारा अमर जवान छायाचित्र पर पुष्प चित्र अर्पित गया इस।

कार्यक्रम में नर्मदा पुरम नरसिंहपुर संसदीय क्षेत्र के लोकप्रिय सांसद माननीय श्री दर्शन सिंह चौधरी जी के द्वारा दिल्ली से फोन के माध्यम से उपस्थित पूर्व सैनिकों,विद्यार्थियों, जन प्रतिनिधियों, एवं गणमान्य नागरिकों को संबोधित किया गया साथ में माननीय सांसद महोदय के द्वारा समस्त लोगों को विजय दिवस की शुभकामनाएं प्रेषित की गई। कार्यकम में 1971 के युद्ध में अपनी भाग लेने वाले पूर्व सैनिक पूरन सिंह ठाकुर ,जेपी तिवारी तथा एस एस मिश्रा का सम्मान भी किया गया।

## संक्षिप्त समाचार

### राज्य स्तरीय डायरेक्ट वालीबॉल स्पर्धा 22 दिसम्बर को

**इन्दौर।** सीटीसी वालीबॉल क्लब द्वारा राज्य स्तरीय डायरेक्ट वालीबॉल स्पर्धा क्लब ग्राउण्ड, किला मैदान रोड़ पर रविवार 22 दिसम्बर को आयोजित की जा रही है। इस स्पर्धा में इन्दौर के साथ ही भोपाल, उज्जैन, देवास, धार, झाबुआ, रतलाम, जावरा सहित अन्य जिलों की टीमें भी शामिल होंगी। सीटीसी क्लब के अध्यक्ष गोवर्धन रघुवंशी व सचिव नरेश दुबे ने बताया कि यह डायरेक्ट वालीबॉल स्पर्धा भूतपूर्व खिलाड़ि?यों के सम्मान में उनका मनोबल बढ़ाने के लिए आयोजित की जाती है। उन्होने बताया कि प्रदेश के मालवा क्षेत्र में प्रसिद्ध डायरेक्ट वालीवाल जो कई वर्षों तक खेला गया, लेकिन शूटिंग वालीबाल ने इस खेल की प्रसिद्धि को कम कर दिया है। सीटीसी क्लब इस परंपरागत खेल की राज्य स्तरीय स्पर्धा पुरानी डायरेक्ट फिक्स पद्धति से ही आयोजित कराता है।

### स्मृति-जेमिमा की शानदार बल्लेबाजी से भारतीय टीम ने वेस्टंडीज को हराया

**मुम्बई।** स्मृति मंधाना और जेमिमा रोड्रिग्स की शानदार बल्लेबाजी से भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने यहां वेस्टंडीज को पहले टी20 मुकाबले में 49 रनों से हरा दिया। भारतीय टीम ने इस मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए मंधाना के 53 और जेमिमा के 73 रनों की सहायता से 4 विकेट पर ही 195 रन बनाये। वेस्टंडीज की ओर से करिश्मा ने 18 रन देकर 2 विकेट लिए। इसके बाद लक्ष्य का पीछा करते हुए वेस्टंडीज टीम 146 रन ही बना पाई। वेस्टंडीज की ओर से जोसेफ और डॉटिंन ने अच्छा प्रदर्शन किया पर वह अपनी टीम को जीत दिलाने में विफल रहीं। भारतीय टीम की ओर से तितास साधु ने 37 रन देकर 3 विकेट लिए।

### 100वें टेस्ट में विराट ने बनाया रिकार्ड

**गाबा।** भारतीय क्रिकेट टीम के अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली ने ब्रिसबेन में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीसरे टेस्ट मैच के तीसरे दिन बल्लेबाजी करते हुए एक अहम रिकार्ड अपने नाम किया है। विराट ने अपने इस 100 वें टेस्ट में केवल तीन रन बनाये पर इसके बाद भी पूर्व कप्तान राहुल द्रविड़ का ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सबसे अधिक रन बनाने का रिकार्ड तोड़ दिया। विराट से अपने 100 वें टेस्ट में बड़ी पारी की उम्मीद थी पर वह इसमें असफल रहे। गाबा के मैदान पर जैसे ही विराट ने 2 रन बनाए।

### अनन्या व सौम्या तिवारी की अर्द्धशतकीय पारियाँ

# दिल्ली को 7 विकेट से हराकर मप्र क्वार्टर फाइनल में पहुंचा

**इन्दौर, निप्र।** अनन्या दबे (50) व सौम्या तिवारी (55 रन नाबाद) की उम्दा अर्द्धशतकीय पारियों के दम पर मध्य प्रदेश ने महिला सीनियर क्रिकेट टूर्नामेंट अंतिम लीग मैच में दिल्ली को 7 विकेट से हरा दिया। कुल 6 मुकाबलों में से पॉच मैच जीतकर मध्य प्रदेश ने स्पर्धा के क्वाटर फायनल के नॉकआउट दौर में प्रवेश कर लिया है।

चंडीगढ़ के ताऊ देवीलाल क्रिकेट मैदान पर खेले गए स्पर्धा के छठवें व अंतिम लीग मैच में मध्य प्रदेश ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। दिल्ली की टीम पहले बल्लेबाजी करते हुए 50 ओवर में 9 विकेट के नुकसान पर 179 रन बनाए। जिसमे आयुषी सोनी 73 नाबाद के अलावा नज़मा 39 व तनीषा 29 रनों का योगदान दिया। मध्य प्रदेश की ओर से संस्कृति गुप्ता ने 3, क्रांति गौड़ ने 2 व धनी और सूचि ने 1-1

विकेट लिए। मध्य प्रदेश की शुरुआत अच्छी नहीं रही 20 रन पर जिन्सी (10 रन) का विकेट गवा दिया। इसके बाद अनुष्का शर्मा 45 और अनन्या दुबे 50 के बाद उप कप्तान सौम्या तिवारी ने ताबड़ तोड़ बल्लेबाजी करते हुए 9 चौकों और एक छक्के की मदद से नाबाद 55 रन बनाते हुए मध्य प्रदेश को 7 विकेट से जीत दिलाते हुए क्वाटर फाईनल में पहुंचा दिया।

### टूर्नामेंट में सौम्या तिवारी का शानदार प्रदर्शन, 3 फिफ्टी के साथ 187 रन

इस पूरे टूर्नामेंट में भोपाल की सौम्या तिवारी ने उम्दा प्रदर्शन किया गया। कुल पॉच मैच में 187 रन बनाये और तीन बार 50 रन और जिसमें तीन बार नाट आउट रही है। सौम्या ने अपनी पारियों में 21 चौके और एक छक्का लगाया है। मध्य प्रदेश के नॉकआउट मैच 21 तारीख से राजकोट में खेले जाएंगे।

### लायन वारियर्स ने जीती प्रदेश की पहली टेबल टेनिस लीग

**इन्दौर, निप्र।** म.प्र. टेबल टेनिस संगठन तथा प्राइम टेबल टेनिस के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित प्रदेश की पहली टेबल टेनिस लीग (प्राइम टेबल टेनिस लीग) में लायन वारियर्स ने उत्कर्ष प्रदर्शन करते हुये किंग पॉग टीम को 7-6 से परास्त कर विजेता होने का गौरव प्राप्त किया। विजेता टीम को 2 लाख, उपविजेता टीम को 1 लाख तथा दोनों सेमीफाईलिस्ट टीमो को 50 हजार रू. समेत खिलाड़ियों को कुल 16 लाख रू. की नगद ईनामी राशि प्रदान की गई। अभय प्रशाल में खेली गई स्पर्धा के फाईनल मुकाबले में लायन वारियर्स टीम से भाग्यश्री दवे ने जाकिया सुल्तान को 2-0, से, अनुज सोनी ने चेतन्य करोड़े को 2-0 से, प्रथम बॉथम ने सुमित मिश्रा को 2-0 से, अनुज सोनी व मुदित मालपानी की जोड़ी ने चेतन्य करोड़े व शौर्य भागिया को 2-0 से, संतोष खिरवड़कर ने प्रशांत महंत को 2-0 से, वही किंग पॉग टीम से सुमित मिश्रा व परमी पंकज नागदेवे की जोड़ी ने प्रथम बॉथम व पवी परदेशी की जोड़ी को 2-1 से, अथर्व सिंह ने रीदम गढ़िया को 2-1 से, परमी पंकज नागदेवे ने पवी परदेशी को 2-0 से, शौर्य भागिया ने मुदित मालपानी को 2-0 से, अथर्व सिंह व जाकिया सुल्तान की जोड़ी ने रीदम गढ़िया व भाग्यश्री दवे की जोड़ी को 2-1 से परास्त किया, गोल्डन सिंगल्स मुकाबले में लायन वारियर्स 2-1 से जीतकर विजय का मार्ग प्रशस्त किया एवं अंत में लायन वारियर्स 7-6 से विजयी रही।

### बैठक में लिया निर्णय

## अखिल भारतीय हॉकी प्रतियोगिता 28 जनवरी 2025 से

**सोहागपुर, निप्र।** स्वतंत्रता संग्राम सैनानी स्व. ठाकुर प्रताप भानुसिंह चौहान स्मृति अखिल भारतीय हॉकी प्रतियोगिता के लिए रविवार को कालेज में बैठक की गई। जिसमें तय हुआ कि इस बार प्रतियोगिता 28 जनवरी से दो फरवरी 2025 तक होगी।

टूर्नामेंट कमेटी की बैठक कालेज की संचालक समिति सोहागपुर शिक्षा समिति अध्यक्ष कन्नूलाल अग्रवाल, कैलाश पालीवाल तथा टूर्नामेंट कमेटी अध्यक्ष जयराम रघुवंशी की उपस्थिति में हुई। जिसमे नई कार्यकारणी का निर्णय लिया गया। निवर्तमान सचिव अश्वनी सरोज ने वरिष्ठ हॉकी खिलाड़ी दादूराम कुशवाहा का प्रस्ताव सचिव के लिए रखा, जिसे सर्व सम्मति से माना गया। इस कार्यकारणी में अध्यक्ष जयराम रघुवंशी, कार्यकारी अध्यक्ष संजय खंडेलवाल, सचिव दादूराम कुशवाहा, उपाध्यक्ष हरिहर सिंह, नईम खान, अख्तर खान व पंकज तिवारी, सह सचिव

आकाश बहौत्रा व आदित्य चंदेल तथा कोषाध्यक्ष सौरभ तिवारी होंगे। वहीं संरक्षक मण्डल में कन्नूलाल अग्रवाल, कैलाश पालीवाल, बीके शर्मा, हमीर सिंह चंदेल, जेपी माहेश्वरी, अभिलाष सिंह चंदेल होंगे। मीडिया प्रभारी मनोज गोलानी, पवन चौहान, अमित बिल्लौरे व नीरज यादव को बनाया गया है। बैठक में यह भी निर्णय लिया गया है कि कबड्डी प्रतियोगिता 28 दिसम्बर 24 से होगी। जबकि इनामी दंगल 19 जनवरी 25 को कराने का निर्णय भी बैठक में लिया गया है। इस दौरान लक्ष्मी नारायण सोनी, रूप नारायण शर्मा, नप उपाध्यक्ष आकाश रघुवंशी, हेमराज सिंह नागा, इंद्रकुमार दीवान, भाजपा मण्डल अध्यक्ष अश्विनी सरोज, अभिषेक चौहान, दंगल समिति अध्यक्ष विजय अग्रवाल, भानुप्रकाश तिवारी, अंकुश जायसवाल, अभिनव पालीवाल, एकम सिंह राजपूत सहित टूर्नामेंट कमेटी के सभी सदस्य उपस्थित थे।

### विश्व चैंपियन गुकेश ने पैडी अपटन को जमकर सराहा, बोले

## मानसिक दबाव से निपटना जरूरी

**नई दिल्ली, एजेंसी।** अपटन एक जाने माने मानसिक अनुकूलन कोच है। उन्होंने सिंगापुर में 14 बाजियों के विश्व चैंपियनशिप मुकाबले के दौरान गुकेश के साथ काम किया था। गुकेश ने हाल ही में चीन के डिंग लिरेन को हराकर विश्व शतरंज चैंपियनशिप का खिताब जीता था।

विश्व शतरंज चैंपियनशिप के विजेता भारतीय ग्रैंडमास्टर डी गुकेश ने मानसिक अनुकूलन कोच पैडी अपटन की जमकर प्रशंसा की। गुकेश ने कहा कि इस टूर्नामेंट में मानसिक दबाव से निपटना जरूरी है। उन्होंने अपटन को अपनी जीत का श्रेय दिया और कहा कि उनके ऐतिहासिक प्रदर्शन के दौरान भावनात्मक दबाव पर काबू पाने में अपटन ने काफी मदद की।

अपटन एक जाने माने मानसिक अनुकूलन कोच है। उन्होंने सिंगापुर में 14 बाजियों के विश्व चैंपियनशिप मुकाबले के दौरान गुकेश के साथ काम किया था। गुकेश ने हाल ही में चीन के डिंग लिरेन को

हराकर विश्व शतरंज चैंपियनशिप का खिताब जीता था। 18 वर्षीय गुकेश यह चैंपियनशिप जीतने वाले सबसे कम उम्र के खिलाड़ी हैं। गुकेश सोमवार को स्वदेश पहुंचे जहां उनका जोरदार स्वागत किया गया। गुकेश ने कहा, विश्व चैंपियनशिप सिर्फ शतरंज के चालों के बारे में नहीं है। इससे निपटने के लिए बहुत सारे मानसिक और भावनात्मक दबाव होते हैं। पैडी ने इस मामले में मेरी काफी मदद की है। मैंने उनसे जो बातचीत की और उन्होंने मुझे जो सुझाव दिए वह एक खिलाड़ी के रूप में मेरे विकास के लिए काफी अहम रहे हैं। पैडी मेरी टीम का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा रहे हैं। कैंडिडेट्स जीतने के बाद, मैंने संदीप सर से एक मानसिक अनुकूलन कोच की मांग की थी। उन्होंने तुरंत मुझे पैडी अपटन से संपर्क कराया। जिनके पास शानदार प्रदर्शन करने वाले एथलीटों के साथ काम करने का काफी अनुभव है।

गुकेश के चैंपियन बनने के बाद अपटन ने इस खिलाड़ी की जागरूकता की सराहना की थी। उन्होंने कहा था, मुझे लगता है कि गुकेश के साथ काम करने में सबसे शानदार बात उनकी जागरूकता का स्तर था। मेरी कोशिश यह परखने की थी कि वह अपने विचारों पर कैसी प्रतिक्रिया दे रहा है। शतरंज की बिसात पर जरूरत से ज्यादा सोचते समय भी उन्होंने परिपक्व जागरूकता दिखाई। अगर उनका दिमाग भटका भी तो उन्होंने तुरंत काबू पा लिया।

## व्यापार समाचार

### राज्यसभा में बोलीं वित्त मंत्री सीतारमण

## भारत का संविधान 75 वर्षों में समय की कसौटी पर खरा उतरा

**नई दिल्ली, एजेंसी।** वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण सोमवार को राज्यसभा में संविधान पर बोलीं। अपने संबोधन में वित्त मंत्री ने कांग्रेस को उनके कार्यकाल के दौरान संविधान के दुरुपयोग का आरोप लगाते हुए घेरा।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने सोमवार को कहा कि भारत का संविधान पिछले 75 वर्षों में समय की कसौटी पर खरा उतरा है। उन्होंने कहा कि इसी समय के आसपास अपने संविधान तैयार करने वाले 50 देशों में से अधिकांश देशों ने अपने संविधानों को या तो फिर से लिखा या उनमें बदलाव किया।

राज्यसभा में संविधान पर बहस के दौरान बोलते हुए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा, जैसा कि हम अपने संविधान की 75वीं वर्षगांठ मना रहे हैं, मुझे लगता है कि यह समय है कि हम ऐसे भारत के निर्माण के लिए अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करें जो इस पवित्र दस्तावेज में निहित भावना को कायम रखे। वित्त मंत्री ने कहा कि भारत का संविधान समय की कसौटी पर खरा उतरा है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने राज्यसभा में संविधान के 75 वर्ष पर हो रही चर्चा पर बोलते हुए ये बातें कही। वित्त मंत्री ने कहा कि उद्योग जगत को कुशल जनशक्ति के लिए दुनिया भर की सरकारों के साथ मिलकर काम करना चाहिए।

मजरूह सुल्तानपुरी और बलराज साहनी पर ये बोलीं वित्त मंत्री: संविधान पर बोलते हुए, वित्त मंत्री ने कहा कि कांग्रेस के लोगों ने इतिहास में अपनी कुर्सी

बचाने के लिए संविधान में संशोधन किए। वित्त मंत्री ने कहा कि आज कांग्रेस के लोग अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की बात करते हैं, पर उन्हें याद करना चाहिए कि किसी के खिलाफ में महज कविता पढ़ने के कारण 1949 में मजरूह सुल्तानपुरी और बलराज साहनी जैसे सिनेमा के दिग्गजों को जेल भेज दिया गया था।

राज्यसभा में संविधान पर बहस के दौरान केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा, ...मजरूह सुल्तानपुरी और बलराज साहनी दोनों को 1949 में जेल भेजा गया था। 1949 में मिल मजदूरों के लिए आयोजित एक बैठक के दौरान, मजरूह सुल्तानपुरी ने जवाहरलाल नेहरू के खिलाफ लिखी गई एक कविता सुनाई और इसलिए उन्हें जेल जाना पड़ा। उन्होंने इसके लिए माफ़ी मांगने से इनकार कर दिया और उन्हें जेल जाना पड़ा... अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को कम करने का कांग्रेस का रिकॉर्ड इन दो लोगों तक ही सीमित नहीं था। 1975 में माइकल एडवर्ड्स की लिखी गई राजनीतिक जीवनी नेहरू पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। उन्होंने किस्सा कुर्सी का नामक एक फिल्म पर भी प्रतिबंध लगा दिया, क्योंकि इसमें प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और उनके बेटे पर सवाल उठाए गए थे..

कांग्रेस ने परिवारवाद की मदद के लिए किया संविधान में संशोधन: केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा, इस देश के पहले प्रधानमंत्री ने अपनी सरकार की प्रेस जांच की निंदा की, ऐसा तब था जब वे सार्वजनिक रूप से प्रेस की स्वतंत्रता की प्रशंसा करते थे। इसमें कोई संदेह नहीं है। सीतारमण ने राज्यसभा में कांग्रेस पर हमला बोलते हुए कहा कि पूर्व में हुए संविधान में संशोधन लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए नहीं बल्कि सत्ता में बैठे लोगों की रक्षा के लिए थे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस परिवारवाद और वंशवाद की मदद के लिए बेशर्मी से संविधान में संशोधन करती रही।

राज्यसभा में भारतीय संविधान की 75 वर्षों की गौरवशाली यात्रा पर चर्चा की शुरुआत करते हुए वित्त मंत्री ने संविधान सभा के 389 सदस्यों को श्रद्धांजलि दी, जिनमें 15 महिलाएं भी शामिल थीं, जिन्होंने कठिन चुनौतियों को स्वीकार किया और अत्यंत चुनौतीपूर्ण माहौल में भारत के लिए संविधान तैयार किया।

### नए साल से कम दर पर होम लोन मिलने की आस

## एक फीसदी तक घट सकता है ब्याज

नई दिल्ली, एजेंसी। आरबीआई ने ब्याज दरों को करीब दो साल से स्थिर रखा है। इससे होम लोन की दरें इस समय 13 फीसदी के ऊपर तक पहुंच गई हैं। ऐसे में अगर आप थोड़ा इंतजार करते हैं तो सस्ते दर पर कर्ज मिल सकेगा। इसका गणित बताती रिपोर्ट-

होम लोन लेने वालों के लिए यह साल ऊंची ब्याज दरों वाला रहा है। हालांकि, कर्ज अब सस्ता होने की उम्मीद है, क्योंकि नए?साल में ब्याज दर घट सकती है।?इसकी शुरुआत फरवरी से होने की संभावना है। इससे आपको राहत मिलेगी। केंद्रीय बैंक ने बैंकिंग प्रणाली में तरलता संबंधी चिंताओं को दूर करने के लिए नकद आरक्षित अनुपात यानी सीआरआर में कटौती की है। इससे बैंकों को कर्ज देने के लिए ज्यादा पैसा मिल सकेगा। इस कदम से कर्ज दरों में कमी आने की उम्मीद है। इससे कर्ज लेने को और प्रोत्साहन मिलेगा, जिससे आर्थिक गतिविधियों में तेजी आएगी।

एक फीसदी तक ब्याज घटने की उम्मीद: दिसंबर के पहले हफ्ते में आरबीआई की मौद्रिक नीति समिति की बैठक में दरों को जस का तस रखा गया है। लेकिन, जापानी बैंकर नोमुरा को उम्मीद है कि ब्याज दरों में कटौती का सिलसिला अब शुरू हो सकता है। फरवरी में इसमें कम-से-कम 0.25 फीसदी कटौती की उम्मीद है।

जब दरें घटने का सिलसिला चालू होगा तो यह एक फीसदी तक घट सकती है। यानी जो रेपो दर अभी 6.5 फीसदी पर है, वह 5.5 फीसदी पर आ सकती है। ऐसे में बढ़ोतरी हो सकती है। वैश्विक तरलता में सुधार के कारण उभरते बाजारों जैसे भारत में पूंजी का प्रवाह बढ़ा है। अमेरिका में ब्याज दरों में कटौती की उम्मीदें और भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) द्वारा तरलता बढ़ाने के उपायों ने इस प्रवाह को मजबूत किया है। आरबीआई ने नकद आरक्षित अनुपात (सीआरआर) को कम किया जिससे बाजार में अधिक तरलता आई और निवेशकों की धारणा बेहतर हुई। भारत की उपभोक्ता मूल्य सूचकांक मुद्रास्फीति अक्टूबर में 6.21 प्रतिशत से घटकर नवंबर में 5.48 प्रतिशत हो गई जिससे निवेशकों का विश्वास बढ़ा और आरबीआई द्वारा मौद्रिक नीति में ढील दिए जाने की उम्मीदें बढ़ीं।

#### होम लोन पर प्रमुख बैंकों की ब्याज दर

| बैंक का नाम | ब्याज दर |
|---|---|
| एसबीआई | 8.50% - 9.85% |
| बैंक ऑफ बड़ौदा | 8.40% - 10.90% |
| यूनियन बैंक | 8.30% - 10.90% |
| पीएनबी | 8.40% - 10.15% |
| केनरा बैंक | 8.40% - 11.15% |
| आईसीआईसीआई बैंक | 8.75% से अधिक |
| एक्सिस बैंक | 8.75% - 9.65त्न |
| एचडीएफसी बैंक | 8.75% से अधिकनोट |

(दरें 11 दिसंबर तक की व 75 लाख से ज्यादा के कर्ज पर)

बैंक भी दरों को घटाने पर मजबूर होंगे। हालांकि, इसके साथ जमाकर्ताओं को नुकसान होगा, क्योंकि कर्ज के साथ जमा पर भी ब्याज दरें घटेंगी। ऐसे में होम लोन लेने वालों को अगले पूरे साल में ब्याज पर एक फीसदी का फायदा हो सकता है।

बैंकों और संस्थानों की दर जरूर चेक करें: यदि होम लोन लेने की योजना बना रहे हैं, तो ब्याज दर की तुलना करना सुनिश्चित करना चाहिए, क्योंकि कम ब्याज दर पर मासिक भुगतान कम करना होता है। इस समय ब्याज दरें काफी ऊंची हैं, इसलिए लोन लेते समय कई बैंकों और अन्य वित्तीय संस्थानों की ब्याज दर जरूर देखें।

अगर आप होम लोन ले रहे हैं, तो उससे जुड़े महत्वपूर्ण कारकों जैसे प्रीपेमेंट शुल्क, टॉपअप नियम और अन्य संबंधित शुल्कों को भी नजरअंदाज न करें।

### 14 साल पहले शुरू हुई एफटीए वार्ता दस दौरों के बाद ठप हो गई थी

**मुंबई।** न्यूजीलैंड ने भारत के साथ अपने द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने के लिए एफटीए पर वार्ता फिर से शुरू करने की इच्छा जताई है। दोनों देशों के बीच 14 साल पहले शुरू हुई एफटीए वार्ता दस दौरों के बाद ठप हो गई थी। इसके बाद से कोई औपचारिक वार्ता नहीं हुई थी। सूत्रों के अनुसार भारत भी न्यूजीलैंड के साथ एफटीए पर हस्ताक्षर करने के लिए इच्छुक है, लेकिन कुछ विशेष पहलुओं पर विचार किया जा रहा है। भारत का मुख्य उत्पादों में न्यूजीलैंड के व्यापार को बढ़ाने का मानसिक दृष्टिकोण है। एफटीए वार्ता के संदर्भ में, न्यूजीलैंड भारत के बाजार में अपने कृषि, वन उत्पाद, और शराब जैसे मादक पदार्थों को अधिक पहुंचाने के प्रयास में है। इसके विपरीत, भारत ने स्पष्ट किया है कि डेरी उत्पादों को अधिक बाजार पहुंचाना संभव नहीं है।

### जीके एनर्जी ने आईपीओ लाने सेबी के समक्ष दाखिल किए दस्तावेज

**नई दिल्ली।** सौर ऊर्जा चालित कृषि जल पंप प्रणाली प्रदाता जीके एनर्जी लिमिटेड ने आईपीओ के जरिये धन जुटाने के लिए बाजार नियामक सेबी के सामने अपने दस्तावेज दाखिल पेश किए हैं। जीके एनर्जी लिमिटेड की योजना के अनुसार आईपीओ से 500 करोड़ रुपये के नए शेयर और 84 लाख शेयर की बिक्री व्यवस्थित की गई है। इस आईपीओ से यह उम्मीद है कि कंपनी को 100 करोड़ रुपये का निवेश वापसी मिलेगी। वित्तीय रुपया का इस्तेमाल दीर्घकालिक पूंजी आवश्यकताओं के लिए किया जाएगा, साथ ही बाकी धन का प्रयोग सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्यों के लिए होगा।

### लावा जल्द नया हैंडसेट लॉन्च करने की तैयारी में

**नई दिल्ली।** स्मार्टफोन निर्माता कंपनी लावा जल्द ही एक नया हैंडसेट लॉन्च करने जा रही है। फोन की खास बात यह है कि इसमें डुअल डिस्प्ले का फीचर होगा, जो इसे बाजार में मौजूद दूसरे स्मार्टफोन्स से अलग बनाता है। यह नया स्मार्टफोन लावा ब्लेज डूओ के नाम से बाजार में आएगा। 16 दिसंबर को लावा ब्लेज डूओ को दोपहर 12 बजे लॉन्च किया जाएगा। इसके लिए अमेजन पर माइक्रो साइट लाइव हो चुकी है, जिससे यह साफ है कि यह स्मार्टफोन एक्सक्लूसिव रूप से अमेजन पर बिक्री के लिए उपलब्ध होगा। आइए इस स्मार्टफोन की लॉन्च डेट, फीचर्स और डिजाइन के बारे में डिटेल में जानते हैं। लावा ब्लेज डूओ में 6.67-इंच का 3डी कर्व्ड अमोलेड डिस्प्ले होगा।

### गूगल को पछाड़ने में केवल 10 फीसदी दूर

## बिटकॉइन ने बनाया नया रिकॉर्ड, पहली बार 106,000 डॉलर के पार

**मुंबई, निप्र।** बिटकॉइन की तेजी से बढ़ती कीमतों ने विश्व के ध्यान को आकर्षित किया है, जिसका परिणाम यह हुआ कि यह सबसे पुरानी और सबसे बड़ी क्रिप्टोकरेंसी बन गई है। वर्तमान में बिटकॉइन की कीमत ने 1,06,000 डॉलर का पार कर दिया है, जो भारतीय करेंसी के हिसाब से लगभग 90 लाख रुपए के बराबर है। इसके साथ ही बिटकॉइन का मार्केट कैप अब 2.1 ट्रिलियन डॉलर हो गया है, जो गूगल को पछाड़ने में केवल 10 फीसदी की दूरी बची है।

विशेषज्ञों का मानना है कि नए साल में बिटकॉइन की कीमत और बढ़ सकती है और 2025 तक 2,00,000 डॉलर तक पहुंच सकती है। इसके साथ ही डोनाल्ड ट्रंप का एक बयान भी बिटकॉइन की कीमतों में तेजी का कारण बन गया है। ट्रंप ने बिटकॉइन को ऑयल रिजर्व की तरह देश में एक रिजर्व के रूप में बचाने की योजना बनाई है। इसके अतिरिक्त अन्य क्रिप्टोकरेंसीज की कीमतें भी बढ़ी हैं, जैसे कि इथेरियम ने करीब 3 फीसदी की तेजी के साथ 4,014 डॉलर पर पहुंच गई है। उच्च मान्यता वाले विशेषज्ञ का मानना है कि 2025 तक बिटकॉइन की कीमत 200,000 डॉलर तक पहुंच सकती है। इस धरातल पर 5 दिसंबर को बिटकॉइन की कीमत पहली बार 100,000 डॉलर के पार पहुंची थी। सार्थक निर्णय और सबसे नवाचारी समयों में क्रिप्टोकरेंसी बाजार अपने विकास की ओर बढ़ रहा है, जिससे न तो सिर्फ एक संकेतिक मूल्यांकन होगा बल्कि यह एक अत्यधिक उत्साही नया पूल भी तैयार करेगा।

### एफपीआई ने दिसंबर में 22,766 करोड़ निवेश किया

## नवंबर में एफपीआई ने 21,612 करोड़ रुपये की निकासी की थी

**मुंबई, एजेंसी।** भारतीय शेयर बाजारों में दिसंबर के पहले दो हफ्तों में विदेशी निवेशकों (एफपीआई) का बड़ा निवेश देखने को मिला है। अमेरिकी फेडरल रिजर्व द्वारा ब्याज दरों में कटौती की उम्मीदों के कारण एफपीआई ने इस दौरान 22,766 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश किया है जिससे भारतीय शेयर बाजार में सकारात्मक रुझान देखने को मिला है। यह निवेश भारतीय बाजार में पिछले कुछ महीनों में हुई भारी निकासी के बाद हुआ है। नवंबर में एफपीआई ने 21,612 करोड़ रुपये की निकासी की थी जबकि अक्टूबर में यह निकासी 94,017 करोड़ रुपये की थी जो अब तक की सबसे बड़ी मासिक निकासी रही थी। सितंबर में

एफपीआई का निवेश 57,724 करोड़ रुपये तक पहुंच गया था जो नौ महीने का सबसे ऊंचा स्तर था। इसका मतलब यह है कि विदेशी निवेश के प्रवाह में काफी उतार-चढ़ाव रहा है। 2024 में अब तक एफपीआई ने कुल 7,747 करोड़ रुपये का निवेश किया है जो भारतीय बाजार में निवेशकों का विश्वास बढ़ाने वाला संकेत है। भारतीय शेयर बाजारों में विदेशी निवेश का प्रवाह कई प्रमुख कारकों पर निर्भर करेगा।

इनमें अमेरिकी नीतियां, मौजूदा मुद्रास्फीति और ब्याज दरों का माहौल और भू-राजनीतिक बदलाव प्रमुख हैं। इसके अलावा भारतीय कंपनियों की तीसरी तिमाही के आय परिणाम और देश की आर्थिक प्रगति भी निवेशक भावना को प्रभावित करेंगे जिससे विदेशी निवेश में और

## संक्षिप्त समाचार

### सुपरफास्ट एक्सप्रेस ट्रेन के कोच से धुआं निकला.. यात्रियों के बीच हड़कंप

**लखनऊ।** सोमवार सुबह छपरा से मथुरा जा रही सुपरफास्ट एक्सप्रेस ट्रेन में अचानक एक कोच से धुआं निकलने से यात्रियों के बीच हड़कंप मच गया। यह घटना गौरी बाजार और बैतालपुर रेलवे स्टेशन के बीच हुई। इसके बाद रेलवे की जांच में सामने आया कि कोच में धुआं ब्रेक जाम होने की वजह से निकल रहा था। गार्ड और चालक ने तुरंत समस्या का समाधान किया और जाम ब्रेक को ठीक किया। ट्रेन को करीब 30 मिनट के विलंब के बाद फिर से रवाना कर दिया गया। गौरी बाजार रेलवे स्टेशन के स्टेशन मास्टर भरत कुमार ने बताया कि घटना में किसी भी यात्री को कोई नुकसान नहीं हुआ। ब्रेक सिस्टम के ठीक से काम करने की पुष्टि के बाद ट्रेन को आगे के लिए रवाना कर दिया गया।

### सत्येंद्र जैन के मानहानि मामले में कोर्ट ने बांसुरी स्वराज को भेजा नोटिस

**नई दिल्ली, एजेंसी।** दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट ने भाजपा सांसद बांसुरी स्वराज को आपराधिक मानहानि का नोटिस जारी कर दिया है। सांसद बांसुरी के खिलाफ यह याचिका आम आदमी पार्टी के नेता, पूर्व मंत्री और विधायक सत्येंद्र जैन द्वारा दायर की गई थी जिसके बाद कोर्ट ने नोटिस जारी किया है। आप नेता जैन ने आरोप लगाया है कि बांसुरी ने 5 अक्टूबर, 2023 को एक टेलीविजन साक्षात्कार के दौरान उनके खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी की थी। अदालत ने सांसद बाखुरी को 20 दिसंबर को पेश होने को कहा है। बांसुरी स्वराज व्यक्तिगत रूप से या अपने वकील के माध्यम से पेश हो सकती हैं। इसी तारीख को अदालत मामले में सत्येंद्र जैन और उनके दो गवाहों के बयान दर्ज करेगी। जैन ने अपनी शिकायत में आरोप लगाया है, बांसुरी ने 5 अक्टूबर, 2023 को एक टीवी चैनल पर एक इंटरव्यू के दौरान उनके खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी की थी। आप नेता जैन ने दावा किया है कि यह टिप्पणी स्वराज ने उन्हें बदनाम करने और अनुचित राजनीतिक फायदा हासिल करने के लिए की थी। उन्होंने कहा, बांसुरी ने झूठा दावा किया कि उनके घर से 3 करोड़ रुपये बरामद हुए और उनके घर से 1.8 किलोग्राम सोना और 133 सोने के सिक्के बरामद किए गए थे।

### आप ने किया महिला अदालत का आयोजन, मोदी सरकार को सुनाई खरी-खरी

**नई दिल्ली।** दिल्ली में सोमवार को आम आदमी पार्टी (आप) की ओर से महिला अदालत का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य दिल्ली में बढ़ते अपराधों और बिगड़ती कानून-व्यवस्था पर चर्चा करना था। पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने इस मौके पर भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) पर निशाना साधकर उनकी नीतियों पर सवाल उठाए। इस कार्यक्रम में समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष और पूर्व सीएम अखिलेश यादव भी शामिल हुए, जिन्होंने महिलाओं की सुरक्षा और अधिकारों के मुद्दे पर अपनी राय साझा की। आयोजन के दौरान महिलाओं ने अपनी समस्याओं और अनुभवों को साझा किया। आप प्रमुख केजरीवाल ने कहा, दिल्ली में अपराध बढ़ रहे हैं और कानून व्यवस्था पूरी तरह धराशाही हो चुकी है। केंद्र को इस ओर ध्यान देना चाहिए, लेकिन वे केवल राजनीतिक फायदे के लिए काम कर रहे हैं। अखिलेश ने भी महिला सुरक्षा को लेकर अपनी चिंता जाहिर की। उन्होंने कहा, देश को महिलाओं के अधिकारों और उनकी सुरक्षा के लिए एक ठोस योजना की जरूरत है। केवल वादे करने से कुछ नहीं होगा, हमें ठोस कदम उठाना होगा।

### रायपुर में ले रहे एलडब्ल्यूई की बैठक, खूंखार नक्सली हिड़मा के गढ़ में शाह

# नक्सलियों से डरने की जरूरत नहीं है: शाह

**जगदलपुर/रायपुर, एजेंसी।** केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह छत्तीसगढ़ दौरे पर हैं। आज वे बस्तर के गुंडम गांव पहुंचे। इस इलाके को सबसे खूंखार नक्सली हिड़मा का गढ़ माना जाता है। यहां वे गुंडम आधे घंटे तक ग्रामीणों के बीच रहे। इसके अलावा एक स्कूल पहुंचकर बच्चों से भी मिले।इस दौरान ग्रामीणों ने शाह को गिफ्ट में कोचई-कांदा से भरी टोकरी गिफ्ट की। शाह ने ग्रामीणों से कहा कि, नक्सलवाद से आपके बच्चों का भविष्य संवर नहीं सकता। मुख्यधारा में जुड़े, नक्सलवाद से दूरी बनाएं। यहां अमित शाह ने ग्रामीणों से महतारी वंदन योजना, बैंक खाते, आधार कार्ड की जानकारी ली। इसके साथ गांव में मूलभूत विकास का वादा भी किया। इस दौरान ष्टरू साय, राज्य गृहमंत्री विजय शर्मा भी साथ थे।

बता दें कि यहां नक्सलियों ने सबसे बड़ी शहीदी स्मारक बना रखी है। इनकी कंपनी नंबर-9 भी यहां सक्रिय है। इससे पहले शाह जगदलपुर के अमर वाटिका पहुंचे जहां उन्होंने शहीद जवानों को श्रद्धांजलि दी।

ग्रामीणों ने शाह को दिया कोचई-कांदा: गृहमंत्री ने ग्रामीणों से आगे कहा कि, नक्सलियों से डरने की जरूरत नहीं है। कैंप खुल गया है। जो भी ग्रामीण बीमार होते हैं कैंप जाइए वहां आप का इलाज होगा। जवानों के साथ ताल मेल बिठाएं, फ्रेंडली नेचर में रहे।

स्कूली बच्चों को जानवरों की तस्वीर दिखा कर अमित शाह ने नाम पूछे। राष्ट्रीय पक्षीय को दिखा कर पूछा ये क्या है? इस पर बच्चों ने गोंडी बोली में मोर को मल बताया। वहीं अमित शाह को ग्रामीणों ने कोचई कांदा, सूखा बास्ता समेत तीखुर दिया। इसे वे अपने साथ लेकर गए।

रायपुर में लेंगे एलडब्ल्यूई पर बैठक: बस्तर से लौट कर अमित शाह रायपुर में वामपंथी उग्रवाद पर बैठक लेंगे। इससे पहले वे कल (15 दिसंबर) बस्तर ओलिंपिक के समापन समारोह में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि, नक्सलवाद खत्म होने पर यहां कश्मीर से ज्यादा पर्यटक आएंगे। 31 मार्च 2026 के बाद लोग कहेंगे बस्तर बदल गया है। गलत रास्ते पर गए लोग सरेंडर करें, हिंसा करेंगे तो हमारे जवान आपसे निपटेंगे।

#### देश की सबसे अच्छी पॉलिसी होगी

जगदलपुर में बोले शाह-हिंसा करेंगे तो हमारे जवान आपसे निपटेंगे नक्सली भाई-बहन हथियार छोड़ें, 31 मार्च 2026 के बाद लोग कहेंगे बस्तर बदल गया जगदलपुर में अमित शाह ने कहा कि, अभी लोग कह रहे हैं कि बस्तर बदल रहा है, लेकिन 31 मार्च 2026 के बाद लोग कहेंगे बस्तर बदल गया है। गलत रास्ते पर गए हुए भाई सरेंडर करें। हथियार छोड़ दें। मैंने कई राज्यों की सरेंडर पॉलिसी देखी है। छत्तीसगढ़ की पॉलिसी देश की सबसे अच्छी पॉलिसी होगी।

### सबसे बड़ी दिक्कत नीतीश के कद का कोई नेता नहीं

# बीजेपी के लिए महाराष्ट्र मॉडल फिलहाल बिहार विधानसभा में लागू करना असंभव

**नई दिल्ली, एजेंसी।** महाराष्ट्र में सत्ता परिवर्तन के बाद बीजेपी की राजनीति की नई रणनीति पर चर्चा शुरू हुई है। दरअसल देवेंद्र फडणवीस को फिर मुख्यमंत्री बनाने और एकनाथ शिंदे को डिप्टी सीएम के रूप में स्थापित करने के फैसले ने बिहार की सियासत में नई हलचल मचा दी है। अब सवाल उठा रहा हैं कि क्या बिहार में भी ऐसा हो सकता है, जहां नीतीश कुमार को फिलहाल मुख्यमंत्री बनाए रखा जाए, लेकिन चुनाव बाद समीकरण बदल दिए जाएं।

इस बारे में जब केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से बिहार चुनाव और नीतीश के नेतृत्व को लेकर सवाल किया गया, तब उन्होंने सीधे तौर पर कुछ नहीं कहा। उन्होंने कहा कि एनडीए में कोई दरार नहीं है और इस मुद्दे पर फैसला पार्टी और सहयोगी दलों के बीच चर्चा के

बाद होगा। हालांकि, उनके बयान ने स्पष्ट कर दिया कि बीजेपी नीतीश कुमार के साथ अपने रिश्ते को लेकर पूरी तरह आश्वस्त नहीं है। नीतीश का कद और एकनाथ शिंदे की भूमिका में बड़ा अंतर है। शिंदे महाराष्ट्र में सीएम बनने से पहले प्रदेश स्तर के नेता ही माने जाते थे, जबकि नीतीश राष्ट्रीय स्तर के नेता रहे हैं और यहां तक कि पीएम पद के दावेदार के रूप में भी चर्चा में रहे हैं। उनके प्रयासों से विपक्षी दलों का इंडिया गठबंधन आकार ले सका था।

# संभल में मंदिर के पास कुएं की खुदाई में मिली प्राचीन मूर्तियां और ऐतिहासिक अवशेष

**संभल, एजेंसी।** संभल के खग्गू सराय इलाके में 46 साल से बंद प्राचीन शिव मंदिर के खुलने और इसके पास बने कुएं की खुदाई के दौरान कई प्राचीन मूर्तियां और ऐतिहासिक अवशेष मिले हैं। शिव मंदिर के पास स्थित कुएं से तीन खंडित मूर्तियां मिली हैं, जिन्हें पार्वती, गणेश, और कार्तिकेय/ लक्ष्मी जी की मूर्तियां बताया जा रहा है। स्वास्तिक चिह्न बनी तीन प्राचीन ईंटें भी मिली हैं। वर्षों से अतिक्रमण के कारण ढका हुआ यह कुआं अब इतिहास और पुरातात्विक महत्व का केंद्र बन गया है। यह मंदिर 1978 के सांप्रदायिक दंगों के बाद बंद किया गया था। हाल ही में प्रशासन द्वारा फिर से खोला गया, जिसके बाद पूजा-पाठ फिर से शुरू हुआ। कुएं की खुदाई के दौरान मूर्तियां और अन्य प्राचीन वस्तुएं मिलने से लोगों में उत्साह है। संभल डीएम राजेंद्र पेंसिया ने बताया कि मंदिर और कुएं के पुरातात्विक महत्व की जांच के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) को पत्र लिखा गया है। उन्होंने कहा कि खुदाई के दौरान मूर्तियों को नुकसान न पहुंचे, इसलिए कार्य फिलहाल रोक दिया गया है। वहीं हिंदू समुदाय ने मूर्तियां मिलने के बाद मंदिर में भजन-कीर्तन और पूजा-पाठ शुरू कर दिया है। सुरक्षा के लिए मौके पर पुलिस बल तैनात है। यह मंदिर और इसके आसपास का इलाका 1978 के सांप्रदायिक दंगों के दौरान चर्चा में रहा था। दंगों के बाद बड़ी संख्या में हिंदू परिवारों ने इलाके से पलायन कर दिया था। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस मंदिर और दंगों का उल्लेख करते हुए इसे हमारी विरासत और इतिहास का प्रतीक बताया।

### संविधान जलाने वाले दे रहे नेहरू को गाली

# राज्यसभा में संविधान पर चर्चा के दौरान जमकर लगे आरोप प्रत्यारोप

**नई दिल्ली, एजेंसी।** राज्यसभा में संविधान पर चर्चा के दौरान वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 1 घंटे 19 मिनट की स्पीच दी। वित्त मंत्री ने कहा- कांग्रेस पार्टी परिवार और वंशवाद की मदद करने के लिए बेशर्मी से संविधान में संशोधन करती रही। ये संशोधन लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए नहीं बल्कि सत्ता में बैठे लोगों की रक्षा के लिए थे। इस प्रक्रिया का इस्तेमाल परिवार को मजबूत करने के लिए किया गया। वित्त मंत्री के जवाब में मल्लिकार्जुन खड़गे ने भी 1 घंटे 19 मिनट का भाषण दिया। खड़गे ने कहा- जो लोग झंडे से नफरत करते हैं, जो लोग हमारे अशोक चक्र से नफरत करते हैं, जो लोग संविधान से नफरत करते हैं। ये आज हमें पाठ पढ़ा रहे हैं। जब ये संविधान बना, इन लोगों ने रामलीला मैदान में बाबा साहेब अंबेडकर का पुतला लगाकर संविधान को जलाया है। ये लोग अब नेहरू जी, इंदिरा जी और पूरे परिवार को गाली देते हैं।

खड़गे ने कहा कि जब कई शक्तिशाली देशों में सभी एडल्ट को वोट देने का अधिकार नहीं था, महिलाओं को वोट देने का अधिकार नहीं था, उस समय भारत ने सभी को मताधिकार दिया, महिलाओं को वोट देने का अधिकार दिया। यह कांग्रेस, संविधान द्वारा दिया गया था। आरएसएस, जनसंघ ने इसका विरोध किया था।

पीएम सबसे बड़े झूठे: खड़गे ने कहा कि हमने पीएम मोदी की स्पीच सुनी। कहते हैं हमारी बातें जुमले वाली हैं। अरे सबसे बड़े झूठे तो आप हो। आपका 15 लाख पैसे का वादा क्या हुआ। मैंने तो झूठ बोलना बंद कर दिया। आपकी बात मानकर लेकिन ये जुमले वाले झूठ बोलकर देश को गुमराह कर रहे हैं। हमसे कहते हैं इमरजेंसी में क्या किया। नेहरू ने क्या किया। सर मोदी साहब का एक घंटा 50 मिनट का भाषण हुआ। निर्मला जी का भी घंटो भाषण रहा। पीएम या तो अतीत में रहते हैं, बेहतर होता वो बता देते कि 11 साल में ऐसा कौन सा काम किया है हमारा लोकतंत्र मजबूत हुआ। अगर लैंड रिफॉर्म नहीं आता, नरेगा नहीं आता तो आज गरीब मरता। कोविड में आश्रय मनरेगा से मिला। आप भाषण तो करते हो, उससे निकलता कुछ नहीं है।

सत्ता पक्ष की सोच संविधान के खिलाफ: खड़गे ने कहा कि जो जो झंडे से नफरते हैं, जो लोग हमारे अशोक चक्र से नफरत करते हैं, जो लोग संविधान से नफरत करते हैं। ये आज हमें पाठ पढ़ा रहे हैं। जब ये संविधान बना, इन लोगों ने रामलीला मैदान में बाबा साहेब अंबेडकर का पुतला लगाकर संविधान को जलाया है। ये लोग अब नेहरू जी, इंदिरा जी और पूरे परिवार को गाली देते हैं। शर्म करो, आप लोगों ने संविधान के बारे में कैसी-कैसी बातें बोली हैं।

### नारायण मूर्ति ने 70 घंटे काम करने की बात दोहराई, कहा-

# युवाओं को बहुत मेहनत करनी होगी, देश में 80 करोड़ लोग गरीब

**कोलकाता, एजेंसी।** इंफोसिस के को-फाउंडर नारायण मूर्ति ने एक बार फिर हफ्ते में 70 घंटे काम करने की बात दोहराई। उन्होंने कहा- युवाओं को यह समझना होगा कि हमें कड़ी मेहनत करनी होगी और भारत को नंबर एक बनाने की दिशा में काम करना होगा। उन्होंने कहा कि हमें अपनी आकांक्षाएं ऊंची रखनी होंगी, क्योंकि 800 मिलियन (80 करोड़) भारतीयों को मुफ्त राशन मिलता है। इसका मतलब है कि 800 मिलियन भारतीय गरीबी में हैं। अगर हम कड़ी मेहनत करने की स्थिति में नहीं हैं तो कौन कड़ी मेहनत करेगा।

मूर्ति ने कहा कि इंफोसिस में मैंने कहा था

कि हम सर्वश्रेष्ठ कंपनियों के पास जाएंगे और अपनी तुलना सर्वश्रेष्ठ वैश्विक कंपनियों से करेंगे। एक बार जब हम अपनी तुलना सर्वश्रेष्ठ ग्लोबल कंपनियों से करेंगे तो मैं आपको बता सकता हूं कि हम भारतीयों के पास करने के लिए बहुत कुछ है। उन्होंने कहा कि एक समय वे वामपंथी थे, जब जवाहरलाल नेहरू प्रधानमंत्री थे और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान वास्तविकता बन चुके थे। मूर्ति रविवार को कोलकाता पहुंचे थे। वे इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स के शताब्दी समारोह के उद्घाटन कार्यक्रम में शामिल हुए थे। उन्होंने कहा कि दुनिया भारत का सम्मान उसके प्रदर्शन के लिए करती है। प्रदर्शन से पहचान मिलती है, पहचान से सम्मान मिलता है, सम्मान से शक्ति मिलती है। मैं युवाओं को यह बताना चाहता था कि हमारे संस्थापकों के सपने को पूरा करने की हमारी बड़ी जिम्मेदारी है। यही कारण है कि हम सभी को कड़ी मेहनत करनी होगी।

# याचिकाकर्ता से सुप्रीम कोर्ट ने पूछा, धार्मिक नारे लगाना अपराध कैसे

नई दिल्ली।(ईएमएस)। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को सवाल उठाया कि जय श्रीम राम का नारा लगाना अपराध कैसे हो सकता है। जस्टिस पंकज मिठल और जस्टिस संदीप मेहता की बेंच उस याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें कर्नाटक हाईकोर्ट के फैसले को चुनौती दी गई थी। हाईकोर्ट ने मस्जिद के भीतर कथित तौर पर जय श्री राम के नारे लगाने वाले दो व्यक्तियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई को रद्द कर दिया था।

शीर्ष कोर्ट में याचिका हैदर अली सी.एम. की ओर से दायर की गई थी। बेंच ने टिप्पणी की, वह लोग एक खास धार्मिक नारा या नाम चिल्ला रहे थे। यह अपराध कैसे हो सकता है? सुप्रीम कोर्ट ने यह भी पूछा कि जिन लोगों ने मस्जिद के अंदर जाकर नारे लगाए, उन्हें कैसे पहचाना गया? याचिका में कर्नाटक हाईकोर्ट के 13 सितंबर के आदेश को चुनौती दी गई थी, जिसमें दो आरोपियों के खिलाफ आपराधिक कार्यवाही को रद्द कर दिया गया था।

आपने आरोपियों की पहचान कैसे की: बेंच ने याचिकाकर्ता की ओर से पेश वरिष्ठ वकील देवदत्त कामत से पूछा, आपने इन लोगों की पहचान कैसे की? आप कह रहे हैं कि ये सब सीसीटीवी में दिख रहे हैं। क्या उन लोगों की पहचान की गई है, जिन्होंने मस्जिद में प्रवेश किया? कामत ने कहा, हाईकोर्ट ने कार्यवाही को रद्द कर दिया था, जबकि मामले की जांच अधूरी थी। इस पर बेंच ने कहा कि हाईकोर्ट ने यह देखा कि आरोप आईपीसी की धारा 503 (आपराधिक धमकी) या धारा 447 (अवैध प्रवेश) के तत्वों को पूरा नहीं करते थे।

### विधानसभा अध्यक्ष ने बैठने को कहा

# यूपी सरकार के भ्रष्टाचार पर बोलने खड़ी हुई पल्लवी पटेल

**लखनऊ, एजेंसी।** उत्तर प्रदेश विधानमंडल का शीतकालीन सत्र सोमवार को शुरू हुआ। सदन के शुरु होते ही संभल हिंसा पर चर्चा की मांग को लेकर सपा और कांग्रेस के विधायकों ने हंगामा शुरू कर दिया। यह देख विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने प्रश्नकाल को स्थगित कर दिया। इसके बाद दोपहर 12 बजकर 20 मिनट पर कार्यवाही फिर शुरू हुई। सबसे पहले विधानसभा अध्यक्ष महाना ने दिवगंत नेताओं को श्रद्धांजलि दी। इसके बाद सपा विधायक पल्लवी पटेल ने योगी सरकार के भ्रष्टाचार मुद्दे पर प्रश्न उठाया इस पर स्पीकर ने उन्हें बैठने का आदेश दिया। इस पर भी पल्लवी नहीं रुकी, तब स्पीकर ने कहा कि मुझे आपको सदन से बाहर जाने के लिए कहना पड़ेगा। मैं आपको अनुमति नहीं दे रहा हूं। आप बैठ जाइए। इसके बाद पल्लवी सदन से बाहर चली गईं और विधानसभा परिसर में योगी सरकार के विरोध में धरने पर बैठ गईं। उनके हाथ में बैनर था जिसमें लिखा था पिछड़ा मांगे हिसाब, योगी जी मांगे जवाब। सिराथू से सपा विधायक पल्लवी ने कहा कि मैं बहुत ही गंभीर विषय उठाना चाहती हूं। वर्तमान बीजेपी सरकार आकंठ भ्रष्टाचार में डूबी हुई है। यह सामंतवादी सरकार है। बता दें कि इससे पहले अपना दल कमेरावादी की नेता पल्लवी ने प्राविधिक शिक्षा विभाग में विभागाध्यक्ष पदों पर नियुक्ति में धांधली का आरोप लगाया था।

### चीन दौरे पर जाएंगे एनएसए डोभाल

**नई दिल्ली।** भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल जल्द चीन के दौरे पर जाएंगे। डोभाल का ये दौरा 18 दिसंबर को होगा। इस दौरान वे चीन के विदेश मंत्री वांग यी के साथ सीमा विवाद से जुड़े मुद्दों के समाधान पर बातचीत करेंगे। भारत-चीन के बीच इस साल अक्टूबर में सीमा विवाद को सुलझाने के लिए सहमति बनी थी। इसके लिए दोनों देशों ने अजित डोभाल और वांग यी को स्पेशल प्रतिनिधि बनाया था। 23 अक्टूबर को रूस के कजान में ब्रिक्स समिट के दौरान भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ द्विपक्षीय बातचीत की थी। भारत और चीन के बीच 2020 में गलवान में हुई झड़प के बाद मोदी और जिनपिंग के बीच ये पहली द्विपक्षीय बातचीत थी।

# वर्ष 2005 में केवल तीन दिवसीय आयोजन के साथ शुरू हुआ रणोत्सव आज ग्लोबल इवेंट बन गया है : मुख्यमंत्री

**अहमदाबाद, एजेंसी।** कच्छ के विकास के लिए तत्कालीन मुख्यमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी के विजन का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल ने कहा कि वर्ष 2005 में नरेन्द्र मोदी ने केवल तीन दिनों के आयोजन के साथ कच्छ के रण में 'रणोत्सव' की शुरुआत की थी, जो आज एक ग्लोबल इवेंट बन गया है। एक समय जो रण बंजर जमीन के रूप में जाना जाता था, आज उस स्थान पर शानदार रणोत्सव का आयोजन किया जाता है।

मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल रविवार को कच्छ के सफेद रण धोरडो में गुजरात पर्यटन निगम लिमिटेड (टीसीजीएल) की ओर से आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने कच्छी कला और संस्कृति को पेश करने वाली विभिन्न प्रस्तुतियों को देखा। मुख्यमंत्री ने इस

अवसर पर उपस्थित महानुभावों के साथ भारतीय डाक विभाग द्वारा जारी 'रणोत्सव' थीम पर आधारित नए पोस्टल कवर का अनावरण किया। अखंड भारत के शिल्पकार और लौह पुरुष सरदार पटेल की पुण्यतिथि पर उन्हें वंदन करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि जिस प्रकार सरदार साहब ने देशी रजवाड़ों का विलीनीकरण कर अखंड भारत बनाया था, उसी प्रकार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उनके ही पदचिन्हों पर चलते हुए 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का निर्माण किया है। इसके लिए उन्होंने देश के सभी राज्यों की भाषा, संस्कृति और पर्यटन को महत्व दिया है। रण की संस्कृति और पर्यटन को उजागर करने वाला आज का यह रणोत्सव भी 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' को साकार करने का अवसर है। उन्होंने कहा कि जब तत्कालीन बॉम्बे राज्य के विभाजन के बाद अलग गुजरात राज्य की स्थापना हुई थी, तब लोग कहते थे कि केवल समुद्र, रण और पहाड़ियों वाला गुजरात क्या विकास करेगा। दशकों तक राज्य के विकास की गतिविधियां वापी से तापी के पट्टे तक ही सीमित रही। बिजली, पानी, सड़क और इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे ज्यादातर क्षेत्रों में जिस गति से और जितना विकास होना चाहिए था, उतना नहीं हुआ। बाद में, गुजरात को मुख्यमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी के जैसा एक दूरदर्शी लीडर मिला और उन्होंने गुजरात के विकास को वैश्विक स्तर का बनाने का संकल्प लिया।

### यूएस के राजदूत गार्सेटी ने की तारीफ

# अगले 30 साल में अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में सबसे बड़ा बाजार होगा भारत

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राजदूत एरिक गार्सेटी ने अक्षय ऊर्जा के लिए भारत के लक्ष्यों की विशेष तौर पर सराहना की। उन्होंने कहा कि आने वाले 30 साल में भारत अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर सबसे बड़ा बाजार होगा।

अमेरिका के राजदूत एरिक गार्सेटी ने एक बार फिर भारत और अमेरिका के संबंधों पर बात की। उन्होंने कहा कि सबसे भयंकर तूफान और तेज हवा के बावजूद उगने वाले खजूर के पेड़ के लचीलेपन की तरह भारत-अमेरिका संबंध लगातार बढ़ते रहेंगे और दुनिया को फायदा पहुंचाते रहेंगे।

भारत के लक्ष्यों की तारीफ की: एक कार्यक्रम में राजदूत ने अक्षय ऊर्जा के लिए भारत के साहसिक लक्ष्यों की विशेष तौर पर सराहना की। उन्होंने कहा कि आने वाले 30

साल में भारत अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर सबसे बड़ा बाजार होगा। उन्होंने यह भी कहा, भारत के महत्वाकांक्षी लक्ष्य और नीतियां उसे सौर व पवन ऊर्जा क्षमता में अग्रणी बना रही हैं। न केवल इस देश के लिए, बल्कि दुनिया के लिए लागत पर विनिर्माण करने में सक्षम बना रही हैं। उन्होंने कहा, मेरे शब्द हैं कि आने वाले 30 साल में भारत अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर सबसे बड़ा बाजार होगा।

पेड़ से नारियल आने में कितना समय लगेगा?: बता दें, राजदूत गार्सेटी अमेरिका-भारत रणनीतिक साझेदारी मंच (यूएसआईएसपीएफ) द्वारा आयोजित साउथ एशिया वीमेन इन एनर्जी लीडरशिप शिखर सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने केरल के एक होटल का वाकया बताया, जिसमें उनसे उनके प्रवास के अंत में एक नारियल का पौधा लगाने का अनुरोध किया गया था। उन्होंने कहा, मैंने कहा कि इस पेड़ से नारियल आने में कितना समय लगेगा। इस पर उन्होंने बताया कि करीब आठ साल बाद। भारत-अमेरिका संबंधों के व्यापक संदर्भ में उन्होंने कहा, काश हम हर दिन उस नारियल के पेड़ को लगाएं और हम हर दिन चीजों को थोड़ा बेहतर बनाने का तरीका खोज पाएं।

#### अमेरिका-भारत संबंध उस पौधे की तरह...

उन्होंने कहा, मुझे पूरा भरोसा है कि अमेरिका-भारत संबंध उस पौधे की तरह है, जो निरंतर बढ़ता रहेगा, जो खजूर के पेड़ की तरह लचीला रहेगा, जिसे सबसे शक्तिशाली तूफान भी नहीं गिरा सकता, सबसे बड़ी हवा भी उसे उखाड़ नहीं सकती। गार्सेटी ने चार पी का मंत्र दिया। उन्होंने अमेरिका और भारत के रिश्ते पर कहा कि चार पी (शांति, स्थिरता, प्लेनेट और लोग) पर भाषण देंगे।

### शंभू बॉर्डर पर किसानों ने निकाला ट्रैक्टर मार्च

# कल किसानों का रेल रोको आंदोलन

**पटियाला, एजेंसी।** शंभू-खनौरी बॉर्डर पर आंदोलन कर रहे किसानों के समर्थन में सोमवार को हरियाणा में ट्रैक्टर मार्च निकाला गया। हिसार, सोनीपत, चरखी दादरी, सिरसा, फतेहाबाद, कैथल और अंबाला में किसानों ट्रैक्टर मार्च निकाल प्रदर्शन किया। हांसी में किसान ट्रैक्टर पर रामायण टोल से मिनी सचिवालय तक गए। वहीं सोनीपत के खरखौदा में रोहणा बाइपास चौक से मार्च निकाला गया। पंजाब में मार्च निकालने का ऐलान नहीं हुआ था। यहां 18 दिसंबर को रेल रोको आंदोलन किया जाएगा।

रेल रोको आंदोलन पर परिवहन मंत्री अनिल विज ने कहा कि किसानों को ट्रेनें नहीं रोकनी चाहिए। इससे आम लोगों को ही परेशानी होती है। वहीं हरियाणा भाजपा अध्यक्ष मोहन बड़ौली ने कहा कि प्रदेश में हम 24 फसलों पर एमएसपी दे रहे हैं, कांग्रेस और आप की सरकार भी किसानों को एमएसपी पर फसल खरीदने की गारंटी दे।

भाजपा सरकार को हो रहा आंदोलन का फायदा: भारतीय किसान यूनियन (भूकियू) के राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकैत आज हरियाणा के करनाल में पहुंचे। यहां उन्होंने कहा कि किसान आंदोलन का फायदा इस समय भाजपा सरकार को हो रहा है। उन्होंने कहा कि अभी किसान पंजाब की जमीन पर हैं और पंजाब में सरकार आम आदमी पार्टी की है। आंदोलन कब खत्म होगा इस सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि ये आंदोलन 4 से 5 महीने और चलेगा।

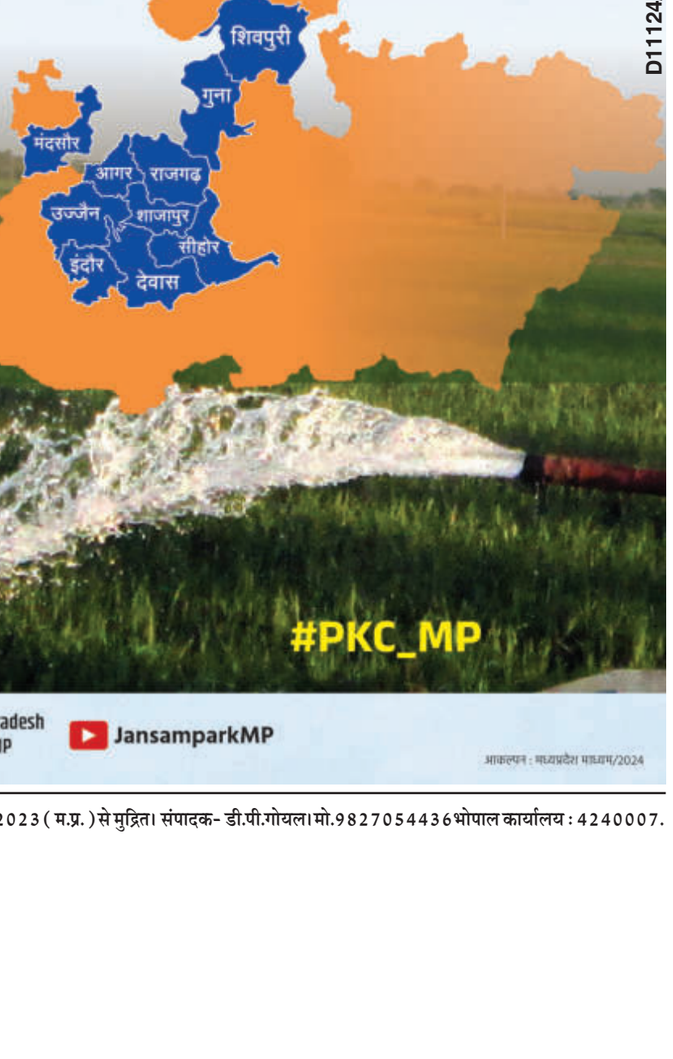

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी डी.पी.गोयल द्वारा प्रभा काम्प्लेक्स के पास, मीनाक्षी चौक, आई.टी.आई. रोड, होशंगाबाद से प्रकाशित तथा श्री बालाजी प्रिन्टर्स, 21-एच, इंडस्ट्रीयल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल- 462023 ( म.प्र. ) से मुद्रित। संपादक- डी.पी.गोयल।मो.9827054436भोपाल कार्यालय : 4240007. डाक पंजीयन - MP/HSD04/2023-2025 व्यवस्थापक- डी.सी. पारे, मो. 8878623331 Email: amritdarshan@yahoo.com ( सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र भोपाल रहेगा । )।